नीक ठकान ठकेलौं

नीक ठकान ठकेलौं

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

NIK THAKAN THAKELAUN
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-951070-8-7
दाम: 250/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2021)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथाक सत्तैर

परिवारे गजपटा गेल

नइ चाहला पछातियो हीरालालकेँ गाम छोड़ि परदेश, माने बंगलोर, जाए पड़लैन। बंगलोर जाइक कारण भेलैन जे जहिना धान-गहुम काटैले, माने किसानी काज करैले, पंजाब जाएब पुरान जमानाक बेवहार भऽ गेल, तहिना कोलकाता जाएब सेहो भइये गेल। अखन बंगलोर, मुम्बई इत्यादिक उठाइन भऽ गेल अछि।

गाम छोड़ि बाहर नहि जेबाक विचार हीरालालकेँ मनमे कोनो आइये भेलैन से बात नहि, बच्चेसँ छेलैन। ओना, बच्चाक विचार आ सियानक (चेष्टगरक) विचारमे अन्तर छेलैन्हे मुदा परिणाम (फल) एक्के छेलैन जे गामसँ बाहर (परदेश) नहि जाएब।

हाइ स्कूल तक जाबे हीरालाल रहला ताबेक विचारमे दोसर विचार छेलैन आ पछाइत कौलेजसँ निकलैत-निकलैत विचारक सोल्होअना रूप बदैल दोसर भऽ गेलैन, जेना शिशुपन चेतनपन भऽ जाइए। हाइ स्कूलसँ पहिने तक हीरालालक मनमे ने परदेशक जिनगी उठल छेलैन आ ने गाममे, पारिवारिक जीवनमे, कोनो असोकर्जे होइ छेलैन जइसँ परदेश दिस धियान जइतैन।

दस बीघा जमीनबला किसान परिवारमे हीरालालक जन्म भेल छेलैन। पिता जीवनलाल भूमिक ओहन मेहनती छला जेहने यमुनानन्द यमुना धारक पाइनिक बीचक तपस्वी रहैथ। ओना, जोड़ भरि बरद आ जोड़ भरि महींस खुट्टापर ई सोचि जीवनलाल रखने छला जे जहिना

अपना खुट्टापर बरद रहने खेत जोतैक अभाव परिवारमे कहियो नइ हएत, तहिना जोड़ा भरि महींस रहने गोरसक (दूध-दहीक) अभाव सेहो कहियो नहि हएत। एहने परिवारमे हीरालालक जन्म भेल छैन।

आने-आन बच्चा जकाँ हीरालालकेँ सेहो जीवनलाल पाँच बर्खक अवस्थामे संगे लऽ जा कऽ विद्यालयमे नाओं लिखा देलखिन। एक तँ पिताक समुचित जीवनक प्रभाव, दोसर पढ़ै-लिखैमे मन लगने हीरालाल नीक विद्यार्थीक गिनतीमे लोअरे प्राइमरी स्कूलसँ आबए लगला। बारह विद्यार्थीक बैचमे हीरालाल पहिल स्थान, माने वर्गमे फस्ट, गामक स्कूलमे करैत रहला। पछाइत हाइ स्कूल गेलापर, जैठाम एक गाम नहि अनेको गामोक आ अनेको मिडिल स्कूलोक-विद्यार्थीक बीच एने हीरालाल पहिल स्थानसँ निच्चाँ ससैर तेसर स्थानपर आबि गेला। स्थान भलेँ तेसर भेलैन मुदा तइसँ ने प्रतिभामे कमी एलैन आ ने अपन विचार-शक्तिये झूस भेलैन।

कौलेजमे प्रवेश लेला पछाइत, शुरूमे हीरालाल अनिवार्य विषयक संग अर्थशास्त्र आ राजनीतिशास्त्र सेहो रखलैन। आजुक परिवेशमे दुनू विषय, माने अर्थशास्त्र आ राजनीति शास्त्र, अलग-अलग विषय बनि गेल अछि, मुदा पूर्वमे दुनू एक्के विषयक अन्तर्गत छल। ऑनर्स तक अबैत-अबैत हीरालाल सोल्होअना राजनीति शास्त्रक ऑनर्सक विद्यार्थी भऽ गेला। अन्तिम परीक्षामे रिजल्टो नीक भेलैन आ आगूमे, माने एम.ए.मे, प्रवेशो राजनीतिये शास्त्रमे लेलैन।

कौलेजसँ निकलैत-निकलैत हीरालाल अपन दृढ़ बिसवास मनमे बना लेला जे गामेमे रहब, जीवन-ले खेत-पथार अछिए, अनेरे नोकरी करए किए केतौ जाएब। भेल तँ एतबे ने जे अपन मनोनुकूल जीवन गढ़ि समयक संग चलैत जीवन अन्त करब। एहेन शंका, जे सभ दिन एक्के-उपे अहिना रहब, हीरालालक मनमे उठबे किए करितैन। स्पष्ट जनैथ जे धरतीपर जे जन्म लेलक, चाहे ओ कीट-पंतग हुअए आकि गाछे-बिरीछ

वा आने कोनो चौपाया जानवरसँ मनुक्ख धरि, सबहक जीवन अन्त हेबे करत।

अनेको राजनीतिक चिन्तकक चिन्तन हीरालाल पढ़बे टा नहि केलैन, मनन-चिन्तन सेहो केलैन। आने जकाँ हीरालालो अपन पितृ-पितराइनिक अतीतमे भरमए लगला। ऐठाम 'भरमव' शब्दक माने घुमब-फीरब, भ्रमण करब अछि। गामक स्कूलमे जे हीरालाल पढ़लैन-सुनलैन, जे मनुक्खक जीवन झूठ बजैले नहि भेटल अछि ओ भेटल अछि सत् बजैले आ सत्त काज करैले सेहो। जखने से हएत तखने ने सकारात्मक सोचो आ सकारात्मक काजोक समत्व रूप बनत, से विचार अखनो ओहिना हीरालालक मनमे जीवित छैन जहिना सभक मनमे होइए। तैसंग अपन नैतिक जीवनक निर्वहन बेकतीगत रूपमे सेहो करैत एला जइसँ अपन समाजक बीच कटल-कटल रूप धारण कए हीरालाल अखन तक चलि रहला अछि।

अपन मन हीरालालकेँ मजगूती दइते छेलैन जे कालखण्डक जे समाज अछि तइमे अपनो समाज ओहिना जीवित अछि जहिना आन-आनक छैन। जीवनक सन्तुष्टि मनमे रोपि हीरालाल परिवारसँ निकैल समाज दिस डेग उठबए चाहलैन, तँ पहिल पड़ोसी–सुमन्त काका–क घर पड़ैत रहैन। एकमुँहरी मन हीरालालक बनियेँ गेल छेलैन तँए पड़ोसिया डाहकेँ महादेव जकाँ विष-अमृत सभ एक्केबेर घोंटिकऽ पीब लेलैन।

पढ़ल-लिखल हीरालाल अतीतसँ आगू बढ़ि जखन आजुक परिवेशकेँ अंकैत सुमन्त काका ऐठाम बेरुका उखड़ाहामे पहुँचला तँ क्षुब्ध भेल बैसल सुमन्त काकाकेँ देखलैन। अपन करनीक फल मने-मन सुमन्त काका जोड़ि रहल छला। ओना, हीरालालक मनमे एहेन विचार नहि जगलैन जे सुमन्त काका अपन करनीक फल जोड़ै छैथ। किए तँ सुमन्त काकाकेँ अखनो हीरालाल ओहिना देखै छैथ, जेना चोरी करैबला चोर, झूठ बजैबला झूट्ठा, अधला काज करैबला अधला लोकसँ विपरीत जीवन

धारण केनिहार होइ छैथ। सुमन्त काका, समय पेब नीककेँ नीक आ अधलाकेँ अधला कहिते छैथ। तँए हीरालालक मनमे किए उठितैन जे परिवारक कोनो कलहसँ काका क्षुब्ध छैथ। प्रणाम करैत हीरालाल बजला-

“समाजेक भागे ने आब अहाँ सभ जीब रहल छिऐ काका?”

समाजक बीच जे वैचारिक चलैन अछि तइ अनुकूल हीरालाल बाजल छला। मुदा सुमन्त काका अपन परिवारक खाधिमे तेना फँसि गेल छैथ जे अक-बक दुनू बन्न भऽ गेल छैन। ओना, अपन विचारक धारणकर्ताक रूपमे काका अपनाकेँ ठाढ़ कइये नेने छैथ मुदा जइ परिवारमे बास छैन ओइ बासक बसबैया बसौ दइन तब ने, तइले तँ समाजो चाही आ तैसंग परिवार सेहो चाही, मुदा तही परिवारमे ढनढनी लागि गेलैन जइसँ बेसीकाल परिवारमे राँउ-झाँउ होइते रहै छैन, तइसँ मन अक्कछ रहबे करै छैन। ओना, अपन बनौल जीवन-धारमे बहनिहार लोक सुमन्त काका छथिए। मुदा कानो तँ कान छी, जखने राँउ-झाँउसँ भरए लगत तखने अमूल्य समय दुइर करबे करत।

सुमन्त काका बजला-

“हीरालाल, भने कहलह जे समाजक भागे जीबै छिऐ, मुदा अपन की भाग अछि तेकर आड़ि-धूर अछिए नहि, तखन तोहीं कहह जे एहेन समाजक भागी बनब सोहंतगर हएत?”

सुमन्त कक्काक विचारसँ हीरालालकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक परिवारमे किछु भेलैन अछि तँए मन उखड़ल सन छैन। परिवार दिस विचारकेँ मोड़ैत हीरालाल बजला-

“परिवारक सभ ठीक-ठाक छैथ किने काका?”

सुमन्त कक्काक मनक आगि, माने परिवारक प्रति, नीक जकाँ मिझाएल नहि रहैन, ओही भुमहुरक ताउमे सुमन्त काका बजला-

"बौआ हीरा! होनी हाथ धड़ा कऽ होइए, सएह हमरो भेल। अपने नीक जकाँ बुझि नहि पेलौं, कियो ओहन सहयोगी जीवनमे भेटला नहि तँए अपन बुइधिक चूक भेल।"

हीरालालक मन विचारवान विचारक विचार सुनिते समाजक रूपपर गेलैन। विचारकेँ आगू बढ़बैत हीरालाल बजला-

"की अपन चूक भेल, काका? चारि पैरबला हाथी जैठाम चुइक जाइए तैठाम अपना सभ ते दुइये पैरपर ठाढ़ छी, तखन जँ चुकबे केलौं तँ केलौं।"

हीरालालक विचार सुनि सुमन्त कक्काक मनमे जेना सनतनमा एलैन, जइसँ बोलीमे मधुरमणि जगलैन। बजला-

"बौआ हीरा, लोकक जीवनक परिवेशक हवे ओहन बहि गेल अछि जइसँ परिवारक ढाँचे प्रभावित भऽ रहल अछि।"

सुमन्त कक्काक गम्भीर बात सुनि हीरालाल विचारलैन जे किए ने अपन जीवनक चूक सुमन्त कक्काक अपने-मुहेँ सुनि ली। हीरालाल बजला- "काका, कनी फरिछाकऽ कहियौ।"

जेना अपन चिन्तनक वेग सुमन्त काकाकेँ जगि गेलैन तहिना बजला- "हीरालाल, तूँ अखन नौजवान छह तँए तोरा कहैमे हमरा कोनो हिचकिचाहट नहि अछि। जखन अपन परिवारे ने सम्हारल होइए तखन अनेरे ने गामक सम्हारमे लागब। विचारेसँ ने गाम आ गामक समाजो चलैए।"

हीरालाल बजला- "हँ, से तँ चलिते अछि।"

हीरालालक मुहसँ 'हँ' निकैलते सुमन्त काकाकेँ जेना किछु विदेशी बल, माने बाहरी बल, भेट गेलैन तहिना भेलैन। मुँह झाड़ि सुमन्त काका बजला- "हीरालाल, अपने परिवारमे नमहर चूक भऽ गेल, जे केला-पूर्व नहि बुझि सकलौं, पछाइत जखन जीवनक दौड़मे आगू बढ़लौं तखन

बुझि पड़ए लगल जे केतौ चूक जरूर भेल अछि, तेकरे फल भोगै छी।”

सुमन्त कक्काक हहरैत विचार सुनि हीरालाल बजला-

“काका, जहिना हेम्योपैथी डॉक्टर बिमारी चिन्हैले रोगीक कुल-खनदानक परिचय लैत बिमारीक पहचान करै छैथ, तहिना जाबे अपन चूक नहि बाजब ताबे बिमारीक पहचान केना हएत?”

हीरालालक विचार सुनि सुमन्त कक्काक मनमे भेलैन जे एहनो तँ सम्भव अछिए जे चूकोमे चूक होइत हो आ अपने ओइ चूककेँ चूक नहि बुझैत होइयै। भने हीरालाल सुनैले तैयार भेल अछि, किए ने अपन चूकक सभ बात कहि दिऐ। ओना, सुमन्त कक्काक मन परिवारक कलहसँ तेना सियहि गेल छैन जे भीतरे-भीतर जरि-जरि कहैन जे मनुक्खक घरमे कुकुरक बास भऽ गेल, तँए भरि दिन कुकुर कटौज होइत रहैए। मुदा अपन चूकल विचारकेँ मन रोकि दैन। मुदा तैयो हूबा करैत सुमन्त काका बजला-

“बौआ हीरा, आब जँ विचारि देखै छी तँ साँझुक बगुरक गाछ जहिना भकजोगनी-इजोतमे भुकभुकाइत रहैए तहिना मनमे उठैए, मुदा जिनगीक बीच परिवारक हार देखि मनकेँ केतबो जिनगीकेँ बाटपर अनैक परियास करै छी मुदा तैयो ओइमे पीछराव आबिये जाइए।”

सुमन्त कक्काक विचार हीरालालकेँ नीक लगलैन मुदा सुमन्त काकाकेँ चूक की भेलैन, से बुझबे ने केलाह। हीरालाल बिटियबैत बजला-

“काका, अखन तक राजनीतिशास्त्रक विद्यार्थी रहलौं तँए साहित्यिक भाषा नहि बुझै छी। अपने कनेक चूकसँ सम्बन्धित विचार...।”

‘चूक’ तक अबैत-अबैत हीरालालक अपने मन अपन बोलकेँ रोकि विचार देलकैन जे भाषाक भाव भलेँ भाष्य किए ने हुअए मुदा उच्चारणक

आवाजोक तँ अपन शक्ति छइहे।

ओना सुमन्त कक्काक अपनो मन मानियेँ रहल छेलैन जे कोनो चूक वा गलती समाजक बीच एने ओकर प्रायश्चित होइत परिमार्जन सेहो भऽ जाइए मुदा तइले अपन जीवनक आचरणकेँ समाजक बीच आनि देखबए पड़ै छइ। सुमन्त कक्काक मन अपने ओझरा गेल छैन जे केम्हरसँ चूकक असल जड़िक कारण भेटत..!

एकाएक सुमन्त कक्काक विचार बदैल अपन मूल चूकक कारणपर आबि अँटकलैन, अँटैकते बजला-

“बौआ हीरा, आब बुझै छी जे अपन मनक धारे मुँह छोड़ि दोसर मुँह बना देलक। तेकरे फल भेट रहल अछि।”

अपन जनैत सुमन्त काका अपन सभ बात बाजि गेला मुदा हीरालाल जे बुझए चाहै छला से बुझिमे नहि एलैन, तँए उन्टा पाठ करैत हीरालाल बजला-

“काका, गनल-गूथल तीनियेँ बापूत छी तखन किए मन एते खसल रहैए?”

‘मन खसब’ सुनिते सुमन्त काका बमैक कऽ बमछैत बजला-

“बौआ हीरा, ठक सभक भाँजमे पड़ि परिवारे बिगाड़ि लेलौं..!”

सुमन्त कक्काक विचार सुनि हीरालालक मनमे उठलैन जे सत्ता आ समाजक बीच दूरी रहने, रूइआक बीआ जकाँ बिनोला बनि जँ बिचौलिया बनल अछि तँ कोनो बात नहि मुदा परिवारक बीच जँ बिचौलिया रहत तखन परिवारमे एकरूपता केना हएत। एक-एक परिवारमे चारि-चारि पाँच-पाँच सम्प्रदायक लोक छैथ, रंग-रंगक भोजन, रंग-रंगक वस्त्र आदि सभ किछु परिवारमे रंग-बिरंगक आबि गेल, तैठाम परिवार-गठनक तँ ओहन कारीगरो आ कुम्हारक चाको चाही ने। अपनाकेँ औगुतबैत हीरालाल बजला- “काका, कएटा काज बाधित भेल

जा रहल अछि। अपने विचारपर विराम दियौ।"

गुड़ घाव जहिना शरीरक भीतरे-भीतरे सड़ैन करैत रहैए तहिना सुमन्त कक्कक मनमे सेहो अपन विचार सड़ैन करिते रहैन, बमैछ कऽ बजला- "मधुबनी जिलामे घर अछि, से तँ देखिते छह किने?"

हीरालाल- "हँ।"

सुमन्त काका बजला-

"जेठकी पुतोहु छी पछिमाही- छपराक।"

हीरालाल बजला-

"ओते दूर जे कुटुमैती केलौं से कि अपना इलाकामे मनुक्खक रौदी भऽ गेल जे बाढ़िये रूकि गेल।"

हीय खोलि सुमन्त काका बजला-

"बौआ, टाकाक लोभमे पड़ि गेलौं। पछबरिये एकटा घटक भेट गेल, वएह सभ काज केलक।"

हीरालाल- "आ दोसर?"

सुमन्त काका बजला- "गंगाकातक ठकक भाँजमे पड़ि दछिनाही पुतोहु आबि गेली।"

सामंजस्य करैत हीरालाल बजला-

"दछिनाही हुअए कि पछिमाही, मुदा छी तँ सभ मनुखे ने। एक तँ ओहुना आब बाल-विवाह नहि होइए। आब चेतनमे बिआह-दान हुअ लगल अछि, तैठाम नवतुरियाकेँ अपनो भविष्य दिस देखैक नजैर बनबए पड़तैन किने। परिवारक बीच बेकती-बेकतीक दूरी बनबै पाछू बाहरी झोंका (हवा) एते उग्र रूपमे मारि रहल अछि जे एकाएक अतीतक संग सम्बन्धो विलुप्त होइक कगारपर ठाढ़ अछि।"

एकाएक हीरालालक मन थकथका गेलैन। थकथकाइक कारण

भेलैन जे परिवारक बीच जखन एहेन हवाक रूखि पकैड़ रहल अछि, तखन जीवनो तँ दुरकलहमे पड़िये सकैए, तँए विदेशे (बाहरे) बास ने नीक हएत।

मनक वेगमे हीरालाल बंगलोर जा तीन साल बिता लेलैन। तीन सालक पछाइत पुन: गाम-समाजक होश हीरालालकेँ भेलैन जे जखन गामे मेटा जाएत तखन गामक नाम की हएत आ अपने कोन गामक नाम कहबै। प्राकृतिक उपद्रवक क्षेत्र अपना सभक छीहे, जहिना भुमकम क्षेत्र तहिना धार-धूर, झाँट-बिहाड़िक सेहो छीहे, कहब जे दुनियाँक सभसँ अधला क्षेत्र अपने सभक अछि? नहि, सभसँ नीक क्षेत्र अछि। जहिना समुद्रसँ बहुत दूर छी, तहिना उत्तरसँ हिमालय पहाड़क सुरक्षा सेहो अछि। समुद्री क्षेत्रमे पाइनिक, समुद्री जुआरिक, सइयक-सय कोसक चास-बासकेँ धोइ-पोछि लइते अछि। कहब जे भुमकमोक उपद्रव तँ तेही तरहक होइए? हँ, सेहो होइए मुदा जापान जकाँ नहि अछि। तखन तँ भेल जे ओ सभ, जापानी सभ, भुमकमकेँ अङेज मजगूत बनि गेल अछि आ अपना सभ नामे सुनि डरे चौंक जाइ छी। चौंकने काज नहि ने चलत, ओ तँ चलत असथिर चित्ते।

जीवनक जेना नव दिशा हीरालालकेँ भेट गेल होनि तहिना मनक बिसबासो बनए लगलैन। तैबीच गाम देखैक नजैर सेहो गुणमन्त हुअ लगलैन।



शब्द संख्या : 1881, तिथि : 09 जुलाई 2021

समयक थपेड़मे

मास दिनक बैसारी मिसियालालकेँ बतरसिया बना देलकैन, जइसँ देहमे कनी-कनी दर्द सदिकाल कचकए लगलैन। बैसारी भेने मनमे ईहो होनि जे कहीं बैसले बैसल ने प्राण छुटि जाए। कहब जे एहेन साधारण रोगमे एतेक भारी निर्णयक कोन खगता अछि? हँ, खगता नहि अछि मुदा अहीं कहू जे भगवान केते उचित केलैन जे जइ जेठ मास कहियौ आकि जून,मे तीन हीस जखन बीत जाइए तखन पाइनिक (बर्खाक) आगमनक लोक आशा करैए आ तैठाम चढ़िते मास बर्खाक रूखि जे अछि से देखिए रहल छी जे तैसंग पहिलुका समयक, माने बरखा होइसँ पहिनेक, जेठुआ शासन सेहो ओहन अछिए जे लूओकेँ नचैत लोक बाधमे देखैए, धरतीपर पएर-तरबा सेहो पकैए आ तैसंग पोखैर-झाँखैर, चापाकल-बोरिंगक पानि निच्चाँ उतैर-उतैर सुखबो तँ करिते अछि।

गाम दिस जखन मिसियालाल नजैर खिड़ौलैन तँ बुझि पड़लैन जे अपन मरैक बेर अखन नहि आएल अछि किएक तँ समाजोमे, माने गाममे हमरोसँ आगू केते-गोरे मरैले नम्बर लगौने छैथ। तँए पहिने ओ सभ ने मरता। हुनका सभक मुइलाक पछाइत ने अपन नम्बर औत। अपन तँ खेत डुमल अछि, केते दिन डुमल रहत तेकर कोनो निश्चित नहि अछि, अखन दू मास धान रोपैक समय अछि, तँए आशा बनल अछिए जे जहिना बर्खाक पानि भेल तहिना सूखि जाएत। जिनकर पोखरिक माछ

दहा गेलैन, हुनका तँ आर्थिक रूपेँ परिवारमे पैघ नोकसान भेबे केलैन। ओना, अपनो खेती बाधित भेल जइसँ परिवारकेँ सेहो क्षति उठाबए पड़त। बरसाती फलो (मौसमी) आ तीमनो-तरकारी लगबैक जे मूल समय छल ओ बाधित भेल, बाधिते नहि भेल, मौसमक फसले चौपट्ट भऽ गेल। तैसंग अपन हाथक काजो हेरा गेल। लऽ दऽ कऽ दूटा गाए अछि तइ पाछू सभ कियो, माने परिवारक सभ कियो, लगल रहै छी। जखन कि एते लगल रहबाक खगते की अछि। भेल तँ एतबे ने जे समयपर ओकरा (गायकेँ) घर-बहार करब, समयपर खाइ-पीबैले दऽ देबइ, बाँकी समय तँ अपना हाथमे बँचले रहल, जेकर उपयोग दोसरठाम कएले जा सकैए।

केतबो मिसियालाल मनकेँ बुझौलैन, मुदा मन नहि मानलकैन। बेरुका चाह पीबिये नेने छला, तनफना कऽ जीबठलाल काकासँ गप-सप्प करए विदा भेला। दरबज्जापर सँ कनियेँ आगू बढ़ला कि आगुएसँ सुगिया माए कहलकैन-

“मिसिया बौआ, जुलुम भऽ गेल..!”

तेते अकचका कऽ सुगिया माए बाजल छेली जे मिसियालालक मनक सभटा भक्क खुजि गेलैन। बजला-

“की जुलुम भेल भौजी?”

सुगिया माए बजली-

“दछिनवारि टोलमे तीनटा बच्चा, पाँच-सात बर्खक, डुमि गेल..!”

सुगिया माइक समाचार सुनि मिसियालाल विचित्र स्थितिमे पड़ि गेला। अखन तक मिसियालाल जीवनक अनुभवक हिसाबसँ यएह बुझै छला जे जेठ मास पाइनिक कहातक मास छी, जइमे लोक मरितो अछि तँ पानि बेतरे। तैठाम सुगिया माइक मुहेँ डुम्माक समाचार सुनि रहल छी.! मुदा अपने विचार मिसियालालकेँ रोकि कहलकैन जे जे बुझल

अछि ओ अतीतक अनुभव अछि, मुदा ऐ साल जे पाइनिक आगमन भेल अछि, माने बरखा भेल अछि, ओ तँ डीह-सँ-डाबर तक एकरंग सलाढ़ बना देलक अछि, तैठाम बाल-बोध थोड़े बुझैए जे ऐठाम डबरा छै तँए बेसी गहींर हएत। सभक बास तँ एकबास जकाँ अछिए। जहिना बाड़ी-चौमास रहैए तहिना ने माछ-पोसैक डोहो-डाबर अछिए, ओ तँ सभकेँ रहबे करत। सुगियो माए अपन काज दिस बढ़ि गेली आ मिसियोलाल जीबठलाल काका ऐठाम विदा भेला।

दस डेग आगू मिसियालाल बढ़ला कि अपनेपर नजैर पहुँचलैन। नजैर पहुँचते मन कहलकैन, एहेन बैसारी जीवनमे कहियो ने भेल छल जेहन ऐबेर भेल अछि। फेर अपने मन विचार देलकैन जे अपने तँ किसान छी, किसानी जीवन जीबै छी। तँए गनगुआरि जकाँ जँ दू-चारिटा टाँग टुटिये जाएत तइसँ कि चलब कठिन हएत। चलब तँ कठिन ओइ आदमीकेँ हएत जे एकचलिया छैथ। माने एक बेवसायसँ जुड़ल छैथ।

दरबज्जापर बैसल जीबठलाल काका अपन परिवारक विषयमे ऐ रूपेँ गम्भीर भऽ विचारि रहल छला जे एक-एक दिनक घड़ी-पहरक क्रिया-कलाप छेलैन। एकाएक जीबठलाल कक्काक मन अपन परिवारसँ आगू बढ़ि गाम (समाज) दिस बढ़लैन। गाम दिस बढ़िते गामक मुख्य फसल धानपर गेलैन। धानपर नजैर पड़िते मुँह बिजैक गेलैन। गामक सभ किसानकेँ बुझल छैन जे धानक बीआकेँ पाड़बक सभसँ उचित समय भेल रोहैन नक्षत्र, जे जेठक, माने जेठ मासक, मुख्य नक्षत्र छी, जइमे किसान धानक बीआ पाड़ै छैथ मुदा तइमे पानिक बाढ़ि आबि गेल.! किछु नव विचारक जे किसान छैथ, जिनका मार्चसँ धानक खेतीमे लागक चाहिऐन, से अपने परेशान छैथ जे एक तँ मई-जून, माने बैशाख-जेठ,क समय आ तइमे धानक खेती प्रतिकूल जकाँ तँ बुझिये पड़ैए.! ओना, नहर-बोरिंग भेने अनुकूलो तँ बनियेँ सकैए मुदा बिजलीक अभाव आ नालाक समुचित बेवस्था नहि भेने बिमरियाह जकाँ दुनू पड़ल

अछिए.! तरे-तर जीबठलाल कक्काक मन घोरो-घोर होइत रहैन आ अपनहि कोनो-ने-कोनो जुक्ति (युक्ति माने इन्तजाम, प्रबन्ध) सेहो मनमे भइये जानि जइसँ मुँहक जे सुर्खीक विद्रूपता हेबा चाही से नहियेँ छेलैन। दरबज्जापर बैसल जीबठलाल काकाकेँ देखि मिसियालाल फड़िक्केसँ ओहन जजमान नौतहारी जकाँ, जे अड़ोसिया-पड़ोसियाकेँ सुना कऽ जहिना जोरसँ बजैए तहिना मिसियालाल बजला-

“काका, गोड़ लगै छी।”

ऐठाम जोरसँ बजैक दू रास्ता अछि, पहिल अछि जिनकासँ गप-सप्प करै छी हुनकर दूरी की छैन। जँ लगमे छैथ तखन लगक आवाजमे बाजब बेसी नीक भेबे कएल। दोसर भेल, दवाब बना बाजब। मुदा मिसियालाल कोन खेतक मुड़ै अखन भेला अछि जे एहेन संस्कार औतैन। बुझिते छी जे मुड़ै ने तरकारिये छी आ ने मसल्ले, दुनूसँ बाड़ल अछिए। जखन कि दुनूक गुण माने देहोक हाड़-काठ आ मसल्ला-मिरचाइक झाँस सेहो छइहे। ..दू-तीन लग्गाक दूरीपर सँ मिसियालाल बाजल छला।

अपन विचारक नजैरकेँ माने परिवारसँ समाज आ समाजसँ परिवारक बीच आवागमन केना होइत चलैए, तइ दिस जीबठलाल कक्काक विचार जा रहल छेलैन, तइ बिच्चेमे मिसियालाल पहुँचल छला।

मिसियालालक गोड़ लागबकेँ जीबठलाल अपन बेवहार बुझि गोड़ लगैक कारणपर नजैर किए दइतैथ। अपन अदब बेवहारमे जीबठलाल काका बजला-

“मिसी, बहुत दिन जीबह। आबह।”

मिसियालालक मन भकचका गेलैन जे तेहेन समय आबि गेल अछि जे करखन छी आ करखन नइ छी तेकर कोनो ठेकान नहि, एक दिस करोना बिमारी, दोसर दिस कोसी-कमलाक बाढ़ि.! तैठाम जीबठलाल काका एहेन असीरवाद किए देलैन? उचित होइतैन जे अखन जे

दलिखिच्चड़ि मौसम बनि गेल अछि, तइ अनुकूल आसिरवाद दितैथ। मुदा अपने मन मिसियालालकेँ मनाही केलकैन जे औगुताकऽ आगू भऽ केतौ किछु बाजब उचित नहि। मुदा एते तँ उचितिक परिस्थित बनियेँ जाइए किने जे अपन उचितिक उदगारकेँ ओही मुहेँ धकिया दिऐ। मिसियालाल बजला-

"से केना जीब, काका?"

जीबठलाल बजला-

"जीबैयोले कि कोनो एकेटा रास्ता अछि जे साँप जकाँ बिल मुनेने औनाकऽ बिलेमे मरि जाएत आकि मूस-मुसरी जकाँ दोसर-तेसर बिल खुनि अपन रहैक घरो बना लेत आ बिल भरनिहारकेँ सेहो कहबे करत ने तोरा बिल भरने हमर जीवनक रास्ता थोड़े बाधित भेल।"

अपना विचारानुकूल जीबठलाल काका बाजल छला आ अपना विचारानुकूल मिसियालाल बुझलैन। जइसँ दुनूमे दूरी बनले रहलैन। अपना सुरिये दुनू छथिए। मौसमपर सँ विचार उतारि मिसियालाल समयपर आनि बजला-

"काका, आद्रा पाबैन केलौं कि पछुआएले छी?"

मिसियालालक विचार एक पन्हरहिया पावनिक हिसाबसँ छेलैन। माने आन-आन पाबैन जकाँ आद्रा पाबैन नहि होइए। एकर अपन सभ किछु छइ। पनरह दिनक नक्षत्रक बीच पनरहो दिन पावनिक मुहूर्त अछिए, तँए एकदिना पाबैनसँ अलग आद्रा अछि। ओना, एक दिनो पाबैनमे भेद अछिए जे कोनो पाबैन दिन-के होइए आ कोनो राति-के। ओना, दिनो-दिन आ रातियो-रातिमे अन्तर (भेद) अछिए। अन्तर ई अछि जे कोनो पाबैन रातिक पहिल पहरक मुहूर्त्तमे होइए आ कोनो दोसर-तेसर आ कोनो तेसर-चारिम पहरक मुहूर्तमे होइए।

‘आद्रा पाबैन’ सुनि जीबठलाल कक्काक मन बोहिया गेलैन। बोहियाइते-बोहियाइत ओइ सीमापर पहुँच गेलैन जैठाम समाजक बहुसंख्य परिवार आद्रा पावनिक भोज्य विन्यास पबैक (प्राप्त) अराध अपना मनमे अराधि जीवन-क्षेत्रमे आगू बढ़ला। आजुक समाज भोज्यमे आगू बढ़ला अछि जइसँ भोजनमे सुधार भेल अछि, तँए आद्रा पाबैन स्वत: अपन ओइ चरम-भूमिपर आबि गेल अछि जे कामना-विहीन भऽ गेल।

मिसियालालक विचारकेँ जीबठलाल काका ओइ विचारक तहमे तहिया विचारमे मोड़ दैत बजला-

“ऐबेर कोनो नवका धानक खेती केलह अछि कि नहि, मिसियालाल?”

जहिना सामान्य विचारे जीबठलाल काका बाजल छला तहिना सामान्य रूपमे मिसियालाल सेहो बाजल-

“काका, साले-साल तँ नवका, माने उन्नतशील, बीज अनिते छेलौं, कोनो साल सुतरबो करै छल आ कोनो साल नहियोँ सुतरै छल। मुदा ऐबेर ते तेसरे भऽ गेल.!”

जिज्ञासा करैत जीबठलाल काका बजला-

“ऐबेर की तेसर भेल?”

मिसियालाल बजला- “काका, जइ दिन धानक बीआ अनलौं, तही दिन पहिल बरखा भेल। अपन भाग्यकेँ चाबस्सी देलौं। जहिना बीआक आगमन परिवारमे भेल तहिना पाइनिक आगमन सेहो भेल तँए नीक संयोग बुझि पड़ल, मुदा..!”

भक्क तोड़ैत जीबठलाल काका बजला- “मुदा की?”

हीयाहारि मिसियालाल बजला- “मुदा यएह ने जे अपन जीवन टुटैत देखि रहल छी।”

मिसियालालक गम्भीर विचारकेँ मटियबैत जीबठलाल काका बजला- "धानक बीआ की केलहक?"

मिसियालाल बजला- "की करितौं, समय बीतल ओकर जीवनक बीजपन नष्ट भेल। घरवाली विचार देली जे घरमे अरबा धान भने आबिये गेल, नवकुट्टी चाउरक खीरो नीक बनैए। धान कुटा लिअ। खीर खा बीआ बिसैर जाएब।"

विचारमे मोड़ दैत जीबठलाल काका बजला-

"बौआ मिसी, कोनो दुख-बेथा हम तोरा लग नहि बाजब आ तूँ हमरा लग नहि बजबह तखन समाजक धाराक मुँह-मिलानी केना हएत। आ जँ से नहि तँ वएह गति ने हएत जे जहिना समाज बिनु धाराक बहैए।"

जीबठलाल कक्काक विचार सुनि मिसियालाल समाजक जिज्ञासा करैत बजला-

"काका, ऐबेरक समय तँ जहिना भूगोलकेँ भुतियेलक तहिना इतिहासोकेँ झुठिया देलक। अपना सभकेँ तइ सभसँ कोन मतलब अछि।"

मिसियालालक विचार सुनि जीबठलाल कक्काक मगजमे ठाँहि-दे लगलैन, मुदा समयक जे दुर्काल देखि रहला अछि तइसँ अपन विचारकेँ रोकैत बजला-

"अपना गाममे केते खेतक उपजा मारल जाएत, मिसियालाल?"

जीबठलाल कक्काक विचार सुनि मिसियालालक मन अपन जीवनक ओइ भूमिपर पहुँच गेलैन जैठामसँ परिवार समाजक दिशामे बढ़ैत एक अंगक रूपमे ठाढ़ होइए। मिसियालाल बजला-

"काका, ने हम अमानत करैबला अमीन छी जे गामक खाता-खेसरा आ सीमा-चौहद्दी बुझब आ ने ओहन लोके छी जे समाजसँ

हटिकऽ रहब। हमहूँ तँ अही समाजमे छी, तँए गाम-समाज कि कोनो हमर नहि छी आकि हमहीं गाम-समाजक नहि छी। पाँच बीघा जोतबला किसान छी, सालक पहिल चरणक जे खेती अछि ओ मरा जाएत।"

जीबठलाल काका बजला- "से केना बुझै छहक, मिसी?"

जेना मिसियालाल अपन जीवनमे अपना हाथे कएल खेतीक बिसवासक संग बजला-

"काका, मोन अछि कि नहि जे अपने सभ केना सत-सत बेर धानक खेती केला-पछाइत सालक, माने एक मौसमक, उपजा पबै छेलौं।"

मिसियालालक विचार सुनि जीबठलाल काका बजला-

"जे समय बीति कऽ पाछू पड़ि गेल ओ मनमे जरूर राखह मुदा जीवनक लेल जे आजुक काज अछि ओकरा सदिकाल आगूमे राखह। धानक खेती नइ होइक अपन की कारण छह?"

जेना मनक वा पेटक बात निकललासँ गुदगुदी उठैए तहिना मिसियालालकेँ सेहो उठलैन, उठिते बजला-

"काका, बुझि पड़ैए जे समय हारि मना देत.!"

मिसियालालक विचार सुनि जीबठलाल काका गम्भीर भऽ गेला। एक तँ समयकेँ चीन्हि लेब कठिन अछि, तैपर ओकर संग पकैड़ आगू दिस बढ़ि जाएब बाल-बोधक खेल थोड़े छी, तैठाम मिसियालालक मनक दृढ़ता सुनि जीबठलाल काका बजला- "आब की उपाय अछि?"

निर्गुण भजनियाँ जकाँ घुनघुनाइत मिसियालाल बजला-

"एक घड़ी, आध घड़ी, आधोमे पुनि-आध, तैठाम तँ अपने बहुत नीक छी काका, बौक-बकलेल प्रकृति जगलाहा मनुक्खकेँ भोतिया देत।"

मिसियालालक मगनता देखि जीबठलाल काका मगन जरूर भऽ गेला, मुदा अपन गाम-घरक रूप देखि मन जेते तरैस रहलैन अछि तेते

उठि सेहो रहल छैन। मनमे उठि रहल छैन गामक अर्थगर्भा की बाँझ भऽ गेली..! जीवनक गाछपर सँ अपन विचार उतारि जीबठलाल काका बजला-

"मिसियालाल, अखन तोहूँ जहिना छुट्टे खजाना हेबह तहिना हमहूँ छिअ। तँए किए ने दुनू-बापूत एकठाम बैस गामक हाल-चालपर विचार करी।"

मिसियालाल बजला- "गप-सप्प करैमे हमरा बंगाली ढाठी अछि, एक घन्टामे तीन बेर चाह पीबै छी।"

मुँह परक माछी उड़बैत जीबठलाल काका बजला-

"आब की कोनो ओ जुग-जमाना रहल जे चाहो बनबैमे दू घन्टा लागत, दू मिनटमे चाह बनैए, तीन बेरक कोन बात जे तेरह बेर चाह पीएबह।"

अपन बेथा खोलैत मिसियालाल बजला-

"चाहो पीबैपर आपैत्त आबि गेल अछि, काका.!"



शब्द संख्या : 1798, तिथि : 14 जुलाई 2021

की सत्त की फुइस?

मास दिनक पछाइत संयोग बनल सहसलाल काका रजिष्ट्री ऑफिसक ओसारपर नजैर पड़ला। एक तँ मास दिनक बीचक जे गड़ूगर समय भेल ओ तँ आरो मनकेँ तेना मोथि देलक जे कचड़ी जकाँ पियाज केतौ, मिरचाइ केतौ, खेसारीक अधखिज्जू दालि केतौ जकाँ भइये गेल अछि। तहूमे एकटा नमहर फँसरीक फाँस सेहो लगिये गेल। सरकारी घोषणाक अनुकूल बीस जूनकेँ मौसम ऐबाक समय छल तेकरा दरभंगा रेडियो स्टेशन बारहे जूनकेँ दरभंगामे उतारि लेलक। केम्हर होइत आएल मौसम, से ठेकाने ने रहल जे पूर्णिया किसनगंज होइत आएल, कि मधुबनी सीतामढ़ी होइत आएल कि समस्तीपुर-बेगूसराय होइत आएल आकि छपरा-मुजफ्फरपुर होइत आएल से थाहे ने रहल।

सहसलाल काकापर नजैर पड़िते मन सुगबुगा गेल जे कहिऐन काका, बहुत दिनपर भेँट भेलौं। मुदा अपने मन दबारैत-डाँटैत कहलक जे बहुत दिनपर भेँट भेलौं, एहेन विचार गामक सीमानसँ बाहरक छी। मुदा गौंआँकेँ केना कहल जाएत। समाजक जे सम्बन्ध-सूत्र रहल अछि ओ एहेन रहल अछि जे कम-सँ-कम अपन लगक जे विचारक लोक छैथ, तिनका सम्बन्धमे दिन-दिनक जानकारी प्राप्त करितो छैथ आ अपन देबो तँ करिते छैथ। लगमे पहुँच बजलौं-

“काका, गोड़ लगै छी..!”

जेना मने-मन कोनो धुनिमे सहसलाल काका छला तहिना चौंकक॰ बजला- “जिगेस बौआ.!”

बजलौं- “हँ.!”

सहसलाल काका बजला-

“कोनो काजमे ओझराएल छह आकि निचेन छह। हम निचेन छिअ। अखन तकक जानकारीमे रजिष्ट्री हेबाक कोनो सम्भावना नहि अछि।”

अपनो गति सएह छल। अपनो रजिष्ट्रीए काजे गेल रही। रजिष्टारकेँ अनुपस्थितिक कारणेँ अपनो निचेने रही। जहिना भोली वॉलमे एक गोटा फेकलक आ दोसर पकड़लक तहिना भेल। बजलौं-

“काका, अपनेक समैयक आगू हमरा समैयक मोल की अछि, तैठाम जँ अपन जरूरियो काज रहैत तँ ओकरा ठेलि, पहिने अहाँसँ गामक हाल-चाल बुझबे करब।”

अपने बजिते रही कि सहसलाल काका उठिक॰ ठाढ़ होइत बजला- “चलह, ओइ पीपरक गाछ लग बैस दुनू-बापूत निचेनसँ गप-सप्प करब।”

दुनू गोरे गप-सप्प करैत आगू बढ़लौं कि सहसलाल काका बजला-

“जुगेस, की कहबह.! अपन तँ गरदैन हलैल गेल..!!”

‘गरदैन हलैल गेल’ ई तँ बहुत बेसी नोकसान हएब भेल.! मौसमक कुभाँज सँ जीवन कुभाँजमे पड़िये गेल अछि। अपन मन तर्क-वितर्क करए लगल जे सहसलाल काका ई नहि बजला जे गरदैन कटि गेल, जँ से बाजल रहितैथ तँ ओकर जवाब किछु आरो होइत, मुदा बजला- ‘हलैल गेल।’ ओना, हलाल सेहो मृत्युक रूपमे कहल जाइए, मुदा सहसलाल काका केते हलाल भेला, से ओना केना बुझब। देहक चमड़ोमे तँ अनेक परत अछिए, जँ एके-आध तह माने परत हलल होनि तखन ओकर

जवाब किछु आरो हएत आ नहि जँ तइसँ बेसी हलल हेता तेकर जवाब किछु आरो हएत। कट्ठे भरि हटल, माने रजिष्ट्री ऑफिससँ, पीपरक गाछ अछि। अपने मने-मन विचारिये रहल छेलौं कि गाछ लग बइसैक जगह टेबि सहसलाल काका बजला- "ऐठाम बैसह।"

ओना, अखन तक सहसलाल काका सेहो दोहराकऽ किछु नहि बाजल छला मुदा अपन मन कहिते छल जे सहसलाल काका जवाबक प्रतीक्षामे छथिए। कनी-कनी मनमे ईहो हुअए जे कोनो विचारे वा वस्तुएक लेन-देनमे खगतानुकूल सेहो तगेदा कएले जाइत अछि, मुदा सेहो ने केलैन। एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे जैठाम भरि दिनमे मन साइठ हजार बेर नचैए तैठाम विचारे तर पड़ि गेल होइन।

पानक थूक मुहसँ फेक सहसलाल काका बजला-

"की हाल-चाल छह जीगे?"

एक तँ मास दिनक पाइनिक मारि खाएल मन रहबे करए, तैपर आह्लादसँ सहसलाल काका जिज्ञासु बनि जिज्ञासा केलैन। गुड़ घावमे पीज निकलै बेर जेहेन असिआस पड़ैए तहिना मनमे भेबे कएल। बजलौं-

"काका, कहुनाकऽ जीबै छी।"

दोहराकऽ बिनु पुछनहि सहसलाल काका अपने फुरने बजला-

"जीबैक लूरि जेकरा रहत ओ जीबे करत।"

सहसलाल काका चुप भऽ गेला। अपने मने-मन तर्क करए लगलौं जे काका की पुछलैन आ केतए वौआ रहला अछि, कोनो ठेकाने ने पेब रहल छी। भाँजपर विचार नहि चढ़ने मुँह बन्ने छल। बिच्चेमे सहसलाल काका बजला- "जुगे, ऐबेर मौसम बेठेकान भऽ गेल, तँए बेसी तवाहीमे ने ते पड़ल छह?"

मासे दिनक बीच अपन जीवन टुटि-टुटि निच्चाँ ससरए लगल अछि। अपने ओहन पशुपालक किसान छी जे मुख्यरूपसँ पशुपालनपर

जीवन ठाढ़ केने छी। ओना, किसानक रूपमे सभ किसान छैथ मुदा सभकेँ अपन-अपन जीविकाक साधन भिन्न-भिन्न छैन जइसँ मौसम कुमौसमक प्रभाव भिन्न-भिन्न रूपमे सभकेँ पड़ै छैन। अपन जीवन निच्चाँ मुहेँ ससरैक कारण भेल अछि जे मौसमक साधने नष्ट भऽ गेल। गाए पोसव खेती नइ ने छी, दिन-दिनक नियमित ओकर क्रिया-कलाप अछि। ओना, खेतियो कुशल खेतिहरक दिन-दिनक नियमित क्रिया सेहो छिऐन्हे मुदा ओहन परिवेश किसानकेँ उपलब्ध नहि भेलैन अछि। ओना, स्वयंजीवी किसानो तँ छथिए। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे, बजलौं-

"काका, की कहब.! गाइयक घासे (चारा, भोजन) नष्ट भऽ गेल। पानिमे तेना डुमि गेल जे गलि-पचि गेल। दूटा ढेनुआर गाए आ दूटा लग्हैर गाए अछि। दुनूक दूधमे दू-दू किलो घटबी भऽ गेल अछि।"

मने-मन हिसाब जोड़ि सहसलाल काका बजला-

"तखन तँ परिवारक खर्च भरिक आमदनी घटि गेलह।"

लोक अपन चोरनुकबा आमदनीक बात चोराकऽ रखैए मुदा जैठाम दुनियाँक सही रूप ठाढ़ अछि तैठाम लोक किए कोनो बात चोराकऽ राखत। की सत्त की फुइस, के नहि बुझैए। बजलौं-

"काका, आमदनी कमलासँ ओते प्रभावित नहि छी, जेते जीविका (रोजगार) केँ नष्ट होइत देखि रहल छी।"

हंसराज जकाँ सहसलाल काका बजला-

"की नष्ट होइत देखि रहल छह?"

बजलौं- "काका, घासक अभावमे जीविका (रोजगार) केँ निच्चाँ उतारि ओइ सीमापर आनि लेलौं अछि जे कहुना गड़ूगर समय खेप जाए, पछाइत बुझल जेतइ।"

सहसलाल काकाकेँ जेना विचार नीक लगलैन तहिना दुनू हाथ उठा बजला- "बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ विचार केलह अछि।"

कान ठाढ़ केने अपने रही जे आरो आगू सहसलाल काका की सभ बजै छैथ, मुदा ओहो अपन मुँह बन्न कऽ लेलैन। बजलौं-

“काका, अहिना जँ साले-साल होइत रहत तखन पारिवारिक जिनगी असथिर केना हएत?”

जवाब दइसँ पहिने सहसलाल काका, श्रृंगारकविक नायिकाक नख-शिख कहियौ आकि शिख-नख, निच्चाँ-सँ-ऊपर आ ऊपर-सँ-निच्चाँ हिया कऽ देखलैन आकि निहारिकऽ से तँ ओ, माने सहसलाल काका, बुझता मुदा जेना ठोर-पर-ठोर चढ़ा भीतरे-भीतर असीरवाद जरूर देलैन। जेना झड़नी खेलेनिहार (गौनिहार) एकटा गीत (मरसिया) समाप्त करैत दोसरकेँ स्थापित करैत कहैए, जे एक मरसिया खतम हुआ है, दोसर शुरू होता है, तेना तँ सहसलाल काका नहि बजला मुदा बजला-

“बौआ जुगे, केम्हर केम्हर आएल छह?”

बजलौं-

“काका, रौदी भाइक हालत बड़ नाजुक भऽ गेलैन अछि, एक तँ दुनू परानी रोगाएले छैथ तैपर तीनू बेटा तेहेन फटीदार भऽ गेलैन जे सभ-सभक ऊपर फेक अपन भार हटौने छैन।”

अपना जनैत रौदी कक्काक दुखद स्थितिक चर्च केने छेलौं मुदा सहसलाल काका बिहुसैत बजला-

“जुगे, बाबा कहने रहैथ जे अपना गाममे कुरीतलाल छेला, जिनकर वंशक परिवार अखन गाममे नहि अछि, हुनका दूटा बेटा छेलैन। भैयारीमे ते मेलो-मिलान रहै छेलैन मुदा दुनू दियादिनीमे भैंसा-भैंसीक कनाइर भीतरे-भीतर चलैत रहैन। एक दोसरकेँ कहबो करैथ जे एक बापक बेटी हएब तँ तोरा दिस घुरिकऽ नहि ताकब। तेकर जवाब दोसरो सएह दैथ।”

पुरना इतिहास सुनि आकि समाजक रूप देखि अपनो मन बिहुँस

गेल। बजलौं-

"काका, हमहूँ दमयन्ती काकीक काजे आएल छेलौं। मुदा किछु ने भेल।"

अपन बातक ऐगला कड़ी पकैड़ सहसलाल काका बजला-

"पहिने बाबाबला बात बुझि लएह, पछाइत तँ हमहूँ छीहे आ तोहूँ छहे।"

अपनो मन ओ विचार सुनैले कान ठाढ़ केने छेलए-हे। आगू बजला-

"दुनू दियादनी टोलमे सभसँ बुतगर जनाना रहबो करैथ। बुतगर ऐ माने मे जे जखन दुनू दियादनी अपनामे झगड़ा करैत तखन दोसरकेँ ओइ भीड़ नहि आबए दैथ, आ जखन दोसर परिवार संग झगड़ा-लड़ाइ होनि तँ दुनू दियादिनी एक बनि दोसरकेँ दाबि दैथ। जइसँ गामक सभ अबिसवासु जनाना दुनूकेँ बुझै छेलैन जइसँ दुनूक पछपोहूक कोन बात जे गपो-सप्प सुनैले गामक कियो ने तैयार रहैन।"

ओना, मन भेल जे पुछिऐन, काका जखन सौंसे टोलक लोकक दुश्मने दुनू दियादनी रहैथ, तखन किए ने सभ आगि-पानि ढाठि देलकैन। मुदा अपने मन कहलक जे जे विचार सहसलाल काका बाजि रहला अछि पहिने तेकर मर्म बुझब तखने ने मरम-जीयम बुझब। बिच्चेमे टोकारा दैत बजलौं-

"काका, अपनेक कथा तँ इतिहाससँ बेसी साहित्य जकाँ मनमे बैस रहल अछि।"

हमर विचारक सह पेब आकि अपन मनक सह पेब सहसलाल काका बजला-

"वएह, माने कुरीतेलालक दुनू पुतोहु, अधडरेरपर सँ माने कुरीतलालक डाँर लगसँ काटि दुनू दियादनी बँटवारा कऽ लेलकैन।"

बाबा मुँहक, माने सहसलाल कक्काक बाबा मुँहक, सुनल विचार अन्त होइते बजलौं-

“काका, एकटा विचार मनमे बड़ी कालसँ घुरिया रहल अछि जे अपने की हलैल गेलौं?”

मनिहारा दोकान जकाँ सहसलाल कक्काक अपनौं मनमे दोकान छैन्हे। तँए पुरजा-पुरजी तकैमे कनी देरी लगबे केलैन। लगबो केना ने करितैन, कोनो कि कनियेँटा दुनियाँ अछि जे लगले सभ किछु नापि लेब आकि भेट जाएत। लगले सुनब जे अमेरिकासँ भारत (खेलमे) जीत गेल आ लगले सुनब जे एते करजा भारत अमेरिकासँ लेलक। जहिना नमहर दोकानदार नमहर सौदाकेँ सरियाकऽ रखैक नीक (नमहर) लुरियो बनौने रहै छैथ तहिना सहसलाल काकाकेँ सेहो छैन्हे। विचार तँ विचारक जहिना ताला छी, तहिना कुंजी सेहो छीहे। जइसँ रंग-रंगक तालो अछि आ रंग-रंगक कुंजीयो तँ जीवनक अछिए। अपन जीवन, माने पारिवारिक जीवन, केँ अँकैत सहसलाल काका बजला- “जुगे, ऐगला जिनगी सेहो कनी धकिया गेल आ अखुनका तँ सहजे तीन मासक मेहनत सोल्होअना मरि गेल।”

अपन विचारानुकूल सहसलाल काका बाजल छला मुदा अपने तँ अखन तक बाल-बोध जकाँ आमक माने आमे बुझै छी मुदा ई बुझबे ने करै छी जे हजारो किस्मक आम जहिना धरतीपर ठाढ़ अछि तहिना हजारो किस्मक नवका आम आगू अबैले सेहो ठाढ़ अछिए। माने ई जे आम जे कोनो अछि, ओ अपन आँठी (बीज) सँ वंशारोपण करैए। जइ आमक आँठी रहल ओइ आमक सोल्होअना रूप-गुण अपनामे नहि उतारि पबैए, केतौ-केतौ किछु बेसियो भऽ जाइए आ केतौ-केतौ कम सेहो भऽ जाइते अछि। जइसँ एक नव फलक (आमक) वृक्ष बनि ठाढ़ भइये रहल अछि। सहसलाल कक्काक बात नीक जकाँ, माने जइ मने सहसलाल काका बाजल छला, नहि बुझि पेलौं। अपन मन ईहो कहए जे

जँ दोहराकऽ पुछिऐन आ बुझि जाथि, माने मानि जाइथ जे खोदिया-खोदियाकऽ परिवारक जानकारी लिअ चाहैए तखन तँ तेसरे बिहंगरा ठाढ़ भऽ जाएत। फेर लगले अपने मन कहलक मनुखक मनुखताक नाप कोनो थर्मामीटरसँ होइए आकि ओकर मनुखपनक दिशासँ होइए। एहनो तँ भइये सकैए जे कोनो परिवारक जानकारी लैत-लैत अपनेसँ कोनो बान्हो-छेक परिवारक खुजि जाए। बजलौं-

"काका, अहीं सभसँ ने हमहूँ सभ सीखब। जहिना बारह बर्खक रौदियाह समय केना बिताएल जाइए, यएह ने मिथिला दर्शन सिखबैए। सभकेँ ने बुझल अछि जे बारह बर्खक रौदीक पछाइत सीताक जन्म भेलैन। तहिना मास दिनक जे पाइनिक बढ़ौत्तरीसँ भऽ रहल अछि, से केना काटब? अखन तक, माने तीस बर्खक उमेर तक, एहेन कुभाँज मौसम कहियो ने भेल छल..!"

हमर बात सुनिते सहसलाल काका बजला- "बौआ जुगे, पहिने अपने जे कहै छेलियह से सुनि लाए, पछाइत तोहर विचार करब।"

एक तँ बैसारीक समय कहुना काटब अछि, तैपर हँसुआ हेरा गेल अछि, एहना स्थितिमे तँ बोले-भरोस ने जीवनक आसव अरिष्ट हएत। मुँहक रूखि एहेन बना लेलौं जे सहसलाल काका बुझि गेला जे सुनैले जुगे कान ठाढ़ केलक अछि। बजला-

"बौआ, जनिते छह जे अपने ओहन खेतिहर किसान छी जे तरकारीक खेतीसँ जुड़ल छी। खेबो करै छी, बेचिकऽ पाइयो उपार्जन करिते छी।"

सहसलाल कक्काक देखल जीवन अछिए। बजलौं-

"हँ, से तँ करिते छी।"

सहसलाल काका बजला-

"पाँच कट्ठा मिरचाइक खेती केने छेलौं, ऐगला तीन मासक आशा

परिवारकेँ छल, ओ नष्ट भऽ गेल।”

बिनु बुझै-गमैबला लोक अपने छीहे, बजलौं-

“कच्चा खेतीपर बिसवासे किए करै छी, काका?”

सहसलाल काका बजला- “बौआ, ओही खेतमे पैछला साल प्रति गाछ, मिरचाइक गाछ, आधा किलो फड़ भेल, ओइ समय माने पैछला साल, प्रति गाछ चालीस रुपैयाक दरसँ भेल रहए, मुदा ऐबेर.!”

बजलौं- “कुभाँज समयमे पड़ि गेलौं.!”

सहसलाल काका बजला-

“अही कुभाँजकेँ ने भाँजपर अनैक अछि।”



शब्द संख्या : 1793, तिथि : 17 जुलाई 2021

कुभाँज समयक भाँजमे

दरबज्जापर सँ आगू बढ़ै दिस मुड़ले रही कि उत्तरसँ छक्कालालकेँ मोटर साइकिलपर अबैत देखलिऐ। नीक जकाँ मुड़बो नहि कएल रही कि छक्कालाल लग्गी भरिपर पहुँच गेल। बिनु प्रणाम-पाती केने बजलौं-

“छक्कालाल, सबेरे-सबेर केतए चललह अछि?”

जेना छक्कालाल व्याकरणक प्रेसी (Precis) चाटिकऽ चीहपर रखने हुअए तहिना बाजल-

“काका, कुभाँज समयक भाँजमे जाइ छी।”

छक्कालालक विचार कोनो भाँजपर चढ़बे ने कएल। कुभाँजक भाँज लगाएब ओते असान अछि.!

जेना जिनगीक बीच बाटपर छक्कालाल तेहेन विचार मनक वनमे फेक देलक जे सुखाएल खढ़मे जहिना कोनो लुत्ती लगि लुतियबए लगैए तहिना मनमे हुअ लगल। असगरे दरबज्जापर बैस छक्कालालक शब्दपर विचार करए लगलौं। जे जेठ मास उच्च कोटिक ताप धरतीमे पैदा करैक शक्ति रखने अछि, तइ समयमे बिनु मौसमक वारिस ओहन भेल जे धरतीपर जीबैबला सभ नीक जकाँ प्रभावित भेला। बजैक क्रममे तँ अनेको रंगक शब्द आ अनेको रंगक शब्द-जाल फेकले जाइए मुदा जीवन तँ जीवन छी। हर मनुक्खकेँ अपन-अपन पारिवारिक जीवन छै, जेकरा संग लऽ चलैक भार सभक ऊपरमे अछिए।

छक्कालाल जाइतिक बन्धनकेँ ढील करैत माछ-मखानक कारोबारी अछि। गामक सोल्हो पोखैर वएह जोतैए। गामक सोल्होटा पोखैरमे छहटा सैरात (सरकारी) आ दसटा गामक किसानक पोखैर अछि। लगले फेर अपने मन कहलक जे छक्कालाल कोनो काजे केतौ जाइत रहल हुअए। गप-सप्पमे बेसी समय लगौने जँ काज बाधित हएत तइसँ तँ जिनगी बाधित हएत। ओना, कहब जे यात्रापर, माने कोनो काजे केतौ जाइकाल, टोकलासँ टोकौन लगि जाइए, से हमरा दुनू गोरेमे नहि अछि। हमहूँ केतौ कोनो काजे जाइ छी आ रस्तामे छक्कालाल भेटैए तँ पुछिये लइए जे काका केतए जाइ छी? एहनो तँ सम्भव अछिए जे जइ काजे अहाँ केतौ जा रहल छी आ रस्तामे कियो टोकि पुछलैन आ जँ बेवहारिक बाट, माने जिनगीसँ जुड़ल रस्ता, देखा देलैन तँ तेमहर ने जाएब। घरे-घर आ परिवारे-परिवार सभ तुलसीक करहा कहियौ आकि तुलसी-छनका, पीबैत आबियो रहलौं अछि आ अखनो पीबै छी, सभकेँ बुझले अछि जे फल्लाँ-फल्लाँ वस्तु करहामे पड़ैए। मुदा केहेन-रोगक केहेन मात्रा रोग-रोधीक हएत से बुझले ने अछि, तखन ओ करहा केहेन करहा बनैए सेहो तँ भोगिते छी।

बेरुपहर पाँच बजे छक्कालाल पहुँचल। गामसँ बाहर जेबाकाल जेहेन वस्त्र पहीरि लोक निकलैए तेहने वस्त्राभूषित छक्कालाल छल। चटसारक खेलाड़ी छक्कालाल अछिए। पहिनहि कहलौं जे छहटा सरकारी पोखैर आ दसटा गामक किसानक पोखैर छक्कालालक जमीन्दारीमे अछिए। तँए छक्कालाल समाजसँ सरकार, माने सरकारी कार्यालय आ सरकारसँ समाजक बीच प्रतिदिन एक टहलान मारिये दइए। ओना, मोटर साइकिलक सवारी रहने चारि बजे भोरसँ दस बजे राति धरि छक्कालाल दुनियादारीमे लगबैए। ताश आ सतरंजसँ अपनाकेँ परहेज रखने अछि। कहब जे छक्कालाल सौंसे दुनियाँ टहलान मारनिहार भोरक वसन्ती हवा ओछाइनपर किए ने लइए, जेहेन परिवेश नवयुवकक बीच बनल अछि?

छक्कालालमे एहेन रोग नहि लगैक कारण अछि जे काजोक तँ अपन महत्व अछिए। मानि लिअ, एक घन्टाक समय घड़ी सेहो कहैए मुदा काज नहि कहैए, सेहो बात नहियेँ अछि। जेना अहाँ कोनो काज करै छी, ओइ काजक जे प्रक्रिया, बेवहारिक क्रिया, अछि ओकर समुचित, समुचित भेल समगम, ढंगसँ करैत आगू बढ़ब तँ ओहूठाम घन्टा भरिक (माने बीतल एक घन्टाक) दुनियाँ सेहो आगूमे एबे करैए।

ओना, छक्कालालक ओढ़ब-पहिरबपर विचारे ने हेबा चाही, तहूमे बहुधन्धी लोक छीहे। करवन कथा-कुटुमैतीक घटक बनि घटकैती करत आ करवन मछवार बनि कुरता निकालि कुरतेकेँ खोंचैर बना ओहीमे रोहू माछ तेनाकऽ कन्हेठने औत जे अहाँक बिसवास माछ-कौछपर जेबे ने करत। ई बात सभकेँ बुझल छैन्हे ने जे कौछेपर धरती, माने पृथ्वी, ठाढ़ अछि, मुदा अपने केतए ठाढ़ छी से बुझले ने रहैए। ओना, जखनसँ छक्कालालक मुँहक बात ‘कुभाँज समयक भाँजमे जा रहल छी’ सुनलौं तखनेसँ मनमे ढेरो रंगक विचारक प्रश्न उठिये गेल छल तँए हीयमे सेहो गड़ले छल जे जखने छक्कालाल भेटत तखने विचारकेँ धो-बना मनकेँ बुझा लेब। मुदा अपने मन ईहो कहए जे जखन शब्दक सफाइ करैक समय बँचले अछि तखन एते धड़फड़ी मनमे किए करब। किए ने निचेनसँ छक्कालालक अपने मुहेँ सुनि लेब। ओ एहेन बात किए बाजल से तँ अपने मनोभावे ने बाजत। अपना एते कोन जरूरत अछि जे पुरना भगवानकेँ हाथमे फाइब-जी मोबाइल धड़ा रोबोट (रोबो) बना देबैन। आगूएसँ बजलौं- “सभ ठीक-ठाक चलि रहल छह किने, छक्कालाल?”

अपन भीतरिया विचारकेँ भीतरेमे रखि छक्कालाल बाजल- “हँ, सभ ठीके-ठाक अछि।”

छक्कालालक विचार सुनि मनमे भेल जे छक्कालाल समयकेँ नहि ठेलए देलकैन, समयकेँ ठेलि देलकैन। ओना, बजन्ता लोक छक्कालाल अछिए। तहूमे बीचमे कनी खाली समय भेट गेलइ, बाजल- “मनचित

काका, की कहब.! महीना दिनक जे समय रहल ओ नाकोदम कऽ देलक।”

‘नाकोदम’ सुनि अपनो विचार ओम्हरे बहि गेल। बजलौं-

“की नाकोदम?”

छक्कालाल बाजल-

“जहिना ऊपरसँ मेघ झहरैए तहिना धार-धूर सभ फुला-फुला, फड़ि-फड़ि गामक उजार करबे करैए। एक तँ ओहिना पाइनिक आमदनी छी, करवन पानिमे दहाएत आकि करवन पानिसँ छनाएत, तेकर कोनो ठीक-ठाक थोड़े अछि।”

सामूहिक रूपमे तँ छक्कालालक विचार सोल्होअना सत् बुझि पड़ल मुदा अपन जीवनक की सत् अछि, से तँ छक्कालाल बजबे ने कएल। बजलौं-

“कारोबारक की स्थिति छह?”

जहिना बेसी रौद लगला पछाइत, शुरूक साँझमे पानिक आशा पेबिते सरद-गरम बोखारकेँ निमंत्रण देबक जगह भेल, तहिना बुझि पड़ए लगल जे छक्कालालकेँ सेहो सरद-गरम पकैड़ रहल अछि। एहनो तँ सम्भव अछिए जे बीचमे, माने अखुनका परिस्थितिक बीचमे, हमर कोनो खगता नहि होइ। ‘कारोबार’ सुनि छक्कालालक मनमे आश सेहो आएल। जइसँ मचकीपर चढ़ल झुलनिहारकेँ धरती-अकासक बीच समगम सेहो होइए तइ समय जेहेन मनोभाव रहैए तहिना छक्कालालकेँ अपन जीवनक धरती-अकाशक बीच सेहो भेल। छक्कालाल बाजल-

“मनचित काका, अहाँ लग झूठ ने कहियो बजलौं हेन आ ने बाजब। दुनियाँदारी अपना जगहपर अछि।”

जखन छक्कालाल अपने मुहसँ एहेन बात बाजि रहल अछि जे अहाँ लग झूठ कहियो ने बजलौं ने बाजब तखन अविसवासो करब उचित नहि

हएत। कहब जे जँ मुँहक बातकेँ बिसवास करए लगब तखन तँ दुनियाँमे जेते जाहिल-जुल्मी अछि ओ अपने मुहेँ पाक-साफ भऽ जाएत। मुदा से नहि, ऐठाम मात्र छक्कालालक सम्बन्धमे अछि। सह दैत बजलौं-

"छक्कालाल, करवनो काल तोहूँ भसि जाइ छह। जहिना कोनो मौगी वा मौगियाह पुरुख कोनो बात बजैसँ पहिने तीन बेर सप्पत खाइए तहिना तोहूँ खाइ छह। गाममे जँ केकरोपर बिसवास अछि तँ सभसँ बेसी तोरापर अछि। तीन बजे भोरमे जखन उठै छी तखन सड़कपर सभसँ पहिने तोरे देखै छिअ।"

अपन बातसँ छक्कालालक विचारपर की प्रभाव पड़ल से तँ छक्केलाल बुझत मुदा जेना हीयमे कोनो विचार गड़ि गेने हृदयक वाण बनि जाइए तहिना छक्कालालकेँ भेल। बाजल-

"काका, अहाँ देखिते छी जे गामक सोल्होटा पोखैर जोतै छी। माछो पोसै छी आ मखानो तँ उपजैबिते छी।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"से की कोनो हमहींटा देखै छिअ आकि गामक सभ देखै छह।"

जेना-जेना केकरो मनमे निरभिकता अबैए तेना-तेना निचोड़ल विचार सेहो जगिते अछि। छक्कोलालकेँ तहिना भेल। बाजल-

"काका, माछक कारोबारीकेँ तीन बजे भोरसँ छह बजे भिनसर धरि वसन्त ऋतु छी। पानिसँ लऽ कऽ मन्डी तक पहुँचबैक समय छी। तैठाम जँ हम गामक आन-आन युवकक सेहन्ता करब से निमहत।"

छक्कालालक विचार सुनि अपनो मन मानि गेल जे सचमुच छक्कालाल अपन समयक उपयोग करैए। भेल तँ एतबे ने जे अपन समयक उपयोग करैक जेहेन लूरि रहत तेहेन जीवन पाएब। मुदा लगले अपने मन कहए लगल जे छक्कालाल गामक ओहन युवक तँ अछिए जे सभ छक्का-पंजामे रहिते अछि, जइसँ गाममे एते फसाद होइए।

जहिना एक्के आलमारीमे सभ रंगक किताब पतियानीमे सैंतल रहैए तहिना अपन मनक विचारकेँ सैंति बजलौं-

“छक्कालाल, गामक लोक तँ सवा मासक बर्खामे पड़ि तेना लीड़ी-बीड़ी भऽ रहला अछि जे सभ अपने बेथे नाकोदम छैथ। तोहर की स्थिति छह?”

छक्कालालक अपन स्थिति एहेन भौकमे पड़ि गेल अछि जे धारक मोइनिक पानि जकाँ चारू भाग तँ घुमैए मुदा आगू मुहेँ ससरिये ने रहल अछि। छक्कालाल बाजल-

“काका, जहिया पहिल बरखा भेल तहिया मन तेते हरिया गेल जे खुशीसँ खुशपन आबि गेल। मुदा जेना-जेना बरखा बढ़ैत गेल तेना-तेना खुशी कमैत गेल आ चिन्ता बढ़ैत गेल मुदा आशामे कमी नहि आएल।”

अपना विचारे छक्कालाल बाजि रहल छल मुदा केतौ-केतौ अपनो बुझैमे भेद भऽ जाइ छल। भेद होइक कारण छल कूट शब्दक प्रयोग। कुट शब्दक दू दिशिया अर्थ होइए। पहिल होइए ठकब आ दोसर होइए पहाड़ बनाएब। स्पष्ट रूपमे बजलौं-

“बौआ छक्का, बजनिहारक गुण छी जे अपन विचार अपने जकाँ सुननिहारो बुझए।”

छक्कालाल बुझि गेल। बाजल-

“काका, बीतल डेढ़ मासक बीचक सभ काज उघारि कऽ कहि दइ छी। गप-सप्पमे लोक छअकेँ पाँच आ पाँचकेँ छअ कहि छक्का-पंजा करैए मुदा काजक अपन जीवनक पैमाना छै, जइक बीचमे झूठक समावेश नहि अछि।”

छक्कालालक विचार सुनि मन मानि गेल जे एहेन विचार लोककेँ अपन जीवन दइ छइ। ओना, छक्कालालक अपन जीवनक अनेको रूप अछि, से अछि दुनियाँकेँ देखबइयोले आ कहिकऽ बुझबैयोले। मुदा जेहेन

विचार छक्कालाल बाजल अछि ओ निश्चित रूपसँ कोनो कर्मनिष्टक विचार छी। एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे छक्कालालोक ओहन रूप होइ। बजलौं-

"छक्कालाल, मनमे जे बजैक वेग उठए तँ ओकरा बाजिकऽ शान्त कऽ ली, नहि तँ वएह वेग जनमारा सेहो भऽ जाइए।"

छक्कालाल बाजल-

"काका, की कहब! बरखा शुरू भेला चारि दिनक पछाइत पोखैरमे कटनिया लगि गेल। बुझले अछि जे सोलहटा पोखैर अपने जोतै छी। चारिम दिन, माने बरखा शुरू होइसँ चारिम दिनक बर्खाक पछाइत, सँ सुतब (आराम करब) हराम भऽ गेल। भरि-भरि राति दुनू बापूत, ऐ पोखैरसँ ओइ पोखैर दौड़-बरहा करिते रहलौं। तैयो दूटा पोखरिक माछ उजहि गेल। पछाइत उजाहिक ढबाहि लगि गेल आ उजहैत-उजहैत बारहटा पोखरिक माछ उजहि गेल।"

छक्कालालक बात सुनि मने-मन हिसाब लगेलौं तँ बुझि पड़ल जे बारहअना, माने तीन चौथाइ, पोखरिक सम्पैत नष्ट भऽ गेलइ। जइसँ मनमे कचोट आएल, मुदा उपाइये की अछि। शान्त सम्मत विचार दैत बजलौं-

"छक्कालाल! दुनियाँमे किछु अछि, किछु ने अछि। कहैले सभ किछु अछि मुदा अछि बहुरूपिया, ने अपने थीर रहत आ ने दोसरकेँ रहए दइए। जीवन छी, अहिना होइत आबि रहल अछि।"

कलुषित मने छक्कालाल बाजल-

"काका, अहाँसँ लाथ की करब। सोलहटा पोखैरमे दूटा गामक किसानक पोखैर आ दूटा सैरातक पोखैरमे माछ बँचल अछि बाँकी सभ बेरवाद भऽ गेल.!"

अपने तँ जीवनमे कहियो माछ-मखानक कारोबार केने नहि छी,

तँए अनुभुआर छीहे। बजलौं-

“आब की उपाय करबह?”

जेना छक्कालालक ओहने धाँगल जीवन होइ तहिना बाजल-

“काका, जानियेँकऽ ते पाइनिक कारोबार करै छी। आइये नहि, सभ दिनसँ अपन मिथिला बाढ़ि-रौदीक इलाका रहल अछि, तैठाम जहिना रौदी खतरा अछि तहिना दाही खतरा सेहो अछिए। तही बीचमे ने अपनो चलैक अछि आ अपन कारोबारकेँ सेहो चलबैक अछि।”

छक्कालालक विचार नीक लागल। बजलौं-

“हँ, से तँ चलैयेक अछि।”

छक्कालाल बाजल-

“सैरातबला पोखैरकेँ तँ सुढ़िया लेब। चारिटा पोखैर बँचल अछि, तइसँ अपनो गुजर कऽ लेब। मुदा गमैया पोखरिक झमेल अछि। किए तँ रौदी-दाहीक जिम्मा अपने ऊपर नेने छी।”

मन कहलक अनेरे किए छक्कालालक ओहन क्रूकेँ निकालब जइसँ बेचाराकेँ परेशानी बढ़त। बजलौं-

“नीक जकाँ सभ काज सलटिया जेतह किने?”

हँसैत छक्कालाल बाजल-

“भरि दिन मोटर साइकिल ओहिना दौड़बै छी।”



शब्द संख्या : 1671, तिथि : 21 जुलाई 2021

देखल गाम

मवेशी डॉक्टर ऐठामसँ अबैत रही, सुदर्शनजीक घरक सीके जहाँ एलौं कि सुदर्शनजीकेँ दरबज्जाक आगूमे मन विधुएने ठाढ़ देखलयैन। छह मासक जेठाइ-छोटाइ दुनू गोरेमे अछि। अनका जकाँ मुँह गाड़िकऽ चलब आकि केम्हरो ताकब नहि, एहेन आदत कहियो ने रहल आ ने अखनो अछि। भाय, जब सामाजिक जीव छी तखन दोसराकेँ देखि अपन मुँह किए नुका लेब। तँए सुदर्शनजी पर नजैर पड़ि गेल। कहब जे जखन हुनका घर लग छेलिऐन तखन पहिने वएह ने मुँह उठा टोकितैथ? मुदा अपना संग दोसर बात अछि। ओ अछि सुदर्शनजी सँ छह मास पछातिक जन्म। तँए अपनो तँ उचित बनिते अछि जे अपनासँ पैघ उमेरबलाकेँ आदर करिऐन। ओना, तैसंग दोसरो बात अछि, ओ अछि जहियासँ बरखा शुरू भेल तहियासँ भेँट-घाँट नहि भेला अछि। सभ जनिते छी जे बरसातक समयमे पानिमे डुमल घास गाएकेँ खुआएब रोगकेँ निमंत्रण देब छी। मुदा परिस्थितियो तँ एहेन बनियेँ गेल अछि जे बिना डुमल घास खुआएब कठिन भइये गेल अछि, किए तँ गामक ऊपर-निच्चाँ सभ खेत डुमि गेल अछि। गाएकेँ दवाइयो देब आ ओकर तर्दुतो करब अछिए तैबीच मे सुदर्शनजी भेँट भेला। रस्तेपर सँ बजलौं-

“सुदर्शनजी, की समाचार?”

बेथासँ बेथाएल मन सुदर्शनजीक छेलैन्हे, तँए मनमे एलैन जे ठाढ़े-ठाढ़ कुशल-समाचार केलासँ थोड़े कुशल जीवन भेटैए। ओ तँ भेटैए

जीवनकेँ मुड़ी पकैड़ रगड़ने। असथिर चित्ते सुदर्शनजी बजला- “ठाढ़े-ठाढ़ गप-सप्प करब से नीक नहि, दरबज्जेपर आऊ गपो-सप्प करब आ चाहो पीब।”

सुदर्शनजीक जीवन दर्शन एकाएक आँखिक आगूमे चमैक उठल, मुदा सामाजिकतो तँ सामाजिकता छी, केना कहितिऐन जे अहाँसँ कुशलो-समाचार करैक समय नहि अछि, ओना अपन मन ईहो कहए जे मनुक्खक सरदी-खाँसी आ माल-जालकेँ सरदीसँ ढेँसब, कोनो रोग थोड़े छी ओ तँ मसालाक खेल छी। मसाला संग ओकरा सिलौटपर पीस पीब लिअ। रोग पड़ा गेल। सुदर्शनजी अपनो बैसला आ हमहूँ बैसलौं, तैसंग सुदर्शनजीक पत्नी सेहो आबि गेली। पत्नीकेँ देखिते सुदर्शनजी दोसर कुरसी, माने पत्नीक मोटाइक अनुकूल कुरसी रहैन, आनए भीतर गेला तइ बीचमे गजगामिनी (सुदर्शनजीक पत्नी) सँ गप-सप्प करैक समय भेट गेल। बजलौं-

“भाइयो सहाएब अपन हिस्साक देह अहींकेँ दऽ देलैन?”

हमरा बातसँ गजगामिनीकेँ अनका जकाँ क्रोध नहि उठलैन। अपनेपर अपसोच करैत गजगामिनी बजली-

“शुरूमे जखन एकछड़ा (एकहरा) देह छल तखन दोहारावाली सभकेँ देखि सिहन्ता लगै छल जे केते सुन्नर देह फल्लीकेँ छैन। एकदम हृष्ट-पुष्ट, गबछल महींस जकाँ चिक्कन-चुनमुन। मनक सिहन्ता मेटबैले अनधुन खाए-पीबए लगलौं। जहिना अहाँक भाए सहाएब अनधुन कमाई छला तहिना अपने अनधुन खाइ छेलौं। जेना-जेना खोरिश बढ़ल तेना-तेना लत्ती जकाँ देह चतरए लगल। जखन चतरैत-चतरैत सजमनि-कदीमाक लत्ती जकाँ बेसमहार हुअ लगल, तखन पथ-परहेज शुरू केलौं मुदा फल देखिये रहल छी।”

गजगामिनीक विचार सुनि राजाक मंत्री जकाँ सुर-मे-सुर मिलबैत बजलौं- “केते दिन भगवानकेँ हाथ उठा कहने हेबैन तेकर ठेकान नहि जे

दस टाकाक देह हमरो बना दिअ, से नइ ने सुनलैन।"

सत्तैर बर्खक गजगामिनीक अपन बौद्धिक शक्ति एते बढ़िये गेल छेलैन जे अपन व्यंग्यकेँ व्यंग्य नहि बुझि जीवनक सत्य बुझलैन। गजगामिनी बजली-

"जहिना दुनियाँ देखै-सुनै आ परैख चलैक अछि तहिना ने अपन जीवनो, शरीरो आ मनो करै-धड़ैक अछिए, तइमे जरूर केतौ चूक भेल।"

गजगामिनी की बजली से नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। तँए विचारकेँ बिटियबै दुआरे प्रश्न उठबैत बजलौं- "से की?"

अपने तँ ओहन जिज्ञासासँ बाजल रही जे गजगामिनी बुझती जे बिनु बुझल प्रश्न केलैन अछि मुदा से भेल नहि। गजगामिनी बुझि गेली जे रीतलाल जे बुझए चाहि रहला अछि से बुझले छैन। सामंजस करैत गजगामिनी बजली-

"रीतलाल बौआ, जहिना अहाँ हमर चतरल-पसरल देहकेँ नीक बुझै छी, माने मोटापाकेँ, तहिना हमहूँ अहाँक समटल-सोंटल देहकेँ नीक, माने हल्लुक-फल्लुक देह, बुझै छी।"

अपन मनक भावकेँ गजगामिनीकेँ पकड़ैत देखि गैंची माछ जकाँ सुरकुनिया काटि बजलौं-

"यएह तँ दुनियाँक रीत छी, जे लेबाकाल लोकक जे भाव रहैए ओ लेलो पछाइत आ देबोकाल बदैल जाइए।"

हमर भाव गजगामिनी नहि बुझि पेली, तँए बौआ गेली। अपने मन गजगामिनीक कहैन जे नान्हिटा विचार अछि, केना पुछिऐन जे 'से की?', तारतम्य करिते रहैथ कि सुदर्शनजी कुरसी नेने पहुँच बजला-

"अनेरे अहाँ किए चाह बनबै पाछू बरदाएब, तइसँ नीक जे सभ किछु, माने चाह बनबैबला स्वचालित यंत्रक संग वस्तु सेहो, नेने आउ जे गपो-सप्प करब आ चाहो बनाएब।"

अपन जानकेँ छुटब देखि माने निरुत्तरक स्थिति दुआरे गजगामिनी ओहिना फुर-फुरा कऽ विदा भेली जहिना कोनो पतिव्रत पत्नी पतिक आदेशक पालन करैक दिशामे आगू बढ़ैत अछि। जाबे सुदर्शनजी कुर्सीक गर अँटकारि लगौलैन ताबे गजगामिनी सभ किछु लऽ कऽ माने चाहक समचा, पहुँच गेली। अपने मशीन देखने नहि रही; आइ बनौल चाहो पीब। तँए मनमे कनी-कनी गुदगुदी उठबे करैत रहए।

जाबे चाह बनल ताबे सुदर्शनजीक मनमे एकटा विचार उठि गेलैन। विचार ई जे अपन जे मौजूद स्थिति अछि ओ हारल जिनगीक लक्षण भेल आकि जीतल जिनगीक। की अपन बात रीतलालकेँ कहि दिऐन? मनमे प्रश्न उठिते नजैर आगू बढ़लैन। बढ़िते देखलैन जे बाजियो कऽ तँ समाधान नहियेँ हएत। समय तँ जीवनकेँ संग नेने आगू बढ़ि गेल अछि। एक तँ ओहुना देखिते छी जे समाज टुटैत-टुटैत एते टुकड़ी बनि गेल अछि जे एक धारामे बहब आकि बहाएब कठिन भइये गेल अछि। बहत्तैर सालक सुदर्शनजीक विचारमे एते तँ आबिये गेल छैन जे नीक जकाँ अपन जीवनकेँ मानि रहला अछि जे शेष जीवन समाजक बीच समाज बनि केना आगूक जीवन चलत, बस एतबे ने विचारैक अछि। आन सभ मानैथ वा नहि मानैथ मुदा जानि एते जरूर रहला अछि जे जहिना बच्चाक प्रतिपालन माता-पिताक दायित्व बनैए तहिना माता-पिताक, वृद्धावस्थाक संग रोगक अवस्थाक प्रतिपालन, बेटा-बेटीक (ऐठाम बेटी माने पुतोहु) दायित्व सेहो बनिते अछि। मशीनक जिज्ञासा करैत बजलौं-

“सुदर्शनजी, एते तँ अहाँसँ समाजकेँ प्राप्त हेबे करत जे नव-नव जीवनोपयोगी अविष्कारक खोज-भाँज लगबे करतैन।”

अपना जनैत सुदर्शनजीक शेष जीवनक उपयोगिता दिस नजैर बढ़ौलिऐन, मुदा अपन कारोबारकेँ नष्ट होइत देखि सुदर्शनजीक मन विचलित भइये गेल छैन।

ओना, सुदर्शनजीक अपनो सोचनशक्ति एते प्रवल भइये गेल छैन जे जीवन जइ दिशामे बहि गेल रहैए ओकरा दोसर दिशा बढ़बैमे टूट-फाट हेबे करैए।

चाह बनल, अपने हाथे सुदर्शनजी बँटलैन। पहिल बेर चाह मुँहमे लेलौं कि भेल जे सुदर्शनजीकेँ पुछऐन जे गाम नीक लगैए। ओना, ऐठाम नीक लागबक दुनू माने अछि, पहिल जे गाम समयानुकूल बनल अछि वा नहि, दोसर ईहो तँ अछिए जे बाहर रहनिहार, माने शहर-बाजारमे रहनिहारकेँ जिनका जीवनक आवश्यकता पूर्ति होइक साधन मौजूद छैन, ओइ साधनसँ विहीन गाममे रहब। संयोग नीक बनल। सुदर्शनजी अपने बजला-

"रीतलाल, गाम कि आब ओ गाम रहल।"

सुदर्शनजीक विचार सुनि मन औना गेल। औना ई गेल जे सुदर्शनजी की बजला से भाँजेपर ने चढ़ल। ओ गाम गाम नहि रहल तँ ओइसँ बदैल केते नीक बनल आकि अधला बनल, से खोलिकऽ बजबे ने केलाह। सतरंगा साग जहिना अपने ओझराएल-पोझराएल रहैए आ तैपर सँ दू-चारि हाथ लगौलासँ आरो ओझरा जाइए तहिना ओझराएल विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

"ऐँ यौ सुदर्शनजी! जिनगी, कर्मक जिनगी बीतल बाहरमे आ बुढ़ाड़ी बितबए एलौं गाममे, तैबीचक जे सम्बन्ध अछि ओ तँ...।"

विचारकेँ ऐ दुआरे कटारि लग जा कऽ रोकि देलौं जे सुदर्शनजी अपन जीवनानुभवसँ की अनुभव केलैन अछि। ओना, एक्कैसम बर्खक अवस्थामे सुदर्शनजी इंजीनियर भऽ गामसँ निकलला, आ आइ चारि साल पहिने माने अड़सैठ बर्खक अवस्थामे गाम एला अछि। जे गाम सुदर्शनजीकेँ इंजीनियर बना खड़ा केलकैन, ओइ गाम ले सुदर्शनजी की सभ केलैन। हुनको बाप-पुरुखाक तँ यएह गाम छिऐन। जहिना मुड़ी छीप वा छोपि तम्मासँ सिदहाक चाउर नापल जाइए वा तौलल जाइए

तहिना मुड़ी छोपि सुदर्शनजी बजला- “गामक आकर्षण एते आकर्षित केलक जे दुनियाँ बीरान-बीरान जकाँ बुझि पड़ि रहल अछि, तँए गामेमे रहब कैं नीक बुझि एलौं अछि।”

बजैक क्रममे सुदर्शनजी अलंकारिक शैलीमे नीक बात बाजि गेला मुदा सत्यकैं छिपा लेलैन। छिपा ई लेलैन जे नोकरी जीवनमे अपनाकैं सामाजिक लोक बनि समाजसेवाक वाना सेहो पकड़लैन। जवाबदेहीक पद भेटल रहैन, जइसँ तीन कोसीमे, माने तीन कोसक बीचक गाममे, चालिस-पचास गोरेकैं नोकरी दियौलैन। समाजक बीच वाहवाही सोभाविके भेलैन। कम पढ़ल-लिखल लोकक समाज, तैठाम सुदर्शनजी इंजीनियर भेला। नोकरीक क्रममे सुदर्शनजी अपन पहुँच प्रशासनक भीतर तक बना लेलैन। रंग-रंगक एन.जी.ओ. चलिते अछि। अपन परिवारक सदस्यक नामे दर्जनो एन.जी.ओ. कागजेपर चलबै छैथ। जइसँ अनधुन आमदनी भेने बेटा-बेटीकैं नीक जकाँ पढ़ौलैन-लिखौलैन। आजुक एहेन परिवेशो बनियेँ गेल अछि जे मातृभूमिक, (जन्मभूमिक) गीत गौनिहारो दोसरे देशमे रहए चाहि रहला अछि। गाम गाममे एहेन लसैर पसरिये गेल अछि जे बिनु पढ़लो-लिखल आ अकुशलो लोकक उजाहि विदेशक लेल भइये गेल अछि।

सुदर्शनजीक तीनू बेटा-बेटी, पुतोहु-जमाइक संग दोसरे-दोसरे देशमे रहै छैन। जाबे नोकरीमे छला ताबे तक बेकारीक अनुभव नहि भेलैन मुदा सेवा निवृत्तिक पछाइत ने कियो देख-भाल (ताक-हेर) करैबला रहलैन आ ने एकठाम बैस गप-सप्प करैबला। तँए गाम आबि सामाजिक जीवन जीबए चाहि रहला अछि। पुछलयैन- “सुदर्शनजी, गामक की आकर्षण भेल आ दुनियाँक की विकर्षण?”

प्रश्न सुनि सुदर्शनजी थकथका गेला। जेना मन मानि रहल होनि जे जन्मभूमियेँ कर्मभूमि छी आ कर्मभूमियेँ जन्मभूमि। मुदा से बजला नहि। अपन विचार होइत रहए जे पुछिऐन- सुदर्शनजी, हाथमे काज कोन रहि

गेल अछि जेकरा पकैड़ चिड़ै-चुनमुनीक पाँखि जकाँ हाथ पसारि अकासमे उड़ब, मुदा ईहो तँ बुझब छेलए-हे जे मनुक्ख केते दूर तक झूठ बजैए आ तेकरा पछाइत झूठकेँ झूठ बुझि बाजब बन्न करैए। मुदा प्रश्न तँ जटिल अछिए। जाधैर एकोटा अबोध रहत ताधैर दोसर ठकबे करत। एकाएक मन घोराए लगल। बजलौं-

"सुदर्शनजी, आगूक जिनगीक की योजना विचारे छी?"

जहिना ठेही उतरने मन हल्लुक भऽ जाइए तहिना सुदर्शनजीकेँ सेहो भेलैन जइसँ बजैक उत्साह जगलैन। बजला-

"रीतलाल, अपन अरजल दस कट्ठा खेत अछि। पैछला जमाक जे छल कि अछि ओ परिवार जानए।"

परिवारपर नजैर पड़िते मनमे इमान मान बनि जगि गेलैन। जइसँ एहेन बात सुदर्शनजी सन पाइचिन्ह लोकक मनमे जगलैन। मनमे इमान उठि गेलैन जे भैयारी हुअ कि परिवार, जखन हम अपन हाथक काज करैक ठौर पाबि गेलौं, तखन जे परिवार गाममे खेतपर ठाढ़ छैथ, हुनका हाथक काजकेँ खेत-बाँटि वा बेचि, छोट बना देब ई कहियो उचित नहि भऽ सकैए। मनुक्ख पैरक बलेँ ठाढ़ होइए मुदा आगू तँ हाथे आ बुधिये बलेँ चलैए। एकाएक मनमे सुदर्शनजीक प्रति सिनेह उमैड़ पड़ल। बजलौं- "केना अपन अरजल जमीन छी?"

जहिना अतीतक गान-गाथा मनकेँ हिलोरि आकर्षित करैए तहिना सुदर्शनजीकेँ सेहो भेलैन। बजला-

"अहूँकेँ बुझले अछि रीतलाल, पिताजी जे गृहस्ती जीवन धारण केने छला, जखन नोकरी भेल, आ पहिल खेप गाम एलौं आ पिताजीकेँ गोड़ लगला बाद पुछलयैन 'अपनेकेँ की चाही?', तँ जहिना सभ अपन मनोनुकूल चाह रखैए तहिना पिताजी कहलैन, 'दस कट्ठा चौमास नहि अछि, माने परिवारमे नहि अछि, जाबे से नहि अछि ताबे किसानी जीवन

खोर अछि।' पिताजीक जिज्ञासा देखि कहलयैन, 'अहाँ खेत भँजिया लिअ, पाइ हम दऽ देब।' सएह भेल पिताजीसँ मुक्ति।"

ओना, मनमे आरो केते प्रश्न उठल मुदा से सभ नहि। बजलौं-

"ऐ बेरक समय जे भऽ गेल अछि ओ तँ जनमारा भऽ गेल अछि। जान बाँचल अछि किने?"

अपन मनक विचारक प्रयोग सुदर्शनजी ओही दसो कट्ठा जमीनमे देश भरिक फल-फलहरी संग्रह कऽ लगौने छलाह। आइ तक ओ जमीन भीठ, माने ऊँचरस, छल मुदा गाम-गाम जे रोड-सड़क बनल तइसँ ओ जमीन नीचरस बनि गेल। डेढ़ माससँ सभक माने गाछ-बिरीछक, जड़िमे पानि लगल रहने, एकाएकी सुखब शुरू भेल, आ सोल्होअना सुखि गेलैन।

ओना, देखा-देखी दुनियाँ सेहो चलिते अछि, गाममे सुदर्शनजीए टा एहेन नहि छैथ, गामक तीन-चौंथाइसँ ऊपर गाछ-बिरीछ सेहो सुखिये गेल अछि। ..हँसैत सुदर्शनजी बजला- "जान बँचल अछि जहान अरैज लेब।"



शब्द संख्या : 1737, तिथि : 25 जुलाई 2021

अपना ले

दू माससँ लाल भाय भेँट नहि भेल छला तँए मन कछमछा रहल छल जे करवन भेँट हेता, मुदा काजक अँटकार नहि पेब मन शान्त भऽ जाइ छल। काजक अँटकार भेल, ओहन समय जइ समय दुनू गोरेक एक काजक समय रहल। ऐठाम एहेन भ्रम नहि हुअए जे अपन दैनिक जे शारीरिक नित्य-कर्म अछि ओइ समयक मिलान। ओ माने अपन शारीरिक कर्म व्यक्तिगत भेल, किए तँ ओ देह-देहक छी। वैचारिक वा सामाजिक क्रिया जे अछि ओइ समयक अँटकार। मन कछमछाइक कारण छल जे दू माससँ, माने जहियासँ बरखा, कुसमयक बरखा, शुरू भेल तहियेसँ लाल भायसँ गप-सप्प-कुशल-समाचार नहि भऽ सकल अछि। ओना, सत्तैर सालक लाल भायकेँ हमरासँ मदतिये की हेतैन, अपनामे ओ दम थोड़े अछि जे लाल भायमे छैन, तरवन मदतिक आशे की। मुदा सामाजिकतो तँ सामाजिकता छीहे, केतबो समाज तहस-नहस किए ने भेल अछि, मुदा अखनो तँ एहेन जीवन्तता अछिए जे सभकेँ सभ पुछनिहार-कहनिहार छथिए जे 'भाय, की हाल-चाल?' आ कहितो तँ छथिए जे एना करू कि ओना करू। जखन हाल-चाल सभक-सभ जनैले तैयार सदिकाल रहिते छैथ तखन एते विषमता किए अछि सेहो तँ विचारणीय अछिए।

लाल भाइक असल नाम मोतीलाल छिऐन, मुदा भैयारीक कोन बात जे तइसँ ऊपरो आ निच्चोँक खाड़ी, माने भेल पितृतुल्य सम्बन्ध आ

पुत्रतुल्य सम्बन्ध, सभटा एक्के रंग छैन। जहिना लाल भाय पितृतुल्य तहिना लाल भाय पुत्र-पौत्रतुल्य सभक सम्बोधनमे लाले भाय छैथ। मन कछमछाइ छल, माने लाल भायसँ भेँट करैले, किए तँ अपने मन अपनाकेँ धिक्कारि रहल छल जे जखन अपना सन जवानक ई गति अछि, माने समयक चलैत दुरगैत , तखन चारिमपनक लाल भाइक की स्थिति हेतैन। ओना, मनमे ईहो होइ छल जे जहिना अपने अपना हाथक काज वाधित भेल अछि, माने छिनाएल अछि, तहिना ने लालो भायकेँ भेल हेतैन, मुदा लगले मनमे ईहो हुअए जे असथिर समयक जे जीवन छल, माने कुसमयमे बरखा भेने मौसमक जे दुरगैत भेल तेकर प्रभाव तँ जन-जीवनपर पड़बे कएल अछि किने। जइसँ काज छिनाएल अछि। काज बाधित भेने जीवन नव काजक तलाश करबे करत, मुदा से औत केतए-सँ..?

ओना, लाल भाय जागल लोक छथिए, जागल लोक ई छैथ जे समयक गतिकेँ पकैड़ आँखि मुइन बिसवाससँ अपनाकेँ हटबैत, तत्काल परिवेशक अनुकूल अपन जीवनकेँ ढालैत, अपन विचारपर ओहिना ठाढ़ छैथ जहिना प्रण करिकऽ ठाढ़ भेला। निमैह सेहो रहले छैन.! मन थोड़े मानलक जे जहिना अपना पैछला जीवनकेँ, माने पाछुसँ अबैत जीवनकेँ, एकाएक ओहन चोट पहुँचल जे खुट्टा परक गाए उपैट गेल, खेतक कोनो आशे नहि रहल, आधा सौन बीत गेल आ भरि जाँध पानिमे खेत अखनो डुमल अछिए, सोल्होअना विपरीत समयमे पड़ि गेलौं अछि। विपरीत स्थिति तेहेन बनि गेल अछि जे नव उन्नैत किस्मक धान सभ ओहन अछि जेकर पौधाक लम्बाइ कम होइ छै, जइसँ बीआक बढ़बाइर छोट भेने रोपल नहि जा सकैए। तहूसँ भारी समस्या ई भेल अछि जे ऊपर-निच्चाँक पानि एकबट्ट भेने सभ खेतक धानक बीआ सेहो अधगलू बनि गेल अछि। एहेन समस्या एक गामक नहि गाम-गामक बनियेँ गेल अछि।

मन तेते उदिग्न भऽ गेल जे लाल भायसँ भेँट करए लगले विदा

भेलौं। कहब जे लाल भाइक घर आन टोलमे छैन जे भेँट नहि होइ छैथ? से नहि छैन, टोलेमे छैन। मुदा दुनू गोरेक जीवनक दूरी आने जकाँ एते बनि गेल अछि जे जहिना बाल-बोध पुत्रसँ सचेष्ट माता-पिताक भेँट-घाँट महीनो पछाति हुअ लगल अछि, तैठाम अपने तँ लाल भाइक घरसँ थोड़े हटल छीहे। ओना, असल दूरी बनैक कारण सूर्योदयसँ पूर्वे शुरू होइए। लाल भाय तीन बजे भोरेमे नीन तोड़ि सूर्योदय होइ तकमे एक जीवनक काज पूरा लइ छैथ, जखन कि अपने सुतले रहै छी। अपन मनक विचार तँ लाल भाय अपने मनमे रखने छैथ मुदा जे जीवन बनौने छैथ तइसँ बुझि पड़ैए जे धरतीसँ अकास धरि नारदजी जकाँ प्रतिदिन करिते छैथ। मनमे विचार उठला पछातियो मन नहि मानलक, नइ मानलक माने ई जे केहनो काजमे लाल भाय किए ने अपनाकेँ लगौने होथि मुदा भेँट जरूर करबे करबैन। हुनका काजक दुआरे अपन काजक रस्ता बन्न करब नीक नहि। समाजमे बुढ़-बुढ़ानुसक आगू केना मुँह उठाएब जे समाजमे कियो कुशलो-वारता पुछनिहार नहि अछि। मन नइ मानलक, लाल भाय ऐठाम पहुँचलौं।

आने समय जकाँ, माने जहिना कुसमयक बरखा मौसमक समयकेँ जे दुरि केलक तइसँ पहिलुका माने जखन जीवन समुचित अवस्थामे चलि रहल छल तहिना, लाल भाइक दरबज्जापर पहुँचला पछाइत बुझि पड़ल। तइसँ अपना मनमे संकोचो उठल जे काजक अभावमे अपने निहत्था छी आ लाल भाइक परिवार सुहत्था छैन। दरबज्जापर बजलौं-

“लाल भाय छी यौ, यौ लाल भाय?”

तेते जोरसँ बाजल छेलौं जे लालो भाय सुनने हेता, मुदा तेकर उत्तर ओ नहि देलैन। ओना, एहनो सम्भव अछिए जे जँ कोनो काजमे लगल होथि जइसँ श्रवेन्द्रीय कर्मेन्दिय रूप बनि गेल होनि जइसँ नहियोँ सुनने हेता। मुदा तैबीच लाल भाइक एकटा बारह बर्खक पोती दरबज्जापर आबि बाजल- “बाबा खेतमे छैथ। खेत लगे अछि, अहाँ बैसू, बजौने अबै

छिऐन।"

सुचित्राक, माने लाल भाइक पोतीक, बात नीक नहि लागल। नीक ऐ दुआरे नहि लागल जे अपना जनैत ने ओ बच्चा अनुकूल बात बाजल मुदा अपनो अनुकूल तँ विचार अछिए। बजलौं- "बौआ, संगे चलह।"

ओना, आदर करैत सुचित्रा पुन: बाजल- "थाल-पानिमे अहाँ किए जाएब। हमहीं बजौने अबै छिऐन।"

अपना मनमे ईहो हुअए जे जखन सौंसे गामेमे थाल-पानि पसरल अछि तखन ओइसँ केतेकाल डेराएब, मुदा अपने मन ईहो कहए जे बच्चा (सुचित्रा) आदरक विचार करैए। से की करी?

संयोग बनल, लाल भाय खेतसँ आँखि उठा तकलैन तखन देखलैन आकि दुनू गोरेक बीचक गपक किछु अंश कानोसँ सुनलैन से तँ ओ जानैथ मुदा एला धरि पीठेपर। अबिते बजला-

"एना ठाढ़ किए छह, जुआलाल?"

अपने ऐ आशामे रही जे लाल भाय जखन लगमे औता तखन प्रणामो करबैन आ अपन जे दू मासक दशा रहल सेहो सुनेबैन। अपनाकेँ सम्हारैत बजलौं- "लगले आबिये रहल छी भाय, तैबीच सुचित्राक संग गप-सप्प करए लगलौं।"

अपन जे मनक विचार छल तइसँ अगुआ लाले भाय बजला-

"दस कट्ठा भीठ जमीनक पानि उतरल अछि, सएह देखए गेल छेलौं। समय एहेन कुसमय बनि गेल अछि जे सभ काजे पानिमे डुमि गेल अछि।"

ओना, अपन मनक विचार तर पड़ि गेल, ऊपरेसँ बजलौं- "समय कुसमय भेल अछि आ कि चण्डाल समय बनि गेल अछि।"

अपना जनैत समयकेँ दोख लगबैत अपन दोखकेँ हेरबए-हराबए चाहलौं मुदा से भेल नहि। जहिना मुसरीक नाँगैर पकैड़ बाल-बोध खेलबो

करैए आ हँसबो करैए तहिना लाल भाय मुस्कियाइत बजला- "समय कुसमय की कोनो अपने सभटा ले भेल अछि आकि सभ ले।"

इमानक बात पूछी तँ अखन तक अपनेटा दुख-बेथाकेँ दुख-बेथा बुझै छेलौं आ अनकाकेँ भग्गल बुझै छेलौं। मुदा 'ठनकल' शब्द जे लाल भाइक मुहेँ सुनलौं, तइसँ मनमे झनाक-दे लागल तइसँ देहक संग मनो झनैक गेल। झनैकते मनमे उपकल- आफद-असमानी कि कोनो अपनेटा ले भेल अछि आकि सभ ले। अपना आ आनमे एतबे ने दूरी बनल अछि जे अपनासँ बेसी लोक अपनासँ पाछू छैथ, माने जीवनक सभ पहलूकेँ अँकैत, आ कम लोक अपनासँ आगू छैथ, अही कम-बेसीक बीचमे अपने झुलै छी। अखन तकक जे अपन जीवन रहल अछि तेकरा नुकबैत, लाल भायकेँ अनुकूल बनबै दुआरे प्रशंसनीय ढंगसँ बजलौं-

"लाल भाय, अखनो अहाँ तेते ऐ देहकेँ दुहै छी जे करवनो बैसल नहि रहऽ दइ छिऐ।"

हमर विचारकेँ मने-मन लाल भाय आँकि एक चुटकी जवाब दैत बजला-

"जुआलाल, अखन एहेन प्रश्नपर समय लगाएब अवसरकेँ दुरि करब हएत, मुदा विचारणीय विषय तँ अछिए।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"हँ, हँ, अखन ऐ विचारकेँ छोड़ू।"

एकाएक अपनाकेँ ऊपर-निच्चाँ होइत देखि लाल भाय बजला-

"जुआलाल, जे प्रश्न सोझामे आबि गेल, ओकर उत्तर नहि देब निरुत्तर हएब भेल, तँए पहिने प्रश्नक उत्तर संक्षेपमे कहै छिअ- 'अपना ले सभ किछु करै छी।"

ओना, लाल भाय पहिनहि कहि देने छला जे संक्षेपमे कहै छिअ। प्रश्न तँ संक्षेपमे होइए। संक्षेप उत्तरमे संक्षेप प्रश्न की हएत। तँए कोनो गर

नहि पेब बजलौं- "लाल भाय, अहाँक विचार सत्तैर सालक देखल दुनियाँक निचोड़ हेबे करत किने।"

लाल भाय हमरा बहकैत देखलैन आकि अपने मन बहकलैन से ओ जानैथ। मुदा गम्भीर होइत बजला-

"जलमग्न धरतीमे जे कमपन आबि गेल अछि, ओकरा जाबे समपन नहि कएल जाएत ताबे तक ओकर कमपन्न केना कम हएत।"

लाल भाइक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, बजलौं-

"से की भाय?"

लाल भाय आँकि लेलैन जे जुआलाल गीता जकाँ मंगल पाठ पढ़ए चाहैए जे सोझे पढ़लेटा सँ नहि हएत, ओ, माने गीता, तँ जीवन-सूत्र छी। जे जीवनक धार बनि धारा रूपमे प्रवाहित होइत जीवनक संग सदैत प्रवाहित होइत चलैए। अपन डुमल जिनगीकेँ, माने किसानक किसानी शक्तिकेँ, असथिर करैत लाल भाय बजला-

"जुआलाल, दस कट्ठा भीठ जमीन अछि, ओ जागल हेन। माने पानिमे दू मास डुमल रहला पछाइत, सएह देखए गेल छेलौं जे तत्काल ऐ जमीनकेँ केना जीवनक संजीवन बनाएब।"

बजैयोक तँ अपन-अपन लुतुक अछिए। मुदा अनकासँ बेसी अपनामे अछि, जइसँ एहेन कुतुक बनियेँ गेल अछि जे बुझी वा नइ बुझी मुदा जोड़-घटाव करि कऽ जहिना किछु बजाइये जाइए तहिना बजा गेल-

"भाय, दू मासक जे समयक गति रहल तइसँ हम कहब जे अहाँ धड़फड़ा कऽ खेतक आड़ि पकड़ए चाहै छी।"

हमरा विचारमे लाल भायकेँ जेना कोनो भाव भेटल होनि तहिना गम्भीर होइत बजला- "बेस कहलह जुआलाल, जैठाम एहेन कुसमयक कुमौसम बनि गेल अछि, तैठाम किछु कहब जल्दबाजी हेबे करत। मुदा से नहि, जे खेत जागल ओ तँ अवसरो देबे केलक अछि। तैठाम अवसरसँ

चुकबो तँ हेबे करत। आइसँ जँ ओइमे लगि जाइ छी तँ जीवनक एक आश तँ जगिये जाएत।"

ओना, लाल भाइक बात नीक जकाँ नहि बुझलौं मुदा लाल भायकेँ बिरमैत देखि जेना अपनो मन बिरमए लगल। बजलौं-

"हँ, से तँ जगिते अछि।"

ओना, मनमे ईहो हुअए जे लाल भाय ठाँठ, तोरिया आ ढेनुआर गाए वा महींस बुझिये ने पेब रहला अछि। एकटा भेल सोल्होअना दूध देब बन्न करैबला, दोसर भेल बिनु समयक ठेकान पेने दूध दइबला आ तेसर भेल तीर्थस्थानक कामधेनु जकाँ ढेनुआर, माने जखन मन हुअए दूहि लिअ। ऐ बेरक एहेन समय अछि जे राति-दिनक ठेकान केने बिना कखनो बरखा बरिस जाइए, तैठाम जँ लाल भाय खेत जगिते खेतक आड़िपर जाए चाहै छैथ, से अगुताइ भेबे कएल किने। मुदा लाल भाइक मनमे रहैन समयक कोनो ठेकान अछि आकि केकरो बोलमे अछि जे कहलासँ मानि जाएत। ओ तँ बेठेकान अछि, बरखासँ बाढ़ियो आनि सकैए आ ओकरा बदैल रौदियो तँ बनाइये सकैए, तँए एहेन अबिसवासू लग अपन बिसवास तँ अपन कर्मे (काजे) देत किने। लाल भाय बजला-

"जुआलाल, आब पहिलुका प्रश्नपर आबह।"

'आबह' कहि लाल भाय चुप भऽ गेला। अपनो मनमे उठि गेल जे पहिलुका प्रश्न लाल भाय केकरा मानि रहला अछि। गप-सप्प तँ केते रंगक भेल अछि। बजलौं-

"लाल भाय, अपनो बहुत समय भऽ गेल। तेहेन समय बनि गेल अछि जे क्षणोमे क्षणाक भइये सकैए, तँए आब...।"

अपन मनक डोर पकैड़ लाल भाय बजला-

"कहने छेलियह ने जे अपना ले करै छी।"

धक-दे मोन पड़ल। बजलौं-

"हँ, हँ, से तँ कहनहि छेलौं।"

बजैक क्रममे तँ बजा गेल मुदा मनमे ईहो उठल जे जँ अपनेटा ले करब तँ ऐसँ नमहर स्वार्थी के भऽ सकैए। आ जखने से भेल तखन दुनियाँमे केकरो-सँ-केकरो मेल-मिलान केना रहत? मुदा बजलौं किछु नहि।

अपन विचारकेँ खोलैत लाले भाय बजला-

"जुआलाल, अपना सभ अपनाकेँ तीन जीवनक बीच ठाढ़ केने छी।"

लाल भाइक मुहेँ 'तीन जीवन' सुनि मन आगू-पाछू हुअ लगल। बजलौं-

"से केना ठाढ़ छी, भाय साहैब?"

लाल भाय बजला-

"पहिने तीन जीवन बुझि लएह। पहिल भेल अपन शरीरक रक्षाक जीवन, जेकरा व्यक्तिगत कहै छी, दोसर भेल परिवार-समाजक बीच लोकक सम्बन्ध आ तेसर भेल देश-दुनियाँक बीचक जीवन।"

अपना विचारे लाल भाय बाजि रहल छला मुदा अपने केतौ-केतौ बुझबो करै छेलौं आ केतौ-केतौ धकचुकाइयो जाइ छेलौं, मुदा तैयो मुँहकेँ बन्ने रखलौं। ओना, मुँहक सुर्खी एहेन बनियेँ गेल छल जे अधखिज्जू जकाँ लाल भाय बुझलैन। चेहराकेँ आँकि लाल भाय बजला-

"जुआलाल, अही तीन जीवनबला लोकक बीच सभक जीवन चलैए। तँए पहिने ऐ तीनूकेँ नीक जकाँ ठेकना कऽ जानि लेब अछि। पछाइत तीनूक बीच सम्बन्ध केना बनल चलत यएह भेल जीवनक मुख्य धेह। जेकर पूर्ति सभकेँ अपन-अपन सीमाक बीच करए पड़तैन। तखने

ओ अपन आन्तरिक विचारकेँ अपना जीवनक संग चलायमान राखि सकता।”

लाल भाइक विचार नीक जकाँ नहि बुझलौं मुदा अपन अगुताइ देखि बजलौं-

“हँ, से तँ राखइ पड़तैन।”



शब्द संख्या : 1903, तिथि : 03 अगस्त 2021

तीन धक्का

जहियासँ बरखा शुरू भेल तहियेसँ, माने आधा मईक पछातिसँ, तैयबसँ भेँट नहि भेल छल। ओना, समय एहेन अपन गति पकैड़ लेलक जे सभ अपने-आपमे परेशान भऽ गेल अछि जइसँ जीवन अस्त-व्यस्त भइये गेल अछि। अपने मन दुतकारक जे समय तँ अहिना नीक-बेजाए सभ दिन होइत आबि रहल अछि आ आगूओ होइत रहत। ओ मूक अछि तँए किछु कहलो नहियेँ जा सकैए, मुदा अपने तँ से नहि छी, अपन नीक-बेजाए बुझबो करै छी, नहियोँ बुझै छी आ बुझैक परियास सेहो करै छी आ नहियोँ तँ करिते छी। मन अगदिगमे पड़ि गेल। मुदा फेर अपने मन हथियाक झटक जकाँ झटकैत कहलक जे तीन पुस्तसँ, माने तीन पीढ़ीसँ, तैयबक संग पारिवारिक सम्बन्ध बनल आबि रहल अछि, ओना समयक एहेन खेल-बेल भऽ गेल अछि जे लोकक संग मालो-जालकेँ जीब कठिन भइये रहल छै, तैठाम जँ अपनो अपन अंगीतक सम्बन्ध तोड़ि ली सेहो नीक थोड़े हएत। मन नइ मानलक, दरबज्जापर सँ उठि तैयबकेँ भेँट करए विदा भेलौं।

जहिना अपन तीन पीढ़ीक जीवन अछि तहिना तैयबकेँ सेहो अछि। अन्तर एतबे अछि जे तैयबक बाबा, माने तेसर पुरुखा, खादी भण्डारसँ सूत आनि कपड़ा बुनै छला आ अपन बाबा दू बीघा जमीन जोतक किसान छला, ओकरे जोति-कोरि अपन परिवार चलबैत रहैथ। दुनू गोरे, माने तैयबक बाबा 'इब्राहिम' आ अपन बाबा 'सुमतिलाल' एक

उमेरिये छला, तँए गामक लोअर प्राइमरी स्कूलमे दुनू गोरे संगे नाओं लिखौलैन। सात टोलक गाममे दुइये गोरे आन टोलक छात्र छला बाँकी पनरहो छात्र एक्के टोलक रहैथ। स्कूलमे एकटा शिक्षक छला, शनिचरा मुख्य जीवनक आधार छेलैन। दुनू पहर स्कूलमे पढ़ाइ होइ छल। ओना, शिक्षक आन गामक छला तँए एक गोटा ऐठाम रहि दुनू बच्चोकेँ पढ़बै छला आ अपने रहितो छला। जइसँ मात्र पत्नी आ दूटा बच्चाक लेल शनिचरापर आधारित छला।

सोल्हो छात्रक बीच जहिना इब्राहिमकेँ तहिना सुमतिलालकेँ मनमे अपन एकांकीपन (अकेलापन, असगरुआ) बेर-बेर उठिते छेलैन। संयोग बनल, छुट्टी भेला पछाइत दुनू गोरे स्कूलसँ संगे निकलला। बच्चा हुअ कि सियान, गप-सप्प भेने रस्ता अपने कटि जाइए, नहि तँ काटए पड़ै छइ। सुमतिलाल इब्राहिमकेँ कहलखिन-

“अपना सभकेँ तीन मास नाओं लिखौना भऽ गेल, मुदा तोहर घर केतए छह से अखन तक देखबे ने केलौं अछि।”

जहिना हमर बाबा इब्राहिमकेँ कहलखिन तहिना इब्राहिम कहलकैन-

“हमर घर रस्ते कातमे अछि। आइ हमरा ऐठीन चलह, काल्हि तोरा ऐठाम जाएब।”

सएह भेल, संगे इब्राहिम ऐठाम बाबा गेला। इब्राहिमक माइक बेवहार अपने माइक बेवहार सन बाबाकेँ लगलैन। दुनू गोरेक बीच, माने सुमतिलाल आ इब्राहिमक बीच, ओही दिनसँ सम्बन्ध बनि गेलैन।

जीवन आगू बढ़ल। हमर बाबा अपन दुनू बीघा जमीनक बीच चास-बास बनौने छेलैथ आ इब्राहिमकेँ से नहि छेलैन। मात्र घर-आँगन भरिक जमीन रहैन। खादी भण्डारक उठाइन भेल, अनेको रंगक सुविधा कपड़ा बुनकरकेँ दिअ लगल। इब्राहिम अपन मामासँ कपड़ा बुनैक लूरि सीखि नेने छला। पाँच कट्ठाक अपन गाछी बाबाकेँ छेलैन। जे इब्राहिमक

घरसँ सटले छेलैन। इब्राहिम अपन काज करैले, माने कपड़ा बुनैले, जगह मांग केलैन। हमरो बाबा बुझलैन जे भने अही बहन्ने, माने कपड़ा बुनैक बहन्ने, अपन गाछीक देख-भाल सेहो भऽ जाएत। कहबै जे अपना जकाँ गाछीकेँ बुझि ताक-हेर करैत रहिहह।

कपड़ा बुनैक जिनगी बना इब्राहिम अपन सौंसे परिवारकेँ, माने पत्नियोँ आ बालो-बच्चाकेँ, तेना काजक कुशल बना लेलैन जे जीवन चलैमे केतौ बाधा-रूकावट नहि भेलैन।

अपनो जन्म भऽ गेल छल, दुनू गोरेकेँ बाबे कहै छेलिऐन। अपना बाबाकेँ सोझे 'बाबा' माने बिनु नाम लेने 'बाबा' कहै छेलिऐन आ हुनका, माने तैयबक बाबाकेँ 'इब्राहिम बाबा' कहै छेलिऐन। दुनू गोरेक सम्बन्धक संग परिवारक सम्बन्ध सेहो बनि गेल छेलैन। इब्राहिम बाबाक परिवारक काज देखि बाबोक परिवारमे काजक संस्कारमे जगरपन एलैन। भेल तँ एतबे ने जे अपन विचारसँ दोसरकेँ जीवनबाट देखाएब। यएह कहब भेल प्रेरणा आ ओही काजक नव रूप वा नव काज दिस उभरब भेल आ उभारब भेल प्रेरित करब।

संयोग बनल, जहिया दुनू गोरे, माने इब्राहिम आ सुमतिलाल, गामेक स्कूलमे रहैथ तहियेक बात छी, ओइ समय बाल विवाहक चलैन छेलैहे, बाबाक बिआह ठीक भेलैन। जे सुनिते इब्राहिमक मन तेते प्रफुलित भऽ गेलैन जे प्रस्फुटित होइत बजला-

"संगी, बिआहमे लोकनिया जेबह।"

ऐठाम ई बुझब जे 'जे लोरिककेँ भात खाए से लोरिकक बरियात जाए' से बात नहि अछि। ऐठाम लोकनियेँक चर्चटा अछि। जातिक भीतर जे भेद-भाव अछि से सुमतिलाल नहि बुझै छला, मुदा एते तँ बुझबे करै छला जे बिआहमे बरक संग लोकनियोँ होइ छइ। ओना, लोकनिया दू दिशिया अछि। एक भेल जे जेठ भाइक संग छोट भाए लोकनिया

जाइए आ दोसर भेल- दोस-महीम, संगी लोकनिया। तइमे जेठ-छोटक विचार नहि होइए, संगपनक जीवनक होइए। बिआहक खुशी सुमतिलालमे रहबे करैन, कहलकैन- “बड़ बढ़ियाँ।”

लोकनियाक बात मानि सुमतिलाल एकटा शर्त्त लगबैत पुन: बजला-

“जेना-जेना हम करब तेना-तेना तोरो करए पड़तह।”

बाल-बोध इब्राहिम हलसैत बजला-

“जखन तोरा संग रहबह तखन तोहर देखा-देखी किए ने करब।”

तैबीच तैयबक पितियौत भाए, रहमतकेँ अबैत देखि कहलिऐ-

“रहमत, तैयबसँ भेँट हएत कि नहि।”

तैयब घरेपर छल, रहमत बाजल-

“हँ।”

आगू बढ़िते बाबाक परिवार धक-दे मोन पड़ि गेल। दुनू परिवारक बीच आबाजाहीसँ लऽ कऽ गप-सप्प, खेनाइ-पीनाइ, पाबैन-तिहारमे बेन-दान, इत्यादि सभ तरहक सम्बन्ध दुनू परिवारमे बनि गेल। छठि पावनिक कबुलाक डाली तैयबक अपना ऐठाम होइए आ तजिया जंग बन्हैले अपनो परिवारक तँ तैयबक संग जाइते अछि।

समयमे ऐगला मोड़ आएल। जहिना जगह-जगह खादी भण्डार बनल तहिना एकाएक सभ ध्वंस सेहो हुअ लगल। गाम-गाममे खादी भण्डारसँ जुड़ल जे कपड़ा बुनकर छला ओइ सभ परिवारक हाथक काज छिना गेलैन। इब्राहिमकेँ सेहो हाथक काज छिनेलैन। मुदा एते इब्राहिमकेँ भऽ गेल रहैन जे दस कट्ठा खेत अपन कमाइसँ उपार्जन कऽ नेने छला। अखन तक कपड़ा उद्योगसँ जुड़ल इब्राहिमक परिवार खेतक काजसँ अनाड़ी छेलैन्हे, मुदा देखो-देखीसँ तँ किछु सीखा-सीखी होइते अछि।

इब्राहिमक परिवारमे, रसूल कन्हा उठौलक। रसूल इब्राहिमक बेटा छला। अपन मरैत रोजगारपर माटि दैत रसूल नव रोजगारक सृजन केलक। झंझारपुर स्टेशनपर तेघराबलाक दोकानमे बीड़ी बनबैक सभ वस्तु भेटै छल। रसूल बीड़ीक कारोबार शुरू केलक। पिता इब्राहिम अपन जीवनक, औरुदा पुरैत परिवारक सोल्होअना भार बेटा रसूलकेँ सुमझा देलैन। ओना, हमरा पिताजीकेँ बाबा नहि सुमझेलकैन। अपना संग बाबा पिताजीकेँ अपन बेवहारिक जिनगी जीबैक अधिकांश लूरि सिखेनौं छला आ सिखैबतो छेलैन।

अपन परिवारमे रसूल दुनू परानी बीड़ी बनाएब शुरू केलैन। दू हजार बीड़ी प्रतिदिन, दुनू गोटा मिलि, बना लइ छला। शुरूमे कम बीड़ीक उत्पादन भेने मात्र एकेटा दोकानमे खपि जाइ छेलैन आ किछु-किछु खुदरा बीड़ी, माने पीनिहारक हाथे, सेहो रसूल बेचै छला। ओना, लकड़ीक हाथकरघासँ लोहा मशीनक बीचक जे संक्रमणक स्थिति होइए तहिना रसूलक संग सेहो रहल मुदा अपन जीबठ बान्हि रसूल अपन पिताक कीनल दसो कट्ठामे एकटा चापाकल गड़ा तरकारीक बरहमसिया खेती सेहो करए लगला जइमे दू घन्टा प्रतिदिनक नियमित बना काज करै छला। माने जीवनक दू घन्टाक समय रसूल खेतीक काजमे लगबै छला जइसँ परिवारकेँ, समयानुसार गुजर-बातमे कोनो अभाव नहि छेलैन। बेटा-पुतोहुक काज देखि इब्राहिम सेहो चैनसँ बुढ़ाड़ीक समय बिता रहल छला।

रसूलक कारोबार दिनो-दिन बढ़ल। गामक पनरह आदमीकेँ बीड़ी बनबैक लूरि सिखा अपन कारोबार बढ़बैत सभकेँ काज देलैन। सोझामे कियो बीड़ी बनाबैथ वा कि परोछमे बनाबैथ, प्रतिदिन एक हजार बीड़ी बनबैक हिसाब सभ कियो पकैड़ लेलैन। रसूलक कारोबारमे, माने बीड़ीक कारोबारमे, अपनसँ पैघ कारोबारीसँ बाजार ले, माने जैठाम बीड़ीक बिक्री हएत, संघर्ष शुरू भेलैन। एक-सँ-एक कारोबारी कम्पनीक

लैला बीड़ी, 608 बीड़ी, किसान बीड़ी इत्यादिक प्रचार-प्रसार गाम-गाममे नाचक मंच बना अपन-अपन बीड़ीक प्रचारो करए लगल आ बाँटौ लगल। रसूल मुकावला केलैन। कम मुनाफामे अपन बीड़ीक बिक्री दर रखलैन। एक तँ ओहुना बीड़ी टटका सौदा छी। माने कम समयमे जे सुआद बीड़ीक रहैए, ओ अधिक समय लगने ओकर सुआदे दूरि भऽ जाइए। अनुकूल परिस्थिति पेने रसूल खुशहाल परिवार बना लेलैन।

संयोग बनल, बीड़ी उद्योग कमजोर पड़ल। गाम-गामक केतेको कारोबारी अपन कारोबार उसाइर लेलैन। अपन उमेर अधिक भेने रसूल सेहो अपन कारोबार ढील करैत गेला। ओना, रसूल अठ-अठ घन्टा, दस-दस घन्टा साइकिल चलबैत गामे-गाम, दोकाने-दोकान बीड़ी बेचिते छला।

जहिना बाँसक रोपमे पहिल सालक अपेक्षा दोसर-तेसर सालक कोंपर बीस होइत जाइए तहिना इब्राहिमक परिवार दिनो-दिन बीसे होइत गेलैन। तैयब, रसूलक बेटा, कौलेज तकक शिक्षा अर्जन कऽ लेलक। अपन दसो कट्ठा तरकारी खेतकेँ तेतेक उन्नति बना लेलक जे पिताक अमलदारीसँ, माने रसूलक अमलदारीसँ, पाँच गुणा उपज बढ़ा लेलक। पितेक बनौल समय जकाँ तैयब सेहो दू घन्टाक समय अपन खेतमे नियमित बितैबते अछि।

दरबज्जेपर सँ तैयब देखलक कि आगू बढ़ैत रस्तापर आबि बाजल-

"भाय साहैब, बँचल छी किने।"

तैयबक संग सभ तरहक गप-सप्प होइते अछि। तँए कोनो गप छिपबैक खगता ने अपने होइए आ ने तैयबेकेँ होइ छइ।

बजलौं- "बँचल की रहब, तखन तँ जान बँचल अछिए।"

चुटकी लैत तैयब चुटकीमे सवालकेँ उड़बैत बाजल- "भाय साहैब, जखन जान बँचल अछि तखन जहान बनबैमे केते देरी लागत।"

ओना, तैयब अपन पारिवारिक बेथाकेँ मनेमे दाबि बाजल छल मुदा मन अपन बेथासँ कुही भइये रहल छेलै। चेहराक रूपक रंगसँ स्पष्ट झलैक रहल छल, जे तैयब केतौ-ने-केतौ जीवनक कठिन दौड़मे फँसि गेल अछि। मुदा से अनठेकाने पुछलो केना जाए। ओकरा तँ पानिक टघहार वा धारा जकाँ समरस रस्ता बनबैत मुँहकेँ मोड़ि दोसर दिस कएल जा सकैए। कैरम बोर्डक कोनाएल गोटीकेँ पकड़ैले जहिना उनटा गोटी चालए पड़ैए तहिना बजलौं-

"तैयब, आइ तीन पुस्तक सम्बन्ध अपना दुनू गोरेक परिवारक की रहल से जहिना तूँ देखैत अबै छह, तहिना ने हमहूँ देखैत अबै छी।"

हमर विचारक वाण जेना तैयबक करेजमे लागल तहिना छिलमिलाइत बाजल-

"जीबछ भैया, अहाँ जहिना उमेरमे दू साल जेठ छी तहिना कौलेजसँ सेहो दू साल पहिने निकललौं, ओना समाजमे आन परिवारसँ भिन्न अपना दुनू गोरेक परिवारक सम्बन्ध रहले अछि।"

तैयबक विचार सुनि मन तिलमिला गेल। तिलमिलाइत मने मुहसँ निकलल-

"आगू केना सम्बन्ध जीवित रहत तैयब, से तँ अखन–वर्तमानमे–अपने सभ ने बनेबै।"

हँसैत तैयब बाजल-

"भाय साहैब, मनुखे ने ऐ दुनियाँक करता-धरता सभ दिनसँ रहबो कएल अछि आ आगुओ रहबे करत।"

तैयबक विचार मनमे तेना चुभि गेल जे विष-विषीसँ नव संचरण हुअ लगल। बजलौं- "तैयब, अढ़ाइ मासक जे समय रहल ओ जीवनकेँ, किसानी जीवनकेँ, तेना झकझोड़ि देलक जे उठि कऽ ठाढ़ होइमे बहुत

बेसी शक्तिक जरूरत भऽ गेल अछि, जे असम्भव बुझाइए, जइसँ आगूक जिनगीमे धुनियेँ-धुनि लागल देखि रहल छी।"

अखन धरिक सधाएल (साधल) जीवन तैयबक अछिए। सधाएल जीवनक माने ई जे स्वतंत्र देशक नागरिकक की महत्व अछि ओ तैयब नीक जकाँ बुझि रहल अछि तँए अपन जीवनकेँ नियमानुकूल एक तिहाइ जीवन अपन परिवारकेँ भरण-पोषण ले उपार्जनमे लगैबते छैथ माने ई जे अपन आठ घन्टाक ड्यूटिमे दू घन्टा खेतीमे बितबै छैथ, ओइसँ परिवारमे ओहन उपार्जन भइये जाइ छैन जइसँ साधारण पारिवारिक जीवन चलि सकैए। तइ संग गाड़ी–इंजीन गाड़ी–क ड्राइवरी सेहो करै छैथ। चारि साल पहिने तैयब चारि-पहियाक सवारी गाड़ी कीनि अपना गामक रोडमे सेहो चलबै छैथ। अपन गाड़ी, अपन ड्राइवरी तँए दोहरी लाभ तैयबकेँ होइते छैन। ..तैयब बाजल-

"जीबछ भाय, की कहब, जहिना गुड़क मारि धोकरे बुझैए तहिना भऽ गेल अछि। मुदा.. ।"

अपन पेटक विचार तैयब उगलए चाहि रहल छैथ, तँए किए ने हुनके नीक जकाँ बोकरा सभ देखि ली। बजलौं-

"मुदा की तैयब?"

तैयब बजला-

"भाय साहैब, एक संग तीन धक्का तीनू दिससँ लागि रहल अछि। जइ खेतसँ परिवारकेँ नीक उपार्जन होइ छल ओ अढ़ाइ माससँ पानिमे डुमल अछि।"

'पानिमे डुमल' सुनि बजलौं-

"गामे डुमल अछि।"

तैयब बजला-

“जहिना बरखा तहिना बाढ़िसँ रोड सड़क तेना टुटि-फाटि गेल अछि जे चारि सालक पुरान गाड़ी केना चलि सकत?”

बजलौं-

“तखन, उपाए?”



शब्द संख्या : 1759, तिथि : 06 अगस्त 2021

अजीब खेल

दरबज्जापर निठल्ला बैसल तरे-तर गाम घुमैत रही। निठल्ला बइसैक कारण छल जे खेती छोड़ि अपने दोसर कोनो काज करैक ने ऊहि अछि आ ने लूरि अछि। कहब जे जखन खेती करैक लूरि अछि, बारहो मास छत्तीसो दिन खेत-पथारमे काजो अछि, तैसंग अनेको पूरक उद्योग सेहो अछिए। जेना- गाए-महींस पोसब, माछ-मखान उपजाएब इत्यादि, तखन निठल्ला किए बैसल रही? ..हँ, करैबला ले सभ किछु अछिए मुदा अपना संग जे स्थिति अछि, तइ कहैसँ पहिने अहाँक पूछब हएत। अपन निठलपनक कारण अछि जे जहिना तीन माससँ सदिकाल मेघसँ पानि झहरैए तहिना कोसीक पानि बाढ़ि बनि तेना गामकेँ दबने अछि जे घर-अँगना छोड़ि सौंसे पानियेँ-पानि झलैक रहल अछि। जइसँ खेत-पथार, माल-जाल सभ फेदरैतमे पड़ल अछि।

गाम घुमैत-घुमैत मन विकासक परिवारपर गेल। परिवारपर सँ विकासपर अबैत-अबैत मन लोहैछ गेल। लोहछैक कारण भेल जे विकास अपन संगी गामक स्कूलसँ कौलेज धरिक रहल। पछाइत दुनू गोरेक जीवन दू दिशामे बढ़ि गेल तँए सम्बन्धमे धीरे-धीरे जंग[1] लगैत गेल आ दूरी बनैत गेल। जइसँ अपने खेतिहरक खेतिहरे रहि गेलौं आ विकास खेतिहरक बेटासँ किरानीक नोकरी करैत ब्लौकक बड़ाबाबू बनि गेल। जे

[1] **बीछ**

तीस जूनकेँ सेवा-निवृत्त होइत, तइसँ आठ दिन पहिनहि ससपेण्ड भऽ गाम आबि गेल। किए ससपेण्ड भेल? से बुझैक खगता अपने किए रहत। देखिये रहल छी जे दुइयोअना लोक निरोग नहि अछि। तखन तँ भेल जे दुनू गोरे एक गाममे रहै छी तँए गमैया सम्बन्ध जेते अछि मतलब तेते राखब। ओना, अखन तकक जीवनमे–माने कौलेजसँ अलग भेला पछातिक जीवनमे–दुनू गोरेक बीच कोनो जीवन्त सम्बन्ध नहि रहल, तइसँ दूरी बनियेँ गेल अछि। तँए सम्बन्धमे मरनता आबिये गेल अछि। ने कहियो एकठाम बैस गप-सप्प करै छी आ ने चाहे-पान करै छी। तखन जीवन आ जीवनक सुख-दुखक चरचे की हएत।

मनमे एकाएक मोड़ आएल। मोड़ अबिते विचार उठल जे समाजक बीच सामाजिकता तँ सेहो छीहे। चल जीवनमे जे सम्बन्ध अछि से अछि मुदा अचल जीवनक सम्बन्ध तँ किछु विशेष होइते अछि। अपन कोन बात जे जखन गामेक स्थिति बिगैड़ गेल अछि तखन कएले की जा सकैए। ओना, गामे की कहबै जे जिला-जवार राज्योक स्थिति बिगड़िये गेल अछि। मन नहि मानलक, विकासक जिज्ञासा करैले उत्प्रेरित केलक। जइसँ भेँट करैक विचार तँइ कऽ लेलौं।

विकासक घर अपना घरसँ आधा किलोमीटरक दूरीपर अछि मुदा सुखल रास्ताक गतिक दूरी किछु आरो होइए आ जाँघ भरि पानिक रास्ताक गतिक दूरी किछु आरो होइते अछि। अखन अपना दुनू गोरेक घरक बीचक जे रास्ता अछि ओ भरि जाँघ पाइनिक निच्चाँमे अछि। मनकेँ मन तेते उत्प्रेरित केलक जे मनसँ सभ किछु हेरा गेल, आँखि मुइन विदा भेलौं। मनसँ हेरा गेल छल जे रस्तापर भरि जाँघ पानि-झाड़ अछि तँए रस्ता उकड़ू भऽ गेल अछि। जेना आँखि देखिये ने रहल छल जे पानिसँ डुमल रस्तापर चलि रहल छी। देखबो केना करितौं, मनो-मन तँ मनान्तर अछिए। कोनो मन वीरभूमि देखैए तँ कोनो मन वीरगति देखैए, तहिना कोनो मन वीरमति देखैए तँ कोनो वीरहति सेहो देखिते अछि।

खाएर जे जे देखए मुदा अपन मन कबुल कऽ नेने छल जे जहिया जे विकास रहल से तहियाक भेल मुदा आइ जे तीन माससँ पानिक झमारमे समाज पड़ि गेल अछि, जँ तहूठाम मेख-वृख राखब तखन समाज आ सामाजिकताकेँ झोड़ामे हाथ घोंसिया रूद्राक्षक माला जपने कटहर छोड़ि आम थोड़े भेटत। एक तँ ओहुना अदौसँ समाज आफत-विपैतमे जाति-सम्प्रदायसँ आगू बढ़ि ठाढ़ होइते रहला अछि। जँ से नहि रहैत तँ मनसुखलालक गोसाँइ घर बँचैत। ओ तँ धन्यवाद फुसना डोमकेँ दी जे मनसुखलालक घरक आगि अपना घैलक पानिसँ मिझौलकैन। गामक बाबू-भैया ने छुच्छे हाथे आगि मिझबए गेला मुदा फुसना अपन घैलती-परक घैलक पानि उठौने गेल तँए ने आगि मिझाएल। खाएर जे जहिया भेल से तहिया भेल। आब कि हरिश्चन्द्रक सतयुग थोड़े रहल जे काशीमे अपनाकेँ बेचि नोकरी केलैन। से अनुकरण करब। आब तँ एक काशीकेँ के कहए जे अनेको काशी दुनियाँमे बसि गेल अछि। किए ने लोक अमेरिका-चीनक काशीमे जा अपनाकेँ छह घन्टा कि आठ घन्टा आकि चौबीसो घन्टा ले बेचत।

रस्तामे केते समय लागल आकि पाइनिक तरमे खाधियो-खुधि छल से भाँजपर चढ़बे ने कएल। मन मारि विकासकेँ दरबज्जाक चौकीपर बैसल देखि आगूए-सँ बजलौं-

“विकास भाय, बेसी झमारमे ने ते पड़ल छी। हम तँ तवाह भऽ गेलौं।”

तीस सालक नौकरीक खेलाएल लोक विकास अछिए, सभ दिन चटसारेपर रहल तँए भाषाक अपन ढंग अपना दिस मोड़ैक बनौनहि अछि। बाजल-

“खेती-पथारी तँ अपने सोल्होअना छोड़िये देने छी, तखन झमारे की लागत।”

अपना जनैत विकास अपन जीवनसँ हटि गामक जीवनकेँ नजैरमे

राखि बाजल, मुदा अपना तँ बुझल अछिए जे विकास सेवा-निवृत्त होइसँ आठ दिन पहिने सस्पेण्ड भऽ गाम आबि गेल अछि। तइ संग बजैक क्रममे जे मनक थरथरी छेलै सेहो स्पष्ट कइये रहल छल। मनमे विचार उठल जे एकजनिया जाल खसौने सँ काज नहि चलत, बिना महजाल खसौने विकासकेँ थोड़े देखि पाएब। महजाल लगबैत बजलौं-

"अपना सभक की जुग-जमाना छल आ आइ की भऽ गेल अछि। आन जे होथि मुदा अपने तँ छुब्ध छीहे। राता-राती जेना मशीनक आवाहन एक-सँ-सात गुणा आगू बढ़ि जाइए तहिना मनुक्खो आ समाजोक जीवन थोड़े बढ़ि सकैए।"

विचारिकऽ आकि विचारेक क्रममे, से नहि जानि, मुदा विकास बाजल-

"से तँ नहियेँ भऽ सकैए।"

विचारमे विकासकेँ सहमत होइत देखि बजलौं-

"आब तँ नोकरियो लगिचाइये गेल हेतह?"

विकास बाजल-

"तेहने सन।"

विकासक विचारसँ बुझि पड़ल जे थाल महक गैंचियो माछसँ बेसी पिछराह अछि। रहैए थालमे मुदा पानियोक माछक सुआदसँ अपन नीक सुआद चोरा[2] कऽ रखने अछि। बजलौं-

"तेहने सनक, माने?"

सौंस मनक विचार ने सक्कत होइए मुदा अधखिल्लू, अधपक्कू आकि काँच-कोंचिल थोड़े सक्कत भऽ सकैए। हिया हारि विकास बाजल-

"जीवनक अजीब खेलमे पड़ि गेलौं भाय।"

---

[2] **गोरिया**

जीवन तँ अपने अजीब अछि, तैठाम अजीबमे की अजीब भेल आकि सजीव भेल? तहूमे 'तमाशा' नहि भेल 'खेल' भेल.! अनेको विचार मनमे जगि गेल। फेर अपने मनमे उठल- जखन जिज्ञासा करैक विचारसँ विकास ऐठाम एलौं अछि तखन किए ने विकासेक अनुकूल अपनो जिज्ञासा करी। बजलौं-

"की जीवनक अजीब खेल, विकास?"

अपन प्रश्न सुनि विकास ततमताए लगल। मनमे उठलै जे सुपुट मुहेँ अपन जिनगीक चूक बाजी आकि ओइमे कल-छप्पन करी। कारण दुनूक बनैए। समाजोक तँ एहेन रूप बनियेँ गेल अछि जे बरो-बिमारीक अवस्थामे, जैठाम सभ तरहक मदैतिक जरूरत होइ छै तहूठाम, जखन एककेँ दोसर ठाढ़ नहि होइए तखन बाजिये कऽ की हएत। मुदा लगले मनमे ईहो उठए जे अपने जे बगुला जकाँ किदैनपर सोल्होअना टक दुनियेँपर लगौने छी आ अपने दुनियाँकेँ की केलिऐ तेकर कोनो ठेकाने ने। यएह विचार ने कृष्ण अर्जुनकेँ नहि कहि फलक आशा छोड़ि दइले कहलैन। गाछ-बिरीछ आकि माल-जाल अपन सेवा लेलहाक बदला, माने काजक फल, दइते अछि तैठाम मनुक्खो तँ मनुक्ख छीहे, एकक बदला दस दइले तैयार अछि। तेतबे किए, तहूसँ बेसी ओहनो दाता दिगंबर (दिक्+अम्बर) तँ छथिए जे देबेटा जनै छैथ आ लइक खगता रखनहि नहि छैथ। खाएर जेतए जे अछि, तेतए से अछि, ऐठाम तँ अपन आ विकासक बात अछि।

एकाएक विकासक मनमे ठनका जकाँ चेतौनी चेत खसल। जइसँ मनमे आशाक आश जागल। विकास बाजल-

"जीवन भाय, आबो जँ मुँह चोराकऽ राखब तँ ओ चोराएलक चोराएले रहि जाएत, मुदा जँ बाजि देब तँ एते आशा कएले जा सकैए ने जे एहेन परिस्थितिमे पड़ल चेत जाइथ।"

विकासक विचार सुनि अपनो मनमे ठाँहि-दे लागल जे जखन

दुनियाँ असथिर रहैबला नहि, ओ गतिशील अछि। जैठाम पहाड़ अछि तैठाम समुद्र बनि जाएत आ जैठाम समुद्र अछि तैठाम पहाड़ बनि जाएत, तैठाम मनुक्ख आ मनुक्खक काज केते थीर रहत.? बजलौं-

"विकास भाय, आब अपना सभक उमेर ओहन भइये गेल अछि, जे आमे कि जामुने गाछक शीलकेँ चारि गोरेसँ कन्हापर सांगि लगा उठाएब, मुदा एते तँ अछिए ने जे साइठ-एकसइठ बर्खक एक जीवन धारमे बहैत आबि रहल छी। ओ केते नीक रहल आकि अधला रहल, तइसँ तँ ऐगला पीढ़ी परिचित भइये जाएत किने।"

हमर विचार सुनि विकासक मन उजगुजा गेल। उजगुजाइक कारण भेलै जे अपन बात पहिने बाजी आकि समाजक बाजी, तैसंग ईहो उठि गेलै जे तीन पीढ़ीक बीच अपन जीवन रहल अछि, पिताक समय की रहल, अपन केहेन रहल आ आब जे अन्तिम अवस्थामे एलौं तँ ऐगला पीढ़ीक संग केहेन रहत? ..सामंजस करैत विकास बाजल-

"जीवन भाय, साइठ सालक जिनगी पानि-झाड़सँ लऽ कऽ बोन-झाड़ तकक बीतल अछि, तँए लत्ती जकाँ जीवनक अनेको मुँह-कान भइये गेल अछि। ताड़क गाछ जकाँ एकमुहाँ तँ रहल नहि, तँए सेरियाकऽ बजैमे ओझरी अछिए।"

मनक बात आ मुँहक बातक बीच जे दूरी विकासक मनमे उठि गेल, तेकरा सोझड़बैत बजलौं-

"विकास भाय, जेना-जेना मनमे उठैत जाइ छह तेना-तेना बजैत चलह। से ताबत धरि बाजह जाबत धरि पेटक सभ बात नहि सठि जाह। देखिते छहक जे तेहेन समय भऽ गेल अछि जे दिन कटने ने कटाइए, निचेने छी, बाजह।"

ओना, आने जकाँ विकासोक मनमे उठल जे जहिना सभ अपन अतीतेक विचार भरि दिन करैए तहिना अपने पिते लगसँ बाजी, मुदा

लगले अपने मन रोकलकैन जे जँ पिताकेँ स्मरण करिऐन आ पुत्रकेँ छोड़ि दिऐ सेहो नीक नहि हएत। फेर अपने मन रोकैत कहलकैन जे जखन पिते-पुत्रक विचारक बीच रहि जाएब तखन अपने जे सेवा निवृत्त हेबाकाल कलंकक मोटरी नेने ऐ अवस्थामे पहुँच गेल छी.? से कहिया विचार करब। ओना, विकासक मनमे ईहो उठि रहल छेलैन जे आरो चारि गोटाकेँ बजा अपन सभ बात कहि, अपन उद्धारक विचार करी, मुदा मुद्दो तँ मुद्दा छी। विकासक मन घुरिया गेलैन। बजला-

“जीवन भाय, की पहिने बाजी आ की पछाइत, से विचारे ने बनि रहल अछि..!”

बजलौं- “विकास भाय! कोनो कारबारक घूस, कारबार होइसँ पहिने जाबीरेटा बुझैए, मुदा कारबारक पछाइत सभ बुझैए। जखन सभ बुझैए तखन तँ अपनो मानए पड़त ने जे फल्लाँठाम चूक भेल कि गलती भेल, आकि लोभमे पड़ि जिनगीकेँ मरनीक घाट चढ़ा देलौं।”

हमर बात जेना विकासकेँ बज्रवाण जकाँ छातीमे लगलैन जइसँ हृदय विदीर्ण भऽ गेलैन। सुपुट मुहेँ बाजल-

“जीवन भाय, बिनु कहनौं अहाँ देखिये रहल छी, तइ बीच अपने अपनाकेँ छिपाबी से मन नहि मानि रहल अछि।”

विकासक विचार सुनि अपने मन कहलक जे आगूसँ नहि पाछूसँ जँ धक्का दिऐ तँ विकास अपने सभ अपन करनी-धरणी बोकैर देत। बजलौं-

“विकास भाय, शरीरमे जँ गुड़ घाव भऽ जाए तँ जाबे ओकर खिल नहि निकैल जाए ताबे तक पुन: घाव हेबाक आशा रहिते अछि, तँए जीवनमे जँ कोनो दाग-दुग हुअए तँ ओकरा जड़ि-मूल छोड़ाएबे नीक होइए।”

अपन जिनगीक समस्यामे ओझराएल विकास जहिना पूर्वजकेँ

बिसैर गेल तहिना आगू अबैबला बेटो-पुतोहुकेँ बिसैर अपन जिनगीकेँ ओइठामसँ बाजब शुरू केलक जैठाम कौलेज छोड़ि दुनू गोरे दू दिस भऽ गेल छेलौं। विकास बाजल-

"जीवन भाय, एक गामक समाजमे दुनू गोरेक जन्म जहिया भेल आ जेना-जेना समय बीतैत गेल तेना-तेना सम्बन्धो बढ़ैत गेल आ गामक स्कूलसँ कौलेज तक दुनू गोरे संगे पढ़बो केलौं।"

सह दैत बजलौं-

"एकरा के काटत?"

परसाएल गुड़ घाव जकाँ विकास अपने फुटि पड़ल-

"जीवन भाय, एक व्यवस्थित किसान परिवारमे जेना जन्म भेल आ समाजक संग रहि पढ़लौं-लिखलौं तेना पछाइत नहि रहल।"

विकासक बात सुनि मनमे भेल जे अखनो विकास अपन पेटक बात पेटेमे रखए चाहैए। ओ तँ निकलत पेटेक पट भरने, बजलौं-

"विकास भाय, जैठाम से नहि रहल, सेहो तँ आन बुझए वा नहि बुझए मुदा अपने तँ बुझिते हएब किने?"

स्पष्ट शब्दमे विकास बाजल-

"समाजकेँ के कहए जे समाजक एक-एक जन जानि रहला अछि जे 'उत्तम खेती', मुदा मानि की रहला अछि, अपनो सएह भेल.!"

विकासक मुहसँ जिनगीक महामंत्र सुनि सह दैत बजलौं-

"विकास भाय, जाबे अपन मनक काह-कूह नहि निकलत ताबे मन पवित्र केना बनत आ जाबे मन पवित्र नहि बनत ताबे सामाजिक वा पारिवारिक ढाँचा तैयार केना हएत।"

अपन अतीतक सुख-सुविधाकेँ मोन पाड़ैत विकास बाजल-

"जीवन भाय, जाबे धरि पिताजीक देख-रेखमे अपन जीवन रहल

ताबे तक सोल्होअना चिन्ता मुक्त छेलौं। पिताजी परिवारक सब बेवस्था करै छला। मुदा जखन नोकरीमे एलौं, पिताजी सेहो मरि गेला आ अपन दसो बीघा जमीन बटाइ लगा अपने सरकारी डेरा पकैड़ गाम आएब-जाएब कम केलौं, जइसँ घरो-घराड़ीक मरन भऽ गेल आ आब जखन ऐ अवस्थामे एलौं हेन तखन सेवा निवृत्त होइसँ आठ दिन पहिने सस्पेण्ड भऽ एलौं अछि।"

मनमे भेल जे कोनो विचार दइसँ पहिने विकासक अपन विचार बुझि लेब बेसी नीक हएत। बजलौं-

"अपने की करैक विचार सोचि रहल छी?"

विकास बाजल-

"सएह ने किछु फुरि रहल अछि। जाबे पिताजी छेला ताबे बिनु कहनौं सभ पूर्ति होइ छल। आब तँ ओ रहला नहि। अपने फँसिये गेल छी, आ दुनू बेटा सहजे गामकेँ के कहए जे राज्योसँ बाहर मध्यप्रदेशमे नोकरी करैए, तैबीच अपने पड़ल छी।"

ओना, अपन मन मानि रहल छल जे गाम-गाममे पढ़ल-लिखल नवयुवकमे एहेन धारणा बनियेँ गेल अछि जे जँ सरकारी वा गैर-सरकारी छोटो-छीन नोकरी भेट जाएत तँ जीवनक उद्धार भइये जाएत। आँखिक सोझमे देखियो रहल छीहे जे साधारण-सँ-साधारण तेसर वा चतुर्थ श्रेणीक जे कर्मचारी छैथ ओहो अपन बाल-बच्चाकेँ अधिक-सँ-अधिक खर्चबला स्कूलोमे पढ़बै छैथ आ जीवनक आनो-आन काज सुभ्यस्त जकाँ करिते छैथ। मुदा ओ ई नहि बुझि रहला अछि जे नौकरी सरकारी हुअ कि गैर-सरकारी, वेतन काजक अनुकूल भेटैए। माने वेतनक निर्धारण काजक स्तरक अनुकूल निर्धारित होइए। हँ, एते जरूर भेल अछि जे सरकारी खजानासँ लऽ कऽ समाजक खजाना तकक लूटि भऽ रहल अछि। तहूमे किसानक जेहेन लूट भऽ रहल अछि, तइसँ गामक कि

जे कृषि प्रधान देशक रीढ़ सेहो कमजोर भऽ रहल अछि। जाधैर कोनो गामक आर्थिक पैदावार नहि बढ़त ताधैर गामक समुचित विकास नहि हएत। जखन गामेक विकास अवरूद्ध भऽ जाएत तखन समाज आ सामाजिक ढाँचा लड़खड़ेबे करत। सोझे बाजि देलासँ समस्याक निदान नहि ने होइ छइ। हर मनुक्खकेँ जहिना अपन जीवन-पूर्तिक आवश्यकता अछि तहिना हर परिवारकेँ सेहो पारिवारिक ढाँचा सुदृढ़ बनबैक आवश्यकता अछिए। परिवारेक सामूहिक रूप ने गाम-समाज छी, बिना तेकरा सुदृढ़ भेने जीवन केना सुदृढ़ बनत। आ जँ से नहि बनत तखन स्वतंत्र देशक स्वतंत्र जीवन केना बनत.! अपने मनमे उठल जे ओहुना आपैत-विपैतमे पड़ने असथिरो मन विचलित भऽ जाइते अछि तैठाम विकास तँ सहजे जीवनक चारू पायासँ घेराएल अछि, तैपर सँ आरो मनपर भार देब नीक नहि। बजलौं-

"विकास भाय, अहाँ तँ देखिते छी जे जहियासँ पढ़ाइ छोड़लौं तहियासँ परिवारक बीच रहि खेती-पथारी करैत जीवन निमाहैत एलौं हेन, तँए कोट-कचहरीक तँ जानकारी अपना अछि नहि जे किछु मदैत कऽ सकब, मुदा तैयो कहै छी जे अहाँ ई नहि बुझब जे जीवन कियो आन छी। जइ-जोकर छी, तइ लऽ कऽ तइले सदैत तैयार छी।"

हमर बात सुनि विकासक मुहसँ मुस्की निकललै। मुस्कीक कारण विकासकेँ समाज भेटब छल आकि किछु आन छल से तँ विकासे जानत, मुदा बुझि पड़ल जे जेना मनमे जेते भय छेलै तइमे किछु कमी एबे केलइ। मने-मन विकास अजमा नेने छल, से बेवस्थाक रूप देखि अजमौलक, जे यहए ने हएत जे जे जमा-जिगिर, माने पेंशन भेटै-कालक मद सभ, अछि ओ छीना जाएत। मुदा दरमाहाक आधा पेंशन तँ भेटबे करत, ओना, पिताक देल आठ बीघा जोतसीम जमीन सेहो अछिए। बटेदारो सभ सदिकाल नाकर-नुकर करिते रहैए जे ऐबेर रौदी भऽ गेल तँ

ऐबेर दाही। अपन खेत लऽ लिअ। जँ काज करैक जिज्ञासा जागि जाए तँ ओ जीवन चलबे करत। विकास बाजल-

“जीवन भाय, जहिना बच्चासँ दुनू गोरे संगे खेलैत-धुपैत कौलेज तक बितेलौं तहिना आगूक दिन सेहो बिताबी, यएह अपन कामना अछि।”

बजलौं-

“मनक कामना जखन धरतीपर कर्म बनि उतरैए तखन अजीबो खेल सजीव बनि जाइए।”



शब्द संख्या : 2362, तिथि : 20 अगस्त 2021

नीक ठकान ठकेलौं

गाममे हाट लगने एते तँ सुविधा भइये गेल अछि जे अबेर-सबेर दुनू एकबट्ट भऽ गेल। माने ई जे आन गामक हाट रहने नियारि कऽ तैयारीक संग समयपर जाए पड़ै छल से आब नहि रहल। अपन सभ काज, माने परिवारक काज, समेट सूर्यास्तक पछातियो गेलासँ हाटक काज भइये जाइए। ओना, होइयोमे लाभ-हानि भइये जाइए। किए तँ गोटे हाट एहेन होइए जइमे कम वस्तु रहऽ कि बेसी, मुदा लेबालकेँ जुटने ओ वस्तु महग भइये जाइए, किए तँ शुरूक समयमे, हाट शुरू होइ-काल, जँ लेबालक जोर रहल तँ वस्तु धीरे-धीरे महग हुअ लगैए आ पतराएल लेबाल रहने वस्तुक मूल्य, खासकऽ काँच वस्तुक मूल्य, धीरे-धीरे कमए लगैए जे उसरान बेर अबैत-अबैत आरो कमि जाइए। जइसँ एते तँ देखबामे आबिये जाइए जे केना वस्तुक मूल्य[3] कमैए आ केना बढ़ैए।

सूर्यास्त भऽ गेल छल। घरमे रौतुका-जोकर तरकारी छेलए-हे तँए कनी निश्चिन्ती सेहो रहबे करए। दुआर-दरबज्जाक सभ काज समेट हाटपर विदा भेलौं। ओना, गाममे चारि-पाँच बेर पहिनौं हाट लगबैक विचार समाजमे भेल छल, दू मास तीन मास लगबो कएल, मुदा स्थायी रूपेँ नहि लगि सकल छल। मुदा साल भरि पहिने जे लागब शुरू भेल, ओ दिनो-दिन बढ़िये रहल अछि जइसँ एतेक बिसवास अपनो आ गामोक लोककेँ भइये गेलैन अछि जे आब सभ दिन, माने सालो-साल हाट चलबे

[3] **दाम**

करत। सपताहमे, पनरह दिनक हपता नहि, सात दिनक सपताहमे दू दिन- मंगल आ शुक्रकेँ हाट लगि रहल अछि। आइ शुक्र दिनक हाट छी।

गाममे हाट लगने दर्जनो बेराजगारकेँ चौथाइ रोजगारक अवसर भेटिये गेलैन। माने ई जे अट्ठाइस दिनक चारि सपताहक बीच आठटा हाट होइए, जइमे अपनो कारोबार करैक अवसर भेटते अछि। घरसँ आधा किलोमीटरपर हाट लगैए। तहूमे गामक टोले-टोल गेने हाटक दूरी बुझिमे एबे ने करैए।

रस्ते-रस्ते हाटपर जाइत रही, दिनमा कक्काक घर रस्ताक कातेमे छैन, मनमे उठल जे हाटक कि कोनो धड़फड़ी अछि, जखन ऐठाम तक आबिये गेल छी तँ दिनमो कक्काक भेँट कइये लेब। भेल तँ जेते-कालमे तमाकुल पर घुस्सा चलत तेते-कालमे कुशलो-क्षेम भऽ जाएत आ हाटक अबेरो ने हएत। दिनमा कक्काक घरक सोझे गेलौं कि दरबज्जा दिससँ आवाज आएल-

“नीक ठकान ठकेलौं.!”

तैबीच दरबज्जाक सोझे पहुँच गेल छेलौं। आवाज सुनि दरबज्जा दिस तकलौं तँ दिनमा काकाकेँ बैसल देखलयैन, दोसर कियो नजैरपर नहि पड़ला। मन गुन-धुन करए लगल जे असगरे दिनमा काका बैसल छैथ, जँ वएह बाजल होथि जे ‘नीक ठकान ठकेलौं’, तँ कहलखिन केकरा.? ओह! भरिसक दिनमा काका नइ बजला अछि। जँ दिनमा काका नइ बजला तँ दोसर अछि के जे बाजल.? तर्कक हिसाबसँ अपने दोखी बनए लगलौं जे भरिसक सुनबेमे अनसून भेल। मुदा से कानो मानए तखन ने। कान तँ अपन सीमापर डटल ठाढ़ अछिए जे ‘नीक ठकान ठकेलौं’ लगक आवाज छी।

तैबीच दिनमो काका रस्ता दिस तकलैन आ अपनो जे दरबज्जा दिस तकैत रही कि दुनू गोरेक आँखि-मे-आँखि टकराइते कान अपन मुँह

चुप केलक। फरिक्केसँ बजलौं- “काका, गोड़ लगै छी।”

दिनमा काका बजला-

“घुरन, असीरवाद नइ देबह। मुदा एते तँ कहबे करबह जे नीके रहह।”

दिनमा कक्काक असीरवादक कोनो अरथे ने लागल। जखन नीके रहैले कहि देलैन तखन बाँकीए की रहल जे नहि कहता। मन भेल जे दोहराकऽ पुछिऐन जे ‘किए ने असीरवाद देब काका?’ मुदा मन मानियेँ ने रहल छल। संयोग बनल, दिनमा काका अपने दोहराकऽ बजला-

“नीक ठकान ठकेलौं, घुरन।”

कहि चुप भऽ गेला आ थोड़े काल चुप रहला पछाइत पुन: दोहराकऽ बजला-

“बइसैयोले की कहबह, एहेन समयसँ पचास बर्खक पछाइत भेँट भेल अछि।”

अपन बात दिनमा काका समाप्तो ने केने छला कि बिच्चेमे बजलौं-

“काका, अहाँकेँ तँ पचास बरख पहिलुका देखल-भोगल समय अछि तँए पार होइमे कोनो बेसी तरद्दुत नहि हएत, मुदा अपना तँ पहिल बेर एहेन समयसँ भेँट भेल अछि से अबूह बुझि पड़ैए जे जीब कि मरब से ठेकानेपर ने चढ़ैए।”

तैबीच तमाकुल चुना दिनमो काकाकेँ देलिऐन आ अपनो ठोरमे लेलौं। कोनो अमलक एहेन सुभाव अछिए जे अमलपान करैसँ पहिने ओ अपना दिस खिंचैए, जेकरा पूर्तिक लेल लोक पैघ-सँ-पैघ अपराधियो बनैए आ अपराधो तँ करिते अछि। मुदा वएह अमल जखन पूर्ति होइए तखन दुनियाँ दिस तकैबते अछि। सएह अपनो भेल आ दिनमो काकाकेँ भेलैन। ओना, दिनमा कक्काक मनमे विचारक चकभौर चलिये रहल छेलैन मुदा अपन तँ हाटक बाटक विचार छी। दुपहरक पछाइत जहिना

हाट लगैए आ साँझ पड़ैत-पड़ैत उसैर जाइए तहिना अपनो हाट-बाटक विचार छीहे। पचास बरख पहिने केहेन समय भेल छल आ ऐबेर केहेन समय भेल से अपने थोड़े तुलना कऽ सकै छी, ओ तँ दिनमे काका कऽ सकै छैथ। तैपर धियाने ने रहल। ओना, तमाकुलक सेव मन तक पहुँच गेल तँए आरो गप-सप्प करैक मन भइये गेल अछि। दिनमा काका बजला-

"घुरन धड़फड़ीमे ने ते छह?"

बजलौं-

"जे धड़फड़ी अहाँ कहै छी, से नहि अछि। किए तँ रौतुका तरकारी घरमे अछिए, काल्हि-परसू ले लेब।"

दिनमा काका बुझि गेला जे दस-बीस मिनट गप-सप्प कएल जा सकैए। फेर लगले अपने मनमे भेलैन जे पचास बरख पैछला बात जँ पहिने शुरू करब तेकरा आइ धरि अबैमे बहुत समय लागत। माने गप-सप्पक क्रममे, तखन तँ अखुनका विचारे पछुआ जाएत.! आ जखने अखुनका विचार पछुआ जाएत तखने औझुका समये दुरुपयोग भऽ जाएत। से नहि तँ अखन जे टटका समस्या अछि तैपर विचार करैत पाछू मुहेँ बढ़ब बेसी नीक हएत। अपन मनक विचारसँ दिनमा काका तिरपित भऽ हमरा तिरपित करैत बजला-

"कौल्हुका-परसुका तरकारी कीनबह, सएह ने हाटक काज छह?"

बजलौं- "हँ।"

दिनमा काका बजला-

"केते गोरे हाटपर जेबे करत, केकरो पाइ आ झोरा दऽ दिहक, ओमहरसँ नेने औतह, तैबीच अपना दुनू गोरे गपो-सप्प कऽ लेब।"

ओना, दिनमा कक्काक विचार मनमे जँचल मुदा अपने मन ईहो कहए जे जँ कियो हटवाह नहि भेटत तखन तँ काज हूसिये जाएत किने।

काजक रूपक बिसवास जखन मनमे जगै छै तखन ने मन बिसवास करैए जे एहेन काज करैमे केतौ राहु-केतुक प्रकोप नहि हएत। आ जँ हेबो करत तँ ओकरा ठेललो जा सकैत अछि। मन झुझुआइये रहल छल। ओना, तमाकुलक खुमारी गप-सप्प करै दिस मनक विचारकेँ ठेलिये रहल छल। मुदा तइ बिच्चेमे अपन झुझुआइत मनकेँ देखि पुन: दिनमा काका बजला-

"घुरन, एक्के काजे दुनियाँ नइ ने चलैए। विचार आ बेवहार अर्द्धनारीश्वर बनि जाबे नहि चलत, ताबे जँ चलबो करत तँ चलिये केते दिन सकत। कखनो विचार बेवहारकेँ ठेलत तँ कखनो बेवहार विचारकेँ ठेलत।"

ओना, दिनमा कक्काक विचार नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, मुदा मात्राबद्ध गीत जकाँ मनक प्रवाह प्रवाहित होइत मुहसँ निकैल गेल-

"हँ, से तँ नहियेँ चलि सकैए।"

तैबीच दिनमा काकाकेँ एकटा जुक्ति आरो मोन पड़लैन। मोन पड़िते बजला-

"घुरन, लौफावालीकेँ कहि देने छिऐ जे हाटसँ घुमै बेर हमरा-ले सजमनि आ घेरा नेने आएब। तहीमे आधा तोहूँ लिहह। जँ बँटलासँ कम हएत तँ कहि देबै जे कौल्हुका-जोकर ने भेल मुदा परसू तँ खगबे करत। हाटक अतिरिक्त अँगने-अँगने सेहो बेचिते छी, दुनू गोरे ऐठाम काल्हि बेरोमे दऽ देब।"

दिनमा कक्काक काजक सूत्रवत विचार देखि अपनो मन कहलक जे मनुक्ख जँ मनुक्खक अग्रिम काजक विचारपर बिसवास नहि करत तँ संग मिलि चलिये केते दिन सकैए। सोल्होअना बिसवास दिनमा कक्काक विचारपर करैत बजलौं-

"काका, अहूँ बड़ जोगारी छी।"

ओना, दिनमा कक्काक मनमे लहरलैन जे जीवनमे जोगारक की

महत्व अछि से घुरनकेँ कहि दिऐ। मुदा फेर अपने मन रोकलकैन जे समय कम अछि आ प्रश्न-पर-प्रश्न उठबैत जाएब, तखन तँ यएह ने हएत जे कोनो प्रश्नक समुचित उत्तर नहि दए सकब। तहूमे अखन कोन जरूरी अछि जे विद्यार्थीक पढ़ैक जोगार, किसानक खेतीक जोगार, वेपारीक वेपारक जोगारक चर्च अनेरे करब। अखन तँ मात्र एतबे चर्च करब नीक हएत जे अखुनका जे जनमारा समय बनि गेल अछि तइमे पार-घाट केना लगत। बीतल तँ बीतिये गेल, जे पुन: घुमिकऽ नहि औत आ जे काल्हि औत तइले काल्हि अछिए। दिनमा काका बजला-

"ऐबेर नीक ठकान ठकेलौं, घुरन।"

ओना, मनमे भेल जे दिनमा काकाकेँ कहि दिऐन जे जाबे लोक ठकाइ नहि अछि ताबे ठकविद्याक बोध नहि होइ छै, किए तँ अपन कर्मक परखलहा बेसी मजगूतीसँ काज करैए। मुदा फेर अपने मन कहलक जे नवका विद्यालयक बच्चा सभ जकाँ अपने नहि ने छी जे परिवारक धार बुझबे ने करब आ बहरवैया रूपक धार बना बहरवैया बनि जाएब। अखनो गमैया[4] घीक बराबरी बहरबैया घी थोड़े कऽ सकैए। बजलौं- "से की कक्का?"

'से की' सुनिते दिनमा कक्काक मन उत्तर दइले ठनैक उठलैन, मुदा एक्के-दुइये अनेको प्रश्न सोझामे आबियो गेल छेलैन आ आबियो रहले छेलैन तँए प्रश्नकेँ जोड़ियबैत बजला-

"घुरन, एकटा प्रश्न भेल पचास बरख पूर्वक समयक समस्या, माने 1971 इस्वीक मौसम, आ दोसर भेल 2021 इस्वीक मौसम। एहने दोसर अछि 1934 इस्वीक भुमकमक समय आ 1988 इस्वीक भुमकमक समय। दुनूक दूरी सेहो करीब-करीब पचास-पचपन बर्खक बीच अछिए। मुदा से सभ अखन नहि, अखन एतबे जे रियेक्टर पैमानाक, माने भुमकम

---

[4] **स्वदेशी**

नपैबला, जे संख्या अछि ओकर एक अंकक माने भेल तीस हजार गुणा अधिक शक्तिशाली।"

भूगोलसँ कहियो अपन मिलान नहि रहल, तँए मनमे अकच्छ सेहो लगिये रहल छल, मुदा से अपना माननै थोड़े हएत। दिनमा काकाकेँ बजैमे जे सुविधा हेतैन तही हिसाबसँ ने बजता। पुछलयैन-

"की नीक ठकान ठकेलौं, काका?"

ओना, दिनमा कक्काक एक मन भीतरे-भीतर कहैन जे साए रुपैयाक कोन मोल अछि, जँ ठकेबे केलौं तँ पेटे-ले ने ठकेलौं। मुदा दोसर मन लगले ललकारए लगलैन जे बीत भरिक पेट भरैले लोक अधला-सँ-अधला वृत्ति किए अपनबैए। जँ अपनबैए तँ ओकर सामाजिक विरोध होइ, मुदा से तँ हएत समाजकेँ बुझनहि। जखन क्रिया[5] आ आवाजकेँ[6] संग-संग देखत आ देखि कऽ बुझत..।

दिनमा काकाकेँ फेर अपने मनमे उठलैन जे जखन घुरनकेँ ठकाइक कारण बुझैक इच्छा छै तँ पहिने सएह बुझा दिऐ। बुझबैक विचार मनमे उठए लगलैन कि तइ बिच्चेमे एकटा तहियाएल दाबल विचार अगुआ कऽ उठि गेलैन। उठि ई गेलैन जे बेकतीक बीच वा समाजक बीच जे ठकैक चलैन अछि ओ एक्के रंग आ एक्के स्तरक थोड़े अछि। ओ तँ अनेको रंगो आ स्तरोक अछिए। केतौ बाल-बोधकेँ कनैकाल वौसैले माए-बाप हवा जहाजसँ हाथी अनै धरिक बात कहि चुप करै छैथ तँ केतौ जनकक जनवासक चर्च करैत समाजकेँ नहि ठकल जाइए सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए। से कोनो एक्के क्षेत्रमे अछि से बात नहि, जीवनक हर क्षेत्रमे अछि।

---

[5] **काज**

[6] **बोलीकेँ**

..विचारक वनमे बिचड़ैत दिनमा कक्काक मन जेना ठेहिया कऽ एकटा पीपरक गाछ लग अँटैक गेलैन। पीपरक गाछकेँ जहिना चौबीसो घन्टाक, माने दिन-रातिक, स्वस्थ हवाक[7] दाता कहि पूजल जाइए तहिना दोसर दिस ईहो तँ अछिए ने जे ने आम सन फल फड़ैक शक्ति छै आ ने चुल्हिमे भानस करैक जरनो बरबैर अछि। तहिना वरोक गाछकेँ देखिते छी जे जहिना हजारो बर्खक पछुआएल जीवनकेँ समाज अडैञ्ज रखने अछि तहिना ने पँच-पँच हजार बर्खक वरक गाछ बटवृक्ष बनि रस्तापर ठाढ़ो अछिए। जेकरामे ने सुगन्धित फूल छै आ ने रसगर फल। मुदा ओकर जरूरत नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए, जे बैशाख-जेठक सूर्यक जरबैत रौदसँ मनुक्खो, मालो-जाल आ चिड़ैयो-चुनमुनीक शरणस्थली बनियेँ जाइए। ..दिनमा काका बजला-

"घुरन, ठकाएल तँ गामक बहुत लोक, मुदा अपन ठकाइक कारण, आनसँ किछु भिन्न अछि, तँए नीक ठकान ठकेलौं।"

दिनमा कक्काक विचार कनी-मनी बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियोँ बुझलौं। पुछलयैन- "से केना कक्का?"

दिनमा काका बजला-

"घुरन, जहिना कोनो खेतक जजातकेँ नोकसान करैबला अनेको कीड़ी-फतिंगीक संग अनेको तत्त्व सेहो अछि, मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे ओ कीड़ी-फतिंगी खेतक माटिमे जनैम कऽ फड़ल आकि बाहरसँ[8] आएल, तेकरा तँ बुझए पड़त किने।"

विचारक प्रवाहमे बिनु विचारनहि बजा गेल- "उचिते किने।"

दिनमा काकाकेँ जेना बाट भेट गेलैन तहिना बजला- "घुरन, गाम तँ गामे छी, ने ठकनिहारक कमी अछि आ ने ठकेनिहारक, मुदा अखन जे

[7] **ऑक्सीजन**

[8] **दोसर खेतसँ**

ठकेलौं से दोसर ठकान छल तँए नीक ठकान ठकेलौं।"

दिनमा कक्काक विचार भाँजपर चढ़बे ने कएल। आधा सौन बीत चुकल अछि, अपना ऐठामक राजाफल आम छीहे। जखने फूलसँ निकलैए माने मोजरसँ दाना बनैए तखनेसँ चटनीक रूपमे लोक खाएब शुरू करैए। पछाइत अनेको तरहक विन्यास बनिते अछि। जखन अधपक्कू होइए, माने बोनाइए वा जरि-मरिकऽ चोकरो होइए, तखनसँ लोक ओकरा फलक रूपमे खाए लगैए। जइसँ जेठसँ शुरू करैत अखाढ़ अन्त करैए। से भेबो कएले अछि। आमक फसलमे कमी एबे कएल अछि। तेकर अनेको कारण अछि, से अखन नहि। ओना, वैज्ञानिक तकनीकक विकास भेने, बढ़ोतरी अछि, अखन से नहि, अखन एतबे जे जे आम गिनतीमे बिकाइ छल ओ किलोक तौलमे बिकए लगल अछि। ऐ सालक शुरूमे तँ साएक एक किलोक हिसाबसँ आम बिकब शुरू भेल मुदा साएक तीन किलोपर दर बन्हा गेल जे अन्त अखाढ़ धरि बनल रहल।

दिनमा काका बजला-

"घुरन, आधा सौन बीत गेल, परसू नाग पञ्चमी सेहो छी। एक-डेढ़ मासक आम खाएल मन आम देखि लपकबे-ललचबे करत किने।"

बिच्चेमे बजा गेल-

"काका, जखन पानिक कुमुदनी अकासक चान पकैड़ सकैए तखन तँ बीचक पनरह दिन, माने अखाढ़क अन्त आ आधा सौन, तँ किछु ने भेल। मन किए ने ललचत-लपकत।"

दिनमा काका बजला-

"बेसी गप-सप्प करए लगब तँ असलाहा बात छुटि जाएत। तँए बाइली गप-सप्पकेँ छोड़ह।"

दिनमा कक्काक विचार नीक लागल। बजलौं- "हँ, छोड़ू फजिलाहा

गप, जे भेल तेतबे गप करू।”

दिनमा काका बजला-

“दिनक दू बजै छल, एकटा चरिचकिया गाड़ीबला आबि रोडपर मैकसँ प्रचार करए लगल जे साएमे तीन किलो, माने एक साएमे तीन किलो, तीन किलो आम लिअ.! लँगड़ा बम्बई छी.! तेते जोरक अवाज छल जे नीन टुटि गेल। भकुआएलेमे साएक नोट आ एकटा झोरा लेलौं आ गाड़ी लग पहुँच गेलौं। पुछलिऐ जे कोन आम छिअ। कहलक जे लँगरा बम्बै छी। आधा किलोसँ ऊपरक आम। माने तीन किलोमे पाँचटा भेल।”

बिच्चेमे बजा गेल-

“गामक लोककेँ बिसरल आमक फल भेटिये गेल।”

ओना, अपने आमक नीक शील-गुण मनमे राखि बाजल छेलौं मुदा दिनमा कक्काक मन जेना तरैंग गेलैन। बजला-

“पछाइत जखन पता लगेलौं तँ पता लागल जे तीस क्वीन्टल आम भिनसर-सँ-साँझ धरिमे गाममे बेच लेलक। माने लाख रुपैआसँ ऊपरक सौदा कऽ लेलक।”

संयोग एहेन भेल छेलै जे ने अपने आम लेलौं आ ने आम दिस नजैरिये बढ़ेलौं। तँए कोनो बात नीक जकाँ बुझल नहियेँ छल। डेढ़-दू माससँ ते केतेको आमक वेपारी गाममे आबि-आबि आम बेचनहि छल। ओना, गामक लेल ई दुखद पहलू भेबे कएल जे गाममे आमक गाछी, कलम-गाछी भेल सरही आमक, आ कलम भेल कलमी आमक, गामो आ समाजोक हिसाबसँ बेसी अछिए, मुदा गाममे ओते आम नहि फड़ल जइसँ गामोक लोककेँ पूर्ति होएत। खाएर जे भेल, से भेल। अखन एतबे। तेना भऽ कऽ गामक सूर-पता नहियेँ रहैए। अपने तेहेन फेदरैतमे पड़ि गेल छी जे गामक कि खोज-खबर राखब। कोनो बातक जानकारियो

नहियेँ रहैए। मुदा दिनमा कक्काक हिसाब सुनि, बिनु हिसाब जोड़नहि बजा गेल-

"से तँ कइये लेलक।"

हमरा विचारसँ दिनमा काकाकेँ की सह भेटलैन से तँ वएह जनता मुदा मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे जेना हुनका भरपूर सहयोग भेटल होइन। बजला-

"घुरन, गामे-गाम ओ वेपारी सभ आम बेचलक। करोड़ो रुपैआ ठकिकऽ इलाकासँ ओ सभ लऽ गेल।"

अपनो मने-मन जखन हिसाब जोड़ए लगलौं तँ बुझि पड़ल जे लाख रुपैआ जँ एक गाममे ठकलक, तँ सइये गाममे करोड़ पूरि गेल। बजलौं-

"कक्का, कनी फरिछा कऽ कहियौ।"

दिनमा काका बजला-

"घुरन, बुझैले ते बहुत बात अछि मुदा से नहि कहए लगबह। अखन मात्र दुइयेटा बात कहबह।"

अपनो बेसी बुझैक उत्कंठा नहियेँ छल, बजलौं-

"बड़बढ़ियाँ।"

दिनमा काका बजला-

"ओ जे आम पूर्वांचल इलाकाक छल, माने आसाम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर इत्यादि। अपना ऐठामक आम आ ओइठामक आममे अकास-पतालक अन्तर अछि। भलेँ देखैमे एक्केरंग किए ने हुअए।"

बजलौं-

"जखन अहाँकेँ ऐठाम-ओइठामक आमक गुण-अवगुण बुझल छल तखन किए.?"

अनका जकाँ दिनमा काका अपन कमजोरीकेँ विचारक दवाबमे नहि छिपौलैन। अपन बुझल विचार स्पष्ट रूपेँ खोलैत बजला-

"घुरन, बुझब दू तरहक होइए। एकटा होइए सुनलाहा बुझब आ दोसर होइए आँखिसँ देखलाहा वा हाथसँ केलहा। अपन बुझब छल सुनलाहा, तँए आमक शील-गुण तँ सुनल बुझल छल मुदा ने देखल छल आ ने खाएल छल। संयोग एहेन रहल जे जहिया कहियो ओमहर गेलौं तँ ओ आमक मास नहि छल।"

बजलौं-

"दुनू ठामक आममे की भेद अछि?"

दिनमा काका बजला-

"अपना ऐठामक आमक जे शील-गुण अछि से तँ बुझलो छह आ देखबो करिते छह तँए अपना ऐठामक आमक चर्च नहि करब।"

अपनो नीक बुझाएल, बजलौं-

"हँ-हँ, अपना ऐठामक आमक तँ सभ शील-गुण बुझले अछि तँए छोड़ि दियौ।"

दिनमा काका बजला-

"पहिने आमक शील-गुण कहि दइ छिअ, पछाइत अपन सुनल बुझलक चर्च करबह। ओइठामक माने पूर्वांचलक आमक गाछ अपने सभक आमक गाछ जकाँ होइए। बड़का-बड़का गाछ सभ ओइ इलाकामे अछि। पकैसँ पहिने तक आम अपन शील-गुण धेने रहैए मुदा पकला पछाइत बदैल लइए।"

दिनमा कक्काक विचार नीक जकाँ भाँजपर चढ़बे ने कएल। चढ़बो केना करैत जहिना गाछ-पात एक्केरंग तहिना फूल-फड़, माने मोजर आ दाना, जेकर एकरंग रहत तेकर शील-गुण केना दोसर रंग भऽ जाएत।

बजलौं- “से केना बदैल लइए, काका?”

दिनमा काका बजला-

“ओना, पूर्वांचल दू बेर गेल छी, एकबेर त्रिपुरामे पनरह दिन रहल छी। मुदा आम नहि देखि पेलौं।”

‘त्रिपुरा’ सुनि जिज्ञासा बढ़ल। बजलौं-

“त्रिपुरा कोन काजे गेल रहिऐ?”

दिनमा काका बजला-

“देखै-सुनै-घुमैक काजे गेल रहिऐ। अपनो भूगोलक विद्यार्थी रहने देखैक जिज्ञासा छेलए-हे तैपर काली भाय, माने कछुबीक कालीकान्त झा- जे आई.पी.एस. छला, ओ अपन जिनगी[9]क शुरूआत आ अन्त ओतइ केलैन। साधारण डी.एस.पी. सँ डी.जी.पी. भऽ सेवा निवृत्त भेला। सालमे एक मासक छुट्टीपर गाम आबैथ। वएह बेर-बेर कहैथ जे त्रिपुरा आउ। एक तँ ओहुना काली भाय परिवारक विद्रोही छेलाहे, विद्रोहीक कारण पुरान परम्पराक विरोध करब छेलैन। तैपर समाजमे माने गाममे, साधारण परिवारक लोक रहने अगुआएल परिवारक लोक सेहो हुनकासँ मुँह फुलौनहि रहै छेलैन। तँए जाबे धरि गाममे रहै छला ताबे धरि हुनकासँ अध्ययन करैक मौका भेटिये जाइ छल। भूगोलमे शत-प्रतिशत नम्बर अननिहार विद्यार्थी काली भाय अपनो छला, तैपर पूर्वांचलक भौगौलिक अध्ययन आरो भरपूर छेलैन। वएह कहलैन जे ऐठामक आम जखन पाकब शुरू करैए तखन ओइमे स्वत: पील भऽ जाइए जइसँ एकोटा आम खेबा-जोकर नहि होइए।”

दिनमा कक्काक बात सुनि मन कहलक जे जइ पूर्वांचलकेँ पहाड़ीक

---

[9] **नौकरी-जिनगीक**

बासी बुझि सज्जन इमानदार मानै छी से तँ सोल्होअना ठकि लेलक। बजलौं-

“आब की उपाय?”

दिनमा काका बजला-

“जे ठका गेलौं से तँ चलि गेल मुदा आगूक लेल चेती।”



शब्द संख्या : 2798, तिथि : 25 अगस्त 2021

केकरो भरोस

परसू कछुआ हाटपर सनतन भाय भेटला। बहुत दिनसँ माने जहियासँ पानि-बुन्नीक झड़ी लधलक तहियेसँ, माने ई जे पैछला तीन माससँ सनतन भाय भेँट नहि भेल छला।

अपना सभक, माने अपना गाम सभक, कछुआ हाट प्रमुख हाट रहल अछि। सपताहमे दू दिन हाट लगैए जे मासमे आठ-नअ दिन भेल, तइमे एहेन कोनो दिनक हाट शेष नहि बँचै छल जइमे पचीस-तीसटा वेपारी आ सइयो हटवाह, हटवाह भेला हाटमे चीज-वौस कीनिनिहार, जे अपन लेन-देन नहि करै छला। समय आगू बढ़ने कछुआ हाटक मुहोँ-कान आ कारोबार सेहो अगुएबे कएल अछि मुदा अपना गामक सम्बन्ध कमिकऽ शून्योसँ निच्चाँ उतैर गेल अछि। ओना, हाटक लेनो-देन आ लोकक आवाजाही सेहो बढ़बे कएल अछि। जहिना कहियो कछुआ हाट गामक प्रमुख हाट बुझल जाइ छल तहिना अखन अपना गामक झंझारपुर हाट बुझल जाइए। ओना, झंझारपुर हाटकेँ कछुआ हाटक अपेक्षा आरो बेसी सुविधा छै, जइसँ बढ़ब सोभाविके अछि। कछुआ हाटक चौवगली गाममे तीमन-तरकारीक खेती भेने हाट चलैए जखन कि झंझारपुरक हाट बाट आ बाजार रहने अछि।

कछुआ हाट जेबाक इच्छा ऐ दुआरे भेल जे जहियासँ छोटी लाइन[10]क गाड़ी बन्न भेल, तहियासँ ने तमुरिया गेल छेलौं आ ने कछुआ

[10] **मीटर गेज**

हाट। दूर सफर करैबला छीहे नहि, माने कोनो काजे ने होइए, मुदा निर्मली-सँ-झंझारपुर धरिक खगता तँ बेसीकाल होइते अछि, तँए एतबे दूर सफर करै छेलौं, सेहो बन्ने भऽ गेल। जहिया छोटी लाइनक जगह बड़ी लाइनक गाड़ी चलत तेकर जे उद्घाटन भेल ओ आइसँ बीस बरख पहिने भेल, तहिया अपन उमेर आइसँ बीस बरख पहिलुका छल, तँए मनमे तुष्टिक आशा जगने सन्तुष्टि भेबे कएल छल, मुदा बीस बर्खक पछाइत आइ जखन अपन शरीर गाड़ी सफर करै-जोकर नहि रहल, तखन तमुरिया स्टेशनक द्वार खुजैक सम्भावना बनि रहल अछि। एकाएक मन बीस साल पाछू घुसैक ओइ समयक जिनगीपर गेल जखन तमुरिया स्टेशन प्रतिदिन बेरू-पहरमे टहलैले जाइ छेलौं, ओ बीरान भऽ गेल, केकरो भरोस केते समय लोक कऽ सकैए। सनतन भायकेँ देखलयैन तँ बुझि पड़ल जे केतौ दूरसँ अबै छैथ किए तँ दूरक यात्रीक लक्षण दोसरे रंगक भऽ जाइए। सनतन भाय लग जा बजलौं-

"भाय, हाटक काज भऽ गेल कि पछुआएल अछि।"

किए कहितिऐन जे अहाँ कोनो धाम वा आन गामसँ अबै छी तँए पहिने परसादी दिअ आकि सनेस खुआउ। हाटक काज सनतन भायकेँ तखन रहितैन जखन गामपर सँ, माने घरपर सँ, नियारिकऽ हाट करैले गेल रहितैथ। से तँ छेलैन नहि। बाहरसँ अबै छला, संयोगसँ हाटक दिन छल, हाट लगल छल। सनतन भाय बजला-

"भेले सन बुझह।"

बजलौं-

"अपना गाम सभमे ते तीमन-तरकारीमे आगि लगि गेल अछि। महगो जँ भेटए तखन ने, से तँ भेटबे ने करैए। अल्लू खाइत-खाइत मोटैनी सेहो पकैड़ लेलक आ मन सेहो अकछा गेल अछि। तँए हरियर तरकारी ले एलौं हेन। ऐ इलाकामे तीमन-तरकारीक खेती बेसी होइते छइ। लगले

हमहूँ कीनि लइ छी आ दुनू भाँइ गप-सप्प करैत संगे चलब।”

सनतन भाय सेहो तीन दिनक सफरमे असगरे गौंआँ छला तँए गप-सप्प करैक मन बनल छेलैन्हे। अनगौंआँक संग लोक जी-जाँतिये कऽ ने गप-सप्प करै छैथ मुदा गौंआँ-घरूआक संग तँ से नहि होइए। ओ तँ जीह खोलि कऽ गप-सप्प करैबला होइते छैथ। सनतन भाय बजला-

“ताबे हमहूँ तमाकुल चुनबै छी, तोरो सिदहा लगा दइ छिअ।”

ओना सनतन भाय ई कहलैन जे ‘जल्दी काज निपटाबह’ आकि ‘पाँच मिनटसँ बेसी नहि रूकबह।’ ओ काजक घड़ीक हिसाब बैसा बाजल छला। समय नपैक एकटा घड़ी काजो छीहे। सनतन भाइक विचार सुनि अपन मन अपन काजकेँ पाँच मिनटमे बान्हि देलक। ऐठाम ई नहि कहि रहलौं हेन जे अपन जीवनक लीलाक संकल्पक संग निश्चित अवधियोकेँ संकल्पित कऽ ली। तँए ईहो नहि बुझब जे कोनो संकल्प कऽ लेलौं, सरकारी काज जकाँ उद्घाटन कऽ लेलौं, मुदा काजमे हाथे ने लगल..! तखन ओ हएत केना।

काजो बेसी नहियेँ छल, बगलेमे जे तरकारीक दोकानदार छल ओकरे लग जा दू किलो रामझिमनी आ तीन किलो घेड़ा दइले कहलिऐ। कारबारी लोक छेलए-हे, अन्दाजेसँ तेना तराजूपर चढ़ौलक जे एक्के तौलमे तरकारी तौला गेल। कनडेरिये आँखिये सनतन भाय सेहो देखिते छला। झोरामे तरकारीकेँ सेरियबैत देखि सनतन भाय तमाकुलमे थोपड़ी देलैन। अपनो दोकानदारकेँ पाइ दऽ जुमि गेलौं। लगमे अबिते सनतन भाय बजला-

“आरो कोनो काज छह आकि भऽ गेलह।”

बजलौं-

“भेले सन बुझू।”

हमर बात सुनि सनतन भाइक मन आगू-पाछू हुअ लगलैन। आगू-

पाछू होइक कारण भेलैन जे एकटा मन कहैन जे 'भेले सन'क माने सोल्होअना नइ भेल। दोसर मन कहैन तखन 'भेल सन' किए बाजल.? मन तेना ओझरा गेलैन जे अन्तो-अन्त सनतन भाय निर्णय नहियेँ कऽ सकला जे 'हँ' भेल कि 'नहि' भेल। अज्ञानी जकाँ सनतन भाय बजला-

"से की?"

बजलौं-

"भाय, जँ अहाँ तमाकुलक चर्च नहि करितौं तँ अपन विचार छल जे तरकारी कीनि पान खा हाटपर सँ घुमितौं, माने विदा होइतौं। मुदा जखन अहाँ तमाकुल चुना लेलौं तखन पान नहि खाएब।"

'पान'क नाओं सुनि सनतन भाइक मन अपनो चटपटेलैन मुदा पान रखनिहार छैथ नहि, दोसर, रस्तामे पाइ तेना सठि गेल छेलैन जे पानो-जोकरक जेबीमे नहि रहलैन तँए तमाकुलेसँ काज चला रहल छला। जहिना कोनो काजकेँ अज्ञान सज्ञान दुनू भाँइ मिलिकऽ करैए तहिना सनतनो भाय अपन पार-घाट लगा लेलैन। मुदा काजो तँ काज छी, हाटपर पार-घाट ने लगि गेल मुदा आगू तँ तमुरिया स्टेशन बीचमे अछिए। सनतन भाय बजला-

"तमाकुलो कि कोनो अमले छी, मुँहमे दियौ आ थुकैर कऽ फेक दियौ। रघुनाथक दोकानक पान खेना बहुत दिन भऽ गेल, ओतइ पान खाएब।"

'रघुनाथक पानक दोकान' सुनि अपन मन बीस बरख पाछू गुड़ैक गेल। मोन पड़ल रघुनाथक पिता- सुकदेवक लगौल पान। घर-घर, परिवार-परिवार तँ पान लगौलो जाइए आ खेबालो छथिए, मुदा पान लगबैक सूत्र सभकेँ थोड़े बुझल छैन जे पानक पात केहेन होइ, ओइमे केते चुन आ केते खाएरक संग सुपारियो आ मसल्लो पड़त। से तँ करै नहि छैथ, करै छैथ ओहिना जहिना कुरता कटि गोलगला बनल आ गोलगला

कटि फत्ती बनल। जँ पानक पात नहि हुअए तँ पानक डंटीएमे चुन लगा खा लिअ। जँ खाएर नइ रहए तँ चूने-सुपारीसँ काज चला लिअ आ जँ सुपारियो नइ रहए तँ चुने-खाएरसँ काज चला लिअ। ..रघुनाथक पिता सुकदेव पहिले-पहिल पानक दोकान तमुरिया स्टेशनपर शुरू केलैन। अपने बरेब करै छला, दोकान करैसँ पहिने वेपारी हाथे पान बेचै छला, पानक अपन दोकान करैक विचार मनमे जगलैन आ दोकान शुरू केलाह। सुकदेव भूमिहीन लोक छला। मुदा एहेन जातिमे जन्म नेने छला जे जाति पानक खेतीसँ जुड़ल अछि। अपना खेत नहि रहने सुकदेव पोखरिक कातमे दू कट्ठा खेत मनखप लऽ पानक खेती शुरू केलैन। पानक खेतीकेँ बरहबरखा खेती कहले जाइए। एक बेर रोपू, बारह बरख धरि ओही रोपल जड़िसँ काज चलैत रहत। ई दीगर भेल जे किनको खेती दुइये-तीन बर्खमे उपैट जाइ छैन आ किनको बीस-बीस बरख चलै छैन।

पाँच कोरवासक पचीस आँतर बरेब सुकदेवकेँ छेलैन, जइमे सालो भरि एक दुपहरिया, माने भिनसरसँ दुपहर धरि, काज अपन ठाढ़ भेल छेलैन। बरेबक आमदनियोँ ओहन छेलैन्हे जइसँ परिवार चलै छेलैन। बेरूका समयकेँ खाली देखि सुकदेव तमुरिया स्टेशनपर, कठघरा बैसा पानक दोकान शुरू केलैन, जइसँ परिवार चलबैत बाल-बच्चाकेँ गामक स्कूल धरि, तमुरियामे हाइ स्कूल तक अछि, पढ़ेबो-लिखेबो केलैन आ बिआहो-दान कइये लेलैन। सुकदेव मरि गेला हुनकर बेटा रघुनाथ अखन दोकान चलबै छैथ।

कछुआ हाटपर सँ विदा भेलौं। हाटक गल-गुल जखन कानमे कम आबए लगल तखन बजलौं-

“सनतन भाय, केतौ बाहरसँ अबै छी?”

सनतन भाय बजला- “हँ।”

बजलौं- “केतएसँ अबै छी?”

सनतन भाय बजला- “जहिना काठमांडू गेलापर पशुपतिनाथक दर्शनो आ सुखठीक वणिजो भऽ जाइए तहिना हमरो भेल।”

की भेलैन सनतन भायकेँ, आनक तँ बजला मुदा अपन बजबे ने केलाह। बजलौं-

“दोहरी लाभ भेल भाय आ खुलिकऽ बजलौं अदहो नहि।”

सनतन भाय पारखी लोक छथिए। जहिना पारख करैक लूरि खेती-पथारीक छैन तहिना लोकक पारखी सेहो छथिए। सनतन भाय बजला-

“महपुर गेल छेलौं।”

‘महपुर’ सहरसा जिलामे कारू खिरहरिक स्थानक नाओंसँ जानल जाइए। बजलौं-

“भाय, कहलिऐ काठमांडू जकाँ दोहरी लाभ भेल?”

ओना, जी-जाँतिये कऽ बाजल छेलौं। बजैक कारणो अछि। सनतन भाय अपने ओहन लोक छैथ जे जे बजैबला बात वा विचार अछि ओ अपने फुरने बजै छैथ, तैठाम पुछैक प्रश्ने की अछि। दोसर, हमहींटा नहि, गामक सभ हुनका आदरक दृष्टिसँ देखै छैन तँए मुँह दाबिये कऽ सोझामे बजै छैथ। सनतन भाय बजला-

“अपन दरभंगा जिलाक पूब-दच्छिनक कोणमे कुशेश्वर स्थान अछि, आ तइसँ थोड़बे आगू सहरसा जिलाक पच्छिम-दच्छिन कोणमे कारू बाबाक स्थान सेहो छैन। कमलाक पूबरिया छहर पकैड़ गेल छेलौं, जइसँ कुशेश्वर होइत महपुरा गेलौं। ओही बीचमे कमलो आ कोसियो दुनू बहिन एकठाम भेल छैथ।”

बजलौं-

“भदबरिया मास जे गेल छेलौं से शिवरातिमे किए ने गेलौं जे सुखारक समय रहने रस्तो घाट नीक भेटैत।”

अपन इमानकेँ बँचबैत सनतन भाय बजला-

“मनोहर, साले-साल जहिना कोसीक बान्ह आ कमलाक छहर टुटै छल, से ऐबेर नहि टुटल, तँए रस्तो नीक अछिए।”

बजलौं-

“सनतन भाय, सरकारकेँ अहाँ चावस्सी दइ छिऐन?”

सनतन भाय बजला-

“पहिने ई कहि देबैन जे, सभ मानि रहलौं हेन जे एहेन बरखा 1971 इस्वीमे भेल छल, तेते बरखा भेल, पाइनिक भरमार भेल, जखन कि ऐसँ कम पाइनिक आमदनीमे आन साल बान्ह-छहर राँइ-बाँइ भऽ टुटि जाइ छल, तइसँ स्पष्ट भइये जाइए ने जे जेहेन काज हेबाक चाहै छल, से नहि होइ छल। मुदा ओ बीतल दिनक बात भेल, ऐबेर चावस्सीक पात्र तँ सरकार भेबे कएल।”

अपन कएल काजसँ जहिना मनमे भरपुर खुशीक आनन्द जगैए तहिना सनतन भायकेँ सेहो जगलैन। जइसँ एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे सनतन भाइक मनमे ओहन इलाकाक भदवारिक यात्रासँ खुशी उपकल होइन। माने ई जे सौन-भादोमे तीर्थ-यात्री पहाड़ी रस्ता पकैड़ बाबाधाम[11] जाइ छैथ, तैठाम सनतन भाय ओहन बाढ़ि-पानिक क्षेत्रमे एक जिलाक कोन बात जे दू जिलाक भ्रमण करि कऽ आएल छला। ..बजलौं-

“भाय, एना धड़फड़ा कऽ गेलौं, से जँ हमरो कहितौं तँ हमहूँ ने संग दइतौं।”

सनतन भाय बजला-

“बौआ, नियारैत-नियारैत आ संगीक भाँज तकैत-तकैत तँ जिनगी

[11] **देवघर**

अपन सीमापर पहुँच गेल। चालीस बर्खसँ नियारैत आबि रहल छेलौं। आ आबो संगीए आ भजैतियेक भाँजमे रहितौं, तँ जहिना कोलकातामे जिनगी भरि रहनिहार शान्ति निकेतन नहि देखि पबै छैथ। शान्ति निकेतन माने विश्व भारती, जैठाम रवि बाबू सन कबिरिया साधकक स्थापित कएल विचारधारा अछि। तहिना ने महपुराक कारू खिरहरिक स्थान नहि देखि पेबितौं। ओहन क्षेत्र जैठाम कोसी-कमलाक संगी अनेको छोट-मोट धारक क्षेत्र छी, तैठाम खिरहरि बाबा हजारसँ ऊपर गाए पोसने छला।"

बिनु देखल क्षेत्र अछिए, तँए मन बेसीकाल नहि अँटकल। पुछलयैन-

"भाय, हमरा तँ घरसँ निकैलते तेहेन थाल-पानि टपए पड़ैए जे घरसँ निकलैत डर होइए। तँए दरबज्जेपर सँ बैस सीता-राम, सीता-राम करैत रहै छी।"

सनतन भाय अपन मनक धुनिमे छला, तँए हमर बात सुनबे ने केलैन आकि धियाने ने देलैन, से तँ ओ जानैथ मुदा अपना धुनिमे बजला-

"मनोहर, धन्यवाद ओइ इलाकाक लोककेँ दिऐन जे एहेन कष्टकर जीवन अङेजने छैथ। हुनके सभकेँ की कहबैन जे सौंसे उत्तर बिहारेक यएह स्थिति अछि।"

पान खा तमुरिया स्टेशनसँ दुनू गोरे विदा भेलौं कि सनतन भाय तमुरिया स्टेशनकेँ गोड़ लागि बजला-

"मनोहर, एकटा समय छल, माने 1970 इस्वीसँ पूर्वक, जखन इलाकामे हाइ स्कूल कम छल, नेपाल तकक विद्यार्थी तमुरिया हाइ स्कूल पढ़ैले अबै छला, मुदा आजुक परिवेशमे शिक्षण संस्थाक क्षेत्रमे तमुरिया केते उठल से तँ तमुरियेक लोक ने अपना मनमे अँकता।"

ओना, सनतन भाइक विचारमे हूँहकारी भरैत रहलौं मुदा नीक

जकाँ बुझि नहि पेब रहल छेलौं जे सनतन भाय की बाजि रहला अछि। अबैत-अबैत अपन गामक सीमामे जखन एलौं कि सनतन भाय बजला-

"मनोहर खेती-बाड़ीक की स्थिति छह?"

बजलौं-

"खेतीमे अधिया गेलौं आ बाड़ी तँ सहजे बिलैटिये गेल।"

सनतन भाय बजला-

"तखन तँ बाड़ीक आशा अखन नहियेँ हेतह?"

बजलौं-

"केना कहब भाय, एकक नीक दोसराक अधला सेहो होइते अछि। देखिते छी जे हथिया नक्षत्रमे नीक बरखा भेने धानक किसान हँसैत कहबे करै छैथ जे 'हथिया बरिसे, चित्त मर्ड़ाए' मुदा बाड़ीकेँ तँ महामारी आबिये जाइए। अवादैमे केते पाछू धकेलत तेकर कोनो ठीक थोड़े रहैए।"

सनतन भाय जहिना उपजाक मर्म बुझै छैथ तहिना जमीनो आ माटियो पानिक मर्म बुझिते छैथ, नीक जकाँ बुझै छैथ जे खेतेमे सभ किछु उपजैए, तैसंग गुण-अवगुणक हिसाबसँ उपज-उपजमे अन्तर नीक जकाँ बुझिते छैथ। तेतबे नहि, जमीनक आकारो, ऐठाम आकारक माने ऊँच-नीचसँ अछि, आ माटियो-पानिक गुण सेहो बुझिते छैथ। नीक जकाँ बुझै छैथ जे पाखैर-पिच्चैर सेहो धाने छी आ वासमती-तुलसीफुल सेहो धाने छी मुदा दुनूक बीच केते अन्तर अछि। तहिना जमीनक आकारक अछि, एक आकार ओहन अछि जैठाम बाढ़ि-पानिक चढ़ाइ नइ होइए, दोसर एहेन अछि जे बाढ़िक नामे सुनि लोक घरसँ सभकिछु निकालि घर छोड़िकऽ पड़ाइए। तहिना माटि-पानिक सेहो अछिए। एकटा माटि ओहन होइए जे सोना उपजबैए आ दोसर एहनो तँ होइते अछि जे सोनाक कोन बात जे टलहो उपजबैक शक्ति नइ रखैए। तहिना ने

मनुक्ख-मनुक्खमे सेहो अछिए।

बाड़ीक निआश सुनि सनतन भाय बजला-

“मनोहर, जबरदस उघरा-भाँड़ अपना गामक किसानकेँ खेतक भऽ गेलैन। गामक अधिकांश जमीन, जेकर उपज बेसी होइ छल जे बाड़ी-घराड़ी छल ओ आब धान-धनहरक खेत भऽ गेल।”

ओना, सनतन भाइक विचार जेना-जेना कानमे, माने श्रवणेन्द्रियमे पड़ै छल तेना-तेना ज्ञानेन्द्रिय खुजि कर्मेन्द्रिय दिस बढ़ि रहल छल, मुदा पानिमे डुमल देखि हारल नटुआ जकाँ मन विचलित भऽ रहल छल। बजलौं-

“सनतन भाय, जीब कठिन भऽ गेल अछि।”

अपना जनैत अपन परेशानीक हिसाबसँ बाजल छेलौं, मुदा समयक हिसाब पकैड़ सनतन भाय बजला-

“मनोहर, जीब कठिन नहि असान भऽ गेल अछि।”

सनतन भाइक विचार सुनि मन पृथ्वीक उत्तरी ध्रुवसँ लऽ कऽ दच्छिनी ध्रुवक बीच लटैक गेल। की नीक की अधला से मनमे उठिये ने रहल छल। निराश मने बजलौं-

“भाय, अहीं सभक मुँह देखि अखनो ठाढ़ छी, नहि तँ कहिया ने बाढ़िमे भँसिया कऽ मरि गेल रहितौं।”

पूर्ण बिसवासक संग सनतन भाय बजला-

“मनोहर, केकरो मुँह देखि कियो अनेरे जीबैए, अपन मुँह देखि लोककेँ अपने जीबा चाही। केकरो भरोसे नहि अपना भरोसे, तखन तँ..?”

सनतन भाइक विचार सुनि मनमे गुदगुदी लागए लगल, मुदा ओ गुदगुदी जीतक छल कि हारक से बुझिये ने पेब रहल छेलौं। बजलौं-

“की तखन तँ, भाय?”

सनतन भाय बजला-

“मनोहर, जहिया बरखा शुरू भेल आ दोहरा-तेहरा गेल तहिये मन मानि गेल जे समय बेदरंग हएत। आब जँ धानक बीआकेँ सुखजोत जोइत माटिमे देब, से असम्भव जकाँ भेल जा रहल अछि, तँए बाड़ीए मे थालेकेँ सेरिया-सुरिया बीआ माटिमे दऽ देलिऐ। नीक उमझल। समयपर रोपि लेलौं। अखन तेहेन धान अछि जे केतबो पानि होइ छै, ओकरा पाबै नहि दइए। तँए बत्तीसोअना उपजाक आशा बनले अछि। जखने मनुक्खकेँ धरतीक आशा, माने जीवनक आधार भेट जाइए तखने ने ओ आशान्वित भऽ जीवन-यापन करए लगैए।”



शब्द संख्या : 2237, तिथि : 31 अगस्त 2021

बाड़ी भऽ गेल धनहर

एकैसम शताब्दीक वैज्ञानिक युग रहितो रोहितपुर दिनानुदिन पाश्यमुखिये भेल जा रहल अछि। कृषि प्रधान गाम रोहितपुर सात साए परिवारक गाममे चारि साए किसान परिवार अछि आ बाँकी तीन साए परिवार ओहन अछि, जइमे सँ किछु परिवार खेतमे मजूरी करै छैथ, जिनका खेत-मजदूर कहै छिऐन, किछु परिवार छोट-मोट कारोबार आ किछु परिवारक लोक नोकरी करै छैथ।

मिथिलांचलक मध्य रोहितपुर नव गाममे नहि, पुरान गामक गिनतीमे अछि। ओना, धार-धुरक क्षेत्र मिथिला रहने पुरान गामक उपटान आ नव गामक बसान सेहो होइते आबि रहल अछि से आइये नहि, सभ दिनसँ अछिए। अखनो अछि। रोहितपुरकेँ कृषि प्रधान गाम बनैक अनेको कारण अछि। एक तँ गंगा-ब्रह्मपुत्र मैदानक बीच रहने रोहितपुर चौरस गामो अछि आ उपजाऊ माटियो अछि, तैसंग कोसी-कमला सन उपद्रवी, माने कटाव करैबला, धार रोहितपुरमे नहि अछि। कृषि आधारित गाम रोहितपुर आइये नहि, हजारो बर्खसँ अछिए। ओना, रोहितपुरमे खेत-पथारक छीना-झपटी अनेको बेर भेल अछि मुदा साठि-सत्तैर बर्खसँ नहि भेने गाम असथिर भेल अछि। ऐठाम असथिरक माने खेत-पथारक छीना-झपटीसँ अछि। पैघ जमीन्दार तँ गाममे नहि छैथ, मुदा पचास-साठि बीघाबला दू परिवार, ओइसँ कम जमीनबला तीस-

चालीस परिवार आ बाँकी जे किसान छैथ ओ पाँच कट्ठासँ चारि-बीघाबला धरि छैथ।

आने गाम जकाँ रोहितपुरमे सेहो सभ रंग, माने ऊँच-नीच, जमीन अछिए। गामक कुल जमीनक चौथाइ भाग ओहन अछि जे गहींर अछि, जेकरा 'चौरी' कहै छिऐ। बाँकी जमीन ऊँचरस भीठ आ मध्यम धनहर अछि, जइसँ बारहो विरहिणीक उपज गाममे होइते अछि।

एमहर चारि सालक बीच गाममे कोसीक शाखो नहरक खुनाइ भेल आ स्टेट बोरिंग सेहो गराएल अछि, तैसंग खेत जोतैबला ट्रेक्टरसँ लऽ कऽ दौन करैबला थ्रेसर सेहो आएल अछि। मुदा गामक खेती (कृषि कार्य) पछुआ गेल, जइसँ कृषि आधारित परिवारकेँ, माने किसान परिवारकेँ, स्थिति बिगड़ने आन-आन रोजगारो आ नोकरियो करए पड़ि रहलैन अछि।

आइ चालीस बर्खसँ कुसुमलाल भाइक संग अपन सम्बन्ध रहल अछि। ओना, सम्बन्धो-सम्बन्धमे कमी-बेसी होइते अछि मुदा से नहि, जीवनक पूर्ण सम्बन्ध रहल अछि। जहिना एक रंग विचार अछि, कहब जे एकरंग विचार की भेल? जीवनक मूल तत्त्वक विचार, तहिना एकरंग जीवनधारो अछिए। आन जकाँ दुनू गोरेक बीच एहेन कहियो ने भेल जे लगले छाती भरि मिलान आ लगले हाथा-हाथी झगड़ा भेल। माने एकटा काजमे मिलान (दोस्ती) आ दोसर काजमे झगड़ा (दुश्मनी) भेल। ओना, समाजमे जे जाति-विभाजन अछि, तइ हिसाबे दुनू गोरे दू जाइतिक छी, मुदा जीवनक जे गति-विधि अछि, तइमे मिसियो भरि अन्तर नहि रहने, कोनो अन्तर सेहो नहियेँ अछि। जहिना बच्चा (छात्र) अपन नियमित जीवनक अनुकूल समयपर सभ काज करै छैथ, माने समयपर खा कऽ पढ़ए गेलौं, पढ़िकऽ एला पछाइत जे काज अछि से केलौं, तहिना कुसुमलाल भाइक संग अपन रहल अछि। ओना, पनरहे दिनक बीच दुनू गोरेक जन्म भेल अछि, जइसँ पढ़ाइ-लिखाइक संग अनेको काज संगे

करिते आबि रहल छी। दुनू गोरेक जन्मक बीच जे कम-बेसी अछि, ओ अछि पैछला महीनाक इजोरिया अष्टमी दिन हुनकर जन्म भेलैन आ अपन ऐगला महीनाक अनहरिया अष्टमी दिन भेल अछि। जहिना हुनका माने कुसुमलालकेँ मानवीय चाह छैन तहिना अपनो अछिए, जखने चाह तखने राह भेटते अछि। दुनू गोरेक परिवारक स्तर सेहो एक्केरंग अछि। दुआर-दरबज्जासँ लऽ कऽ घर-आँगन सेहो एक्केरंग अछि। घर-आँगनक माने भेल ओढ़ब-पहिरबसँ लऽ कऽ खान-पान धरि, से आइये नहि, जहियासँ सम्बन्धक ठेकान अछि तहियेसँ दुनू गोरेक बीच परिवारोक आन-जान, एक-दोसर ठामक रहबे कएल अछि।

दुनू गोरेक बीच गप-सप्प करैक सेहो नियमित समय अछि। ओ अछि, सूर्यास्तक पछाइत- साँझू पहरमे। एक दिन कुसुमलाल भाय ऐठाम अपने बइसै छी, दोसर दिन अपना ऐठाम बैस गायत्री जकाँ भरि दिनक कएल काजक लेखा-जोखा कुसुमलाल भाइक संग करै छी।

लेखा-जोखाक माने एतबे नहि बुझब जे भरि दिनक केलहा काजक हिसाब बुझि लेलौं आ आगूक कोनो विचारे नहि केलौं। औझुके काजपर काल्हि ठाढ़ हएत तँए औझुका काजक छीप पकैड़ कौल्हुका काजक जड़ि बना रोपबे ने जीवनक रोप छी जइसँ जीवन फड़ै-फुलाइए।

ओना अपना दुनू गोरेक बीच, माने अपनो आ कुसुललालो भाइक, दरबज्जापर बैसार बेरा-बेरा होइए, माने एक दिन अपना ऐठाम दोसर दिन कुसुललाल भाइक ऐठाम, मुदा एहेन सम्बन्ध काँटी ठोकल कील जकाँ नहि, नट-भाल्टू जकाँ अछि। जइसँ जखन कुसुमलाल भाय ऐठाम कोनो विशेष नव काजक सूत्र-पात्र होइ छैन तखन हुनका ऐठाम आ जखन अपना ऐठाम होइए तखन अपना ऐठाम, सोल्होअना बैसार करिते छी। यएह ने भेल सामाजिकता जे सभ समाजक समान किरिया-कलाप अछि तेकरा सभ मिलि निमरजना करैत चलू, जइसँ कोनो बाधा-रूकावट जीवनमे नहि औत। जखने पैघत्वक विचार विचारमे पनपैए, कटुताक

जन्म होइए। अपना ऐठाम बेंतक गाछक उदाहरण विचारकेँ देल गेल अछि।

ऐ बेरक, माने मई माससँ लऽ कऽ अरवन सितम्बर धरिक, जे मौसम रहल अछि माने मासक गति-विधि, ओ किसान परिवारमे बेकारीक स्थिति पैदा कइये देने अछि। जखन सौंसे गामे पानिमे डुमल अछि तखन किसानक किसानी केतए चलतैन, तँए बेकारीक स्थिति बनिये गेल अछि। दिन झुकिते कुसुमलाल भाय ऐठाम विदा भेलौं। ओना, रस्तामे धकमकी ईहो उठैत रहए जे अपने कोनो काज नहि अछि मुदा जँ कुसुमलाल भाय कोनो काजमे लागल हेता तँ हुनकर काज तँ बिथुत हेबे करतैन। फेर लगले अपने मन कहलक जे जखन अपन निश्चिन्तियेक अवस्था अछि तखन किए ने कुसुमेलाल भाय ऐठाम होइत आगू टहैल जाएब। जँ कुसुललाल भाय कोनो काजमे लागल हेता तँ कहबैन- ‘भाय, कने चनौरागंज जाइ छी, ओमहरसँ घुरब तखन बैसब।’

मन मानि गेल जे सत्यक रस्ताक लग होइत चलैत रहने छोट-छीन बहाना समा जाइते अछि। कुसुमलाल भाय ऐठाम विदा भेलौं। जखन कुसुमलाल भाइक दरबज्जाक आगूक रस्तापर गेलौं कि देखलौं जे चारि-पाँच गोरे दरबज्जापर बैसल छैन, आ कुसुमलाल भाइक पोता लालजी चाह बाँटि रहल अछि। आगू ससरैत बजलौं-

“कुसुमलाल भाय, अहाँकेँ अपन चाहक बचत कऽ देलौं। जएह अछि तेकरे काटि-कुटिकऽ बाँटि सभ पीब लिअ।”

ओना, आँखि-कान उठा कुसुमलाल भाय देखबो आ सुनबो केलाह, मुदा बजला किछु ने। भरिसक दिव्य ज्ञान होइ छेलैन आकि की से तँ वएह जनता। दिव्य ज्ञान वएह ने भेल जखन कर्मेन्द्रिय निसक्रिय भऽ जाइए आ ज्ञान-ज्योति जागि जाइए। जहिना राशनक दोकानपर गप-सप्प करैत बैसनिहारकेँ राशन पाछू भेटैए आ ठाढ़ भेलकेँ पहिने, तहूमे

महिलाकेँ आरो पहिने भेटैए तहिना अपनो भेल, ठाढ़े-ठाढ़ पहिने अपने चाह भेटल। जहिना ठाढ़े-ठाढ़मे चाह भेटल तहिना ठाढ़े-ठाढ़ पीब कपकेँ राखि, चौकीपर बैसलौं। अपना दिससँ जे कोनो औझुका हाल-चाल पुछितिऐन से तँ गपे-सप्प चलि रहल छल। तँए पुछैक गरे ने बुझि पड़ल।

एक तँ ओहुना कुसुमलाल भाइक जीवनक मुँह-मिलानीसँ अपनो जीवन ओहन रूप पकड़िये नेने अछि जेहेन कुसुमलाल भाइक छैन। एहेन नहि जे घोड़ा जकाँ मुँह-मिलानी करैत हिहिया लेब आ पाछू उनैट चौताल उठा सलामियो लेब। कुसुमलाल भाइक बीच थोड़बे एहेन अछि जेना पहिल पहिल दिन दू गोटाक बीच गप-सप्प करिते जीवनक धार पकड़ैए। दुनू गोरेक बीच असथिर जीवन धार बनि बहिये रहल अछि। कुसुमलाल भाइक लगमे नीक जकाँ बैसबो ने कएल रही कि सुवंशलाल बाजल-

"भने मनमोहन भाय अहूँ आबिये गेलौं।"

सुवंशलालक बात सुनि मन ठनकल जे की बात छी जे अबिते पाकल जअमे पाथर जकाँ खसल..? ऐठाम ई नहि कहि रहल छी जे जहिना छिछलौआ पाथर होइए तहिना छिछलौआ जओ तँ सभदिनसँ बनल आबिये रहल अछि, तैठाम तँ समस्या गम्भीर भइये जाइए। बजलौं-

"सुवंश, कोन लटारम्हमे लागल छह, जे बजैक एक मिनट समय अछि तइमे तेहेन शास्त्रीय संगीतक सम (भूमिका) बान्हि देलहक जे सभटा समय तहीमे चलि जाएत, तखन अनुशासनक पालन, माने समयक अनुशासन, करैत बड़सै पड़त किने।"

जहिना अपने बजलौं तहिना सुवंशलाल सेहो बाजल-

"मनमोहन भाय, जहियेसँ कोसी नहर बनब शुरू भेल तहियेसँ पाइनिक खेल-बेल अपना इलाकामे शुरू भेल।"

सुवंशलालक विचारक गम्भीरता सुनि चकोना भेलौं जे कोसी नहर

सन सरकारी योजनाक प्रश्न सुवंशलाल उठा रहल अछि। मनमे उठल जे अपना ले यएह नीक हएत जे चुप-चाप सुनी। जखन कियो पुछता तँ कहबैन जे अपना भैयारीमे कुसुमलाल भाय दादा छैथ, तँए हुनकर विचारक आदर करबे ने अपन आदर पएब हएत। जँ अपन विचारक आदर अपने नहि करब तँ अनका भरोसे काज चलत। कुसुमलाल भायकेँ जेना सह भेटलैन तहिना बजला- "सुवंश, भने कहलहक जे जहियेसँ कोसी नहर शुरू भेल, तहियेसँ तेहेन खेल-बेल शुरू भेल जे बराहक्षेत्रमे पनबिजलीक डेम्प केना बनत आ पच्छिमी-पूर्वी कोसी नहर केना तैयार हएत जइसँ मिथिलांचलक रौदीक निवारण हएत। गाम-गामक आजुक परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे रौदीक उपाय पुरान भऽ गेल, नवका परिवेश बनि गेल अछि जे पाइनिक मारिसँ गाम-गामक पोखैर, गाछी-कलम जे मारल जा रहल अछि से तँ मारले जा रहल अछि तैसंग किसानी जीवन सेहो मरैक कगारपर ठाढ़ भइये गेल अछि। मुदा से सभ अखन छोड़ह सुवंश, तोहर बेकतीगत जे समस्या छह, तेतबे ले अखन विचार करह।"

जहिना कुसुमलाल भाय बजला तहिना सुवंशलाल अपन समस्याकेँ बान्हि बाजल- "कुसुम भाय की कहब। घरसँ पूब जे दसकठबा चौमास छल, जइ बलेँ मुँहक लाली बनल रहै छेलए तइमे गामक गुल्ली-पेंच केनिहार ओही बीच देने शाखा नहरक नक्शा कटबा देलक। सबुर केलौं, जे जमीनक दामो भेट गेल आ समाजमे एकटा कृत्ति सेहो भऽ जाएत।"

कुसुमलाल भाय बजला- "यएह विचार ने सामाजिक भेल जइसँ समाजक कल्याण हएत।"

कुसुमलाल भाइक विचार सुवंशलालकेँ जेना राहु-केतु जकाँ छुबि देलकैन तहिना हुनकर विचारकेँ रोकैत सुवंशलाल बाजल- "कुसुम भाय, गामक समस्या छी तँए गामक लोककेँ अपन–जीवन–काज बुझि ने समुचित दिशा पकड़ब नीक हएत?"

ओना सुवंशक विचारक चोट कुसुमलाल भायकेँ चोटौलकैन मुदा बेकतीसँ बाहरक मुद्दा मानि मन शान्त भेलैन। हँसैत कुसुमलाल भाय बजला- "सुवंश, कातिक मास कोबी पटबैमे तोरा केते पानि उघए पड़ै छेलह। भने आब खेतेमे पानि पहुँच गेलह।"

वातावरण अनुकूल देखि बजलौं-

"सुवंश, तोरासँ कि कम दुर्गति गौरी शंकरकेँ भेल अछि।"

सोझ-साझ विचारक लोक गौरी शंकर, नीको आ अधलो दुनू विचार भगवानेक बुझैए। जखन सुमति दइ छैथ तखन सभ नीक काज करैए आ जखन कुमति दइ छैथ तखन अधला काज करैए, तँए हाथ पकैड़ करौनिहार वएह ने भेला, तँए सभ किछु वएह ने भेला। गौरी-शंकरक बेथासँ बेथित श्यामलाल छैथ। कुल सम्पैतिक, माने जोत जमीनक, तीन-चौथाइ माने बारहअना जमीन धनहरसँ चौरी भऽ गेलैन। गौरी शंकरकेँ अगुअबैत श्यामलाल बाजल-

"मनमोहन चाचा, गौरी शंकरे चाचा छैथ जे अखन तक दम कसने छैथ, नइ तँ... ।"

ओना श्यामलालक भाव बुझैमे आबि गेल, मुदा समाजक बीच जे परिवेश बनि गेल अछि जे एक-दोसरसँ दूर रहू, ओ समाजक निर्माणपर कुठाराघात भऽ रहल अछि वा नहि। बजलौं-

"अपना तँ नीक जकाँ ठेकान नहि अछि, बिसैर गेलौं, मुदा कुसुमलाल भायकेँ तँ सभ ठेकनौलो छैन आ ठेकानो रहिते छैन। तँए नीक जकाँ कुसुमलाले भाय बजता।"

ओना, कुसुमलाल भाइक मन अपने तर-ऊपर करैत रहैन जे कखन समाजकेँ कहिऐन जे गामक आधासँ बेसी धनहर खेत चौरी बनि गेल। चौरीक माने भेल जइमे अन्नक उपज नहि हएत। बातक बतंगर तँ ढेरो भऽ सकैए मुदा गामक उत्पादित सम्पैतकेँ नष्ट भेने गामक

अर्थव्यवस्थापर की प्रभाव पड़त से तँ गामेक लोककेँ ने विचारए पड़तैन।

विचार-विमर्शक बीच गौरी शंकरक मन-मिजाज जागल। जगिते बाजल- “कुसुम भाय, की कहब, आ की केकरो कहबै, सभ तँ अपने बेथे बेथाएल अछि। हमर तँ बाड़ीए धनहर भऽ गेल। सालक छह-सात मास पानि बसए लगल अछि।”

गौरी शंकरक विचारक वेग जेना अपनोमे वेग आनि देलक। होइतो अहिना छै जे धारक पानि वेग बनि जखन निकलैए तखन समतलो खेत-पथारक असथिर पानिमे वेग भरि वेगवान बना दइते अछि। तहिना भेल। अपने मुहसँ छिड़िया गेल- “आइसँ छह-सात साए बर्ख पूर्व तुलसी बाबा ‘विनय पत्रिका’मे लिखने छैथ- ‘खेती न किसान को..।’ आइसँ पचीस-तीस पीढ़ी ऊपरक इतिहास छी जे हमर समाज तहिया केहेन छल।”

सँझुका पहर सेहो बीत गेल। दोहराकऽ चलन्ती बेरक चाह सेहो भेल। चलैत-चलैत कुसुमलाल भाय बजला-

“अखुनका जे स्थिति गामक किसानक बीच बनि रहल अछि, बनियेँ गेल अछि, तेकरा नीक जकाँ तँ संचालित समाजेकेँ ने करए पड़त किने। ओना एक-दोसरकेँ दोख लगौले जाइए मुदा तइसँ समस्याक समाधान थोड़े हएत।”

बजलौं- “कुसुम भाय, एकटा अपन प्रश्न लऽ कऽ आएल छेलौं, मुदा समये ने भेटल। जे बँचल तेकरा काल्हि ले रहए दियौ। आब जाइ छी।”



शब्द संख्या : 1820, तिथि : 04 सितम्बर 2021